'विदेह' २६२ म अंक १५ नवम्बर २०१८ (वर्ष ११ मास १३१ अंक २६२)

ऐ अंकमे अछि:-

दुध-पानि फराक फराक

(कथा आ पाण्डुलिपि श्री जगदीश प्रसाद मण्डल/ सम्पादन-संकलन आ छाया उमेश मण्डल)

A Collection of first-ever Maithili digital-manuscript Stories by Sh. Jagdish Prasad Mandal, Photographed and edited by Sh. Umesh Mandl.

मैथिलीक पहिल कथा पाण्डुलिपि-छाया संस्करण

दुध-पानि फराक फराक

𑒠𑒳𑒡-𑒣𑒰𑒢𑒱 𑒤𑒩𑒰𑒏 𑒤𑒩𑒰𑒏

कथा एवम् पाण्डुलिपि : श्री जगदीश प्रसाद मण्डल

पलल्वी प्रकाशन

छाया एवम् सम्पादन/सङ्कलन : उमेश मण्डल

दुध-पानि फराक फराक/कथा-पाण्डुलिपि-छाया सङ्कलन

सं. उमेश मण्डल

दुध-पानि फराक फराक

दुध-पानि फराक फराक

(मैथिलीक पहिल कथा पाण्डुलिपि-छाया पोथी)

कथा एवम् पाण्डुलिपि : जगदीश प्रसाद मण्डल

छाया एवम् सम्पादन/संकलन : उमेश मण्डल

पल्लवी प्रकाशन

निर्मली

ISBN : 978-93-88421-89-8

दाम : 500/- (भा. रू.)
सर्वाधिकार © श्री जगदीश प्रसाद मण्डल
पहिल संस्करण : 2018

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग
वार्ड नं. 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल) बिहार : 847452

DUDH-PAIN PHARAK PHARAK

A Collection of first-ever Maithili digital-manuscript Stories by Sh. Jagdish Prasad Mandal, Photographed and edited by Sh. Umesh Mandl.

ऐ पोथीक सर्वाधिकार सुरक्षित अछि। प्रकाशक अथवा कॉंपीराइट धारकक लिखित अनुमतिक बिना पोथीक कोनो अंशक छाया प्रति एवं रिकॉडिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा यांत्रिक, कोनो माध्यमसँ अथवा ज्ञानक संग्रहण वा पुनर्प्रयोगक प्रणाली द्वारा कोनो रूपमे पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहि कएल जा सकैत अछि।

कथाक सत्तैर-

पोथीक मादे

सगर राति दीप जरय'क शातांक आयोजनक माहौल रहने एकाएक मन बनल, मन बनल माने विचार एलापर, जे पाण्डुलिपिक छाया-पोथी संस्करण एबक चाही। ओना, जहियासँ टंकन/सम्पादन/प्रकाशन कार्य आरम्भ केलौं तहियेसँ सभ पाण्डुलिपिक छाया प्रतिकेँ संजोगि-संजोगि रखैत एलौं हेन। एक बेर किछु पोथीक लोकार्पण सिडीमे सेहो करेने रही। मुदा वर्त्तमानमे मित्र नवरत्न वेंगानीजीक विचार भेलैन जे पाण्डुलिपिक छाया-पोथी संस्करण हेबक चाही, माने एकटा आरो पोथी विमोचन हेतु 'सगर राति दीप जरय'क शातांक समारोहमे बढ़ि जाएत। ओना, आयोजनमे मात्र दू दिन समय बँचल अछि, तथापि काजमे हाथ लगा देलौं। छाया-चित्र तैयार रहबे करए, मुदा एकर महत्वपर अपन नजैर नइ गेल छल। गजेन्द्र सर (श्री गजेन्द्र ठाकुर)केँ पुछलयैन। ओहो कहला जे सम्हैरए तँ जरूर कएल जाए, ई एक नव कार्य होएत, तेतबे नहि कथा विधामे सम्पूर्ण पोथी ऐ रूपमे अपना ऐठाम पहिल होएत।

बहुत उत्साहित भऽ कऽ ई पोथी अपने लोकनिक हाथमे दऽ रहल छी। उत्साह एतेक जे समरोहक अफरा-तफरीक बावजूदो मात्र दू दिनमे ऐ कार्यकेँ, नव कार्यकेँ करैत अपने लोकनिक सेवामे समर्पित कए रहल छी।

उमेश मण्डल

मो: 6200635563

निर्मली (सुपौल)

20.12.2018

कथा — अप्पन गाम — पृ०-१

अट्ठाइस (अठाइस) बर्खं बंगलोर में नोकरी केला पश्चात शुभलाल भाएक मन (जीह) ऐना उचैट गेलनि जे एको क्षण रहब पहाड़ जेँका बुझि पड़नि (पड़ैत)। सात दिन सँ एहेन विचार मन में एलैत आ दिनो-दिन असाध्य रोगक रोगी जेँका विचार मे मजबूती अबैत गेलनि आ रहैक विचार (बंगलोर में) मे उड़-बिड़ी लगौ लगलैन। ऑफिस जाइ सँ पुर्व डेरे पर मन मे आबि गेलैन जे काल्हि गाम ले विदा भ' जाएब। बिड़हाएल मने शुभलाल भाए ऑफिस विदा भेला। रास्ता भरि येह मन मे उठ-बैठैत रहलैन जे आइ वोलनटरी रिटायरमेंटक ले आवेदन दइये देब। मात्र अढ़ाई बर्खं नोकरी शेष अछि तैं बीच मे कोनो तरहक बाधा नहिये हएत। ओहुना पाँचा बर्खं पूर्व तक अधिकार अछिये। मने-मन विचारलीन जे केकरो पुछबो तरबन ने ओ कुआ-सुआ वाला रंग-बिरंगक विचार द' द' मनाहियो करत। नीक केलौ जे आबन तक ने पत्नीये लग बजलो हेन आ ने दुनू बेटेक कान में देलौ हेन।

ऑफिसक रंग-रुप जेना बदरंग शुभलाल भाए कैँ बुझि पड़ैत रहनि। जे ऑफिस कहियो शुभलाल भाए कैँ कातिकक लछमी-गणेशक पुजनोत्सव जेँका लगौ छलनि ओहेह ऑफिस आइ उजड़ल-उपटल ओहेन बिरान लगौ लगलैन जेना कोनो देश कोनो देश कैँ उजाड़ि-उपारि बेनगन कौ-ए। ऑफिस बीच नव-पुरान संगी सब रहनि (रहैन) तिनको सबहक चेहरा बदरंगे बुझि पड़ैत रहैन। जहिना परिवार मे पत्नीक संग वा बेटाक संग अबिते कोनो विचार मे विभेद चेहराक सूरत मे बदरंगी अबौ लगौ-ए आ बढ़ैत-बढ़ैत एते बढ़ियो जाइ-ए जे एक-दोसरक हत्यारा सेहो बनियो जाइ-ए। ऐना करब जे एहेन परिवेश कैँ रोकलो त जा सकितै अछि, हँ, रोकल जा सके-ए मुदा परिवेश कैँ रोकै सँ पहिने ओकर पावशताक संग परवरिस कैँ सेहो कैँ ने बुझै पडत। खैर जे अछि, शुभलाल भाए अप्पन टेबुलक कुरसी पर बैसि आगू

पृ० 2

दिशि (तकलनि) तकलैन त कागजक फाइल सब पर नजरि पड़ैत अछि जे मनुष्य अपन समर्पण अपना लेँ करत ओकर दुनिया बदलि जाइ छै आ ओ दोसर दुनियाक लोक केना भ जाइ-ए से त ओ जानथु मुदा शुभंकर लाल भाए से सब किछु नै बुझलैत आ अपन विचार पर आबि अटैक गेला। जेँ भॉलनटरी रिटायरमेंट नहि देत तखन कि करब। धनतंत्रक धनिक तंत्र मे जखन जीबै छी तखन अनेको बहन्नो लगा सकै-ए आ अनेको लांछना सेहो लगा सकै-ए। कैँ छोरि त सकितै आदि। तखन ए जेना-जेना शुभंकर लाल भाए अपना दिशि बदल अबैत देखलनि तेना-तेना मन सेहो सकताइते छेलैन।

किछु कालक गुम्मीक पद्धति शुभंकर लाल भाएक मन मे ठकलनि जे जखन विचार मन मे बना लेलौं जे अपन गाम जाएब तखन जेबे करब। वृन्दावनक भीतर मरुभूमि मे रहि कृष्ण-राधिकाक संग कदमक गाछ पर बैस बाँसुरि टेरि (टेर) सकै-छथि तइ सँ त हमर गाम बहुत नीक अछि। बेचारी सबकेँ (राधिका सबकेँ) डिबिया मे खानक मटिया तेल नहि रहने कठगैनी काँटक बीमा केँ पीस-पीस तेल निकालि डिबिया जरबै पड़ै छेलै, हमर गाम त बिजली सँ जगमगाए ए। टेबुल पर बैसल शुभंकर लाल भाएक मन मे ठकलैन जे जखन ऑफिस आबि गेल छी तखन पहिल विचार इ करैक अछि जे आजुक ड्युटी केला पर सेवानिवृत्तिक आवेदन करब आ कि ड्युटी करै सँ पहिने करब। जेना-जेना शुभंकर लाल भाएक मन मे विचारक मोहनि (मोहन) चलबैत तेना-तेना समबन जेकाँ विचार मे चिकनपन अबैत रहैन। विचार केँ पकिया बान्ह सँ बान्हि पक्का क' लेलनि जे ऐठाम सँ आब मैले जाएब। जखन पत्राचार लेँ पोस्ट-ऑफिस अछिये तखन अगिला सब काज ओही माध्यम सँ होइत रहत। भॉलनटरी रिटायरमेंनक आवेदन लिखि शुभंकर लाल भाए चुप-चाप नेने गेला आ अपन अफसरक फाइल मे लगा चौदह ऑफिस सँ घुमि अपना

पृ० - २

डेरा दिश कदम बढ़ौलन।

कार्यालयक (ऑफिसक) अंतिम गेट (फाटक) लग पहुँचते
जहिना भकुआएल कें भक्क टुटने नजैर बदैल जाइ-छै, जहिना
दिशांस लगलाहा कें दिशांस छुटिते बदलल-बदलल दुनिया देख
पड़ै लगै छै, तहिना शुभलाल भाए कें भेलैन। जिनगीक
एकटा ओहेन बान्ह तोड़ैक सीमा पर पहुँच गेल छी, जेहाम
एक दिशि स्वतंत्र जिनगीक प्रखर ज्योतिक प्रखरता पसरल
अछि तँ दोसर दिशि मनुष्यक जिनगीक भारीपनक कालिमा
गुलामी पसरल अछि। दुनूक अपन दुनिया छै, जइमे दोहरी सब किछु छै।
संकल्प सेहो छै, विकल्प सेहो छै। संकल्पवान सेहो छथि आ विकल्पवान तँ छबे छै।
गेटक सीमा टपिते शुभलाल भाएक मन मे उठलैन
अप्पन गाम। दुनियाँक बीच जते मानवक संग आनो-
आनो जीव-जन्तु अछि ओकरो तँ अपन-अपन देशो छै ओहेन आन भेषो छै
अपन दुनियो छै, अपन मनियो छै अपन मनियाक ओहेन
कनियो-सुकन्यो छै आ दुरकनियो तँ छइहे। कन्या-सुकन्या मन
मे अबिते जेना कोनो फूलक गाछ मे फूलक कोढ़ीक आगमन
होइते फूलक आशा-पूरक आगमन होइ छै
शुभलाल भाए कें सेहो अपन गामक आशाक फूलक कोढ़ी जेकाँ
अपन कोढ़ विहुँसलैन। विहुँसते मन गवाही देत कहै
लगलैन, जे गाम-गाम, मिथिलाक धाम छी, तखन जँ गामेक
मिथिलाक गाम कें छोड़ि देता आ ऐहेन जिबठगर मन
सँ जे सोहरियै-समदाउन सुनबै, कहता वा सेहो कहता तेइ सँ
मिथिला कें अंगेज पौता वा छेबे छथि, से तँ मने-मन सब जनबे करै छी
आइ एकैसम शदीक कुहिये मिथिलो आ मिथिलाक
गामो कें देखैक जरूरत अछि। जहिना एक दिशि पहाड़क
पानिक उपद्रवक संग मोनसूनक (समुद्री) उपद्रव अछि जइ
सँ धार-धुरक इलाका रहने पानि बेसम्हार भ' जाइ-ए
जइ सँ गामक-गाम उजैड़-उपैट जाइ-ए। तइ संग
गाम सँ पड़ाएन भेने गामक सम्पत्ति सेहो ठमैक गेल।
मनुखे रहने बजारो बने-ए आ बजार मेटाइतो
अछिये। तैं सब करामाती हमही-अहीं ने छी।

पृ०-४

जखन मनुष्य होइक नाते अपन गिनतीक (गिनतिक) श्रेणी दुनियाक बीच रखैं
छियैं, बढ़िया विचारों आ काजों (अछि) तैं जखन दुनियाँक बीच (अपना कें)
रखै छी तखन दुनियाँक सब किछु सँ नै संबंध बनबै
पड़त। जाबे संबंध नहि बनत, ताबे निर्णायक दौड़ मे
पहुँच दैना (पाएब) सकै छी। अहिना बेसी काज सोंझा मे ऐने
~~अकछि (अकेछै)~~ मन अकछै लगै-ए तहिना
विचारक दौड़ मे शुभलाल भाएक मन मे सेहो अकछी
उठलैन (उठ लगलैन)। अकछी उठिते मन कुहुकनि अनेरे जे दुनियाँ
दिशि देखैत-देखैत अपने रस्ता भोतिया जाए, सेहो
केहेन हएत। जाबे इजोत मे आँखि तर्क छी ताबेक दुनिया
आ भोतिआएल-अन्हराएल मे देखबै एके थोड़े हएत।
अकछल मन मे स्वच्छतल विचार शुभलाल भाएकेँ
उठलैन। उठलैन ई जे सबसँ पहिने पत्नी कें अपन
आजुक क्रियाक रूप देखबैन। विआहक पद्धति आइ धरिक
संगीये (टा नहि संकल्पित संगी)। कम सँ कम जँ दुनू परानी एक विचार मे रहब
त एते त आशा बनिये जाएत कि नै जे सीता हरण
भेला पद्धति भगवान-रामो दुइये भाए गंगा कातक
जंगल सँ 'क' 'ख' जेँका तकैक बोन-झाड़ टपि लेथि
तखन हम ~~कि छी~~ (किअए ने गामक जिनगी कें अपन जिनगी बना टपि सकै छी)। पचपन-साठिक उमेरक सीमाक बीच
छी, ओहिना अढ़ाइ-सालक (नोकरीक पद्धति) बेकम्मा भइयेँ
जाएब जेँका। कम सँ कम एतेक गिनती त हमरो अपना गामक
धरतीक नसीब भइये जाएत ने जे भाए भीखो-
दुख काटि ओहिना जन्मक रजिष्टर मे नाम दर्ज
अछि तहिना मृत्युक रजिष्टर मे सेहो भइये जाएत।
चेहे ने भेल धरती-पर जीवन-मृत्यु।

डेरा मे (ओना शुभलाल भाए एकटा मकानो बना नेने
छथि, मुदा ओ अखनो धरि घरक श्रेणी मे नइ
एलैन हैं डेरे) अनुभुआर, पत्नीओ आने दिन जेकाँ ओ छेली
(घरवारी जेँका पत्नी कुहिक पड़लैन।)
मुदा कुसमय पतिक आगमन सँ किछु अचोभित भेने (अनुमान) छेली
जेँ, जइ सँ शुभलाल भाएक चेहरा पर नजैर (टिकबे ने केलैन) पहुँचबे ने
जेँ इसँ हृदयक फूल कें देखि पेबितथि। शंकासुमन
रहने, भेलानि जे मन-तन ने ते खराब भेलैन अछि

कथा - अप्पन गाम - पृ० ५

अनुआ के किछु नहि बजली। पत्नी (अपराजीतक) संबंधक विचार शुभ-लाल भाएक मनमे एकाएक जगि गेलनि। धरती पर जते मनुक्ख अछि सभकेँ स्वतंत्र रूपे जीवैक अधिकार अछि मुदा तइ लेल जीवैक कुसियोक खगता अछिये। तखन त भेल जे दोसरक अपेक्षा पत्नी त बंधन सहितक करार (वैवाहिक संबंध) केनहि छथि जे आवैजीव संगे जीव आ मृत्युक पद्धति एक-दोसरकेँ शरीरान्त धरब। ओना शुभ-लाल भाएक मनक चेतनशीलता मे सेहो सोच उठै लगल छलैन। आइ धरिक पत्नीक नेहेन बेवहारक संबंध शुभलाल भाएक छलैन तइ मे मीठपन सेहो जगि चुकल छलनि। मनकेँ (शुभलाल भाएक मन कैँ) तेना विचार पकड़ि लेलकनि जे टस सँ मस हेबाक कोनो विकल्प केँ ओ एकसिरे खारिज क' देने छला। अपन नोकरी सँ भोलनटरी रिटायरमैंटक चर्चो नहि केने शुभलाल भाए बजला - 'काल्हि गाम जाएब।'

'काल्हि गाम जाएब', इ कि भेल, ने अखन छठि पावनि अछि आ ने दुर्गापूजा, ने केतौ बिआह-दानक लगन अछि आ ने कियो तेहेन मरबे केलनि अछि जे तइ सराध मे जेता। तखन कोन एहेन धड़फड़ी गाम जाइक भ' गेलनि जे जेता। तैँ आगूक आशाक बात सुनै ले अपराजित मुँह दिशि (दिस) देखै लगली। पत्नीक कोनो प्रतिक्रिया नहि देख शुभलाल भाएक मन मे एकाएक उठलैन जे एते त समझदारी पत्नी मे अबिये गेलैन हेन जे बात (आगूक बात) सुनै ले ततपर (तत्पर) भेली।

अपन जिनगी केँ समुद्रक रेत पर देखैत शुभलाल भाए अतीतक मुस्की मारलैन। अतीतक मुस्की भेल पैघला खुशीक इजहारक मुस्की। बजला - 'मन अछि कि बिसैर गेलौं, जे जखन आठ दिन एक गाम (माने अपराजितक सासुर) जेना भेल रहै तहिया ....।'

अपराजित जेना किछु मन पाड़ै लगली तहिना अतीतक बौन दिस विदा भेली। जइ सँ चेहराक रूप सुतन्ता (सुतनता) सँ जगनता दिस बदलै लगलनि। मुदा नीक जेँका

पृष्ठ- ६६

धियान नइ टुटने मन मारने हेली। खिलैत मुस्की दइत (देत) शुभलाल भाए बजला - किए विआहक तीन साल पछाति दुरागमन भेल रहै सें मन औंघि कि नेंइ?'

अपराजित -' से किआए ने मन रहत।'

शुभलाल भाए - और (आरो) कि सब मन अछि।'

'आरो कि सब मन अछि', से कि कोनो एके-दुइये टा बितैत भेल जे कि मन अछि आ कि बिसरलौं। अही गुन-धुन मे अपराजित ततमत कौं लगली जइ सँ बकारे ने फुटैन। अवसरक लाभ उठबैत शुभलाल भाए बजला -' जेठ मासक इजोरिया एकादशी कैं दुरागमन भेल रहै। समय खूब सुभियस्त रहै, आमो खूब फड़ल रहै।'

दुअन्नी हँसी मुँह सँ निकालैत अपराजित बजली-' ओही साल हम अमौट (अम्मट) पाड़ब सीखलौं।'

अमौट (अम्मट) सुनि शुभलाल भाए बुझि गेला जे पत्नीक मन खटपन-मिठपन मे रहल छथि। ओ बजला -' आठे दिन पीउर सँ पीयर ऐना भेल रहै, भोरहरबा मे जे पुरना हबा उठल, आम खास खसि पड़त, तखन कहने रहिये ने जे घरवाली कैं संग क' क' चलि जाइ। राति- बिराति हमर जाएब नीक रहत।'

घटनो त घटना छी। पूबकि तेज लहकी उठल छल, जेइ गाछी- कलम मे बगवार सुतै हेला, से त छेलाइ जे नइ सुतै हेला तइ मे शुभलाल सेहो हेलाइ। आम सन पवित्र सब जीन फल, तइ मे दु टा आम (फल) अपराजित दिन मे खेने हेली जेकर स्वाद मे जते समय लगल छलैन तइ सैं बेसी समय ओकरा निहारै (निङहारै) मे लगल छलैन। तैं देखल- बुझल रूप मन मे अतीतक टटके गरल्नि। माइयक (सासुक) आदेश सुनि अपराजित आमक गाछी जाइ लेल पतिक संग तैयार भेल हेली। एक टा ओढ़ना ओ डमेर ओहड़-

पृष्ठ-6

जइ मे लोक कें किछु कोंढ़ उलंठ जगिते छैक। तइ मे संगी भेटने त आरो प्रखर भ' जाइ-ए।

जीवनक चारि मे अपराजित कें ठाढ़ होइते शुभलाल भाए विचार केलैन जे आब अपन विचार कें खोलि बजै मे कोनो असौकर्ज नहि छैक। अतीत मे भ'आएत अपराजित भविष्य दिस देखैक- सुनै- बुझैक जिज्ञासा मे जिज्ञासु बनि पति दिस देखै लगली। शुभलाल भाए बजला- 'काल्हि भोरक गाड़ी गाम आइबे जरूर पकैड़ लेब। गाम जेबे नइ करब आब गामे मे रहब।'

पुरुष परीक्षाक अंतिम बेला मे जखन सभटा मोडक बीच लोक पड़ै-ए, जेहेन निकलैक बाट सॉकरो रहै-ए। असौकर्ज रहै-ए आ बीच अछिये तहिये मुदा भसैक (गलत धारक) धारक रूप, निकराल अछिये, जे समय अछि घड़ी ने पुरुषक परीक्षक भेल। अपराजित गाम बिसैर जेकाँ गेल छेली। तइ मे सासुरक गाम। अपन जन्म सँ बालपन होइत किशोरपन तक माए-बापक छाँह मे रहली, सासुर ऐला मासे दिनक पछाति पतिक संग (सासुर मे) गाम मे रहने समये कम भेटलनि। तइ मे मास दिनक ओहन जिनगी जे आँगन सँ बहरा नइ सकली, तखन जँ सासुरक गाम माने पतिक गाम बिसैर गेली त समीचीने भेल। ओना आखन तक अपराजितक मन सँ हटि हटल छेलैन जे बंगलोरक शहरी जिनगी, जेकर अभ्यस्त भ' गेल छी, आ ग्रामीण जिनगी मे केहेन दूरी बनिये गेल अछि, मुदा मनुखो त मनुख छी दुनियाँक दोनो दूरी कें मेटाइयो सकै-ए आ बनबितो अछिये।

ओना शुभलाल भाए अपन विचार कें संकल्प बना सेहो विचारि नेने छेला जे जँ पत्नियो संग जाइ ले तैयार नइ हेती तइओ असकरो गाम जेबे करब।

अपन भार उत्सुक कौत अपराजित बजली-
- आब कि बुझै छियै जे ओइह समय अछि जे डेरा मे ताला खोसि दइ छेलियै, दुनू आ दुनू परानी हाथ मे झोड़ा-बैग लटकौने बिदा होइ छेलौं। दू-टा बेटे-पुतो छ अछि, आ कि असकरे छीजोक उनक कें बिदा भ जा

पृष्ठ-८

ओना झुमलाल भाएक मन मे ठाढ़ भेलनि जे । कि अपने परिवार बंधन सँ मुक्त छी वा बंधन मे छी। मुदा नइ दिस सँ अपना कें मोड़ि झुमलाल भाए अपन गामक सिमृत (स्मृति) मे तेना भसि रहल छैला जे फलें- फलें, सुफले- सुफल नजैरिक आगू दौड़ रहल छलनि। समयक चाहिं गाम दिस (दिशि) नइ बदल जा रहल अछि सेहो केना, नइ बदल जा सकै-ए। ओ त बढ़ियें रहल अछि। जहिना मिथिलाक लोक आन गाम गैला तहिना आनो- आन गामक लोक त मिथिलाक बजार मे जीविकोपार्जन करैये रहला अछि। अनेको संस्थानो आ व्यापारोक रूप मे करैये रहला अछि।

अपन विचार मे दृढ़ता अनैत झुमलाल बजला- 'हँ, से त परिवार मे छीहे। तैँ एकबेर कहि त जरूर देबइ। किअए अपना सिर अजस लेब जे काल्हि दिन औरइ जे उनैह केँ कैहे जे जखन अपन बाप-दादाक डीह जगवे, जे अखन मरनासन्न भ' गेल अछि, जाएब तखन परिवारक सब किअए ने जाएब।

विस्मित होएत अपराजित बजली - 'गाम मे आब कि अछि जे जाएब?'

नव चिन्तन सँ चेतल चेतना मे जहिना उदीयमान बल होइ छै तहिने बल जेना झुमलाल भाएक विचार मे सन्हिया गेल छनि। बजला- 'गाम मे नइ अछि।'

समाप्त
६।११।०१८

कथा – क्रान्तियोग – पृ० १

गामक हवा-पानि रवा, टहल-कुलि जीवन काका दरबज्जा पर अबिते पत्नी कें चौकठि लागल ठाढ़ देखलनि। ओना मन मे पहिने ई उठलनि जे किछु बात परिवारक जरूर छी तैं पत्नी केबाड़क चौकठि लागल ठाढ़ छथि नहि (नइ) त अपन अंगना-घरक काजक कें छी, कोनो काज मे लागल रहितथि। मुदा लगले विचार बदलि (बदैल) गेलनि। विचार बदलैक कारण भेलनि जे जीवन काका कें, जना कोनो नव चीज भेटला सँ होइ छै जइ सँ रंग-रंगक विचार मनःस्थिति कें सेहो खुशी-खुशिया अपना रंग मे रंगैत रहै ए, तहिना भेल छलनि। ओसार (दरबज्जाक ओसार) पर चढ़िते बजला- 'पहिने एक गिलास पानि पिआउ, पछाति चाह पीब। किछु विचार करबाक अछि।'

'विचार करबाक अछि' सुनि कामिनीक (पत्नी) आन्तरिक मन पहिने ठमकलनि पाछु हटलनि, मुदा लगले पाछु उनटि तकली त बुझि पड़लनि जे किछु बात जरूर छी। आन दिन अपना मने कि विचार करै छला कि नइ करै छला से कहाँ कहियो कहै छला। सदिखन हुकुम (आदेश) दइ छेला जे अमुक काज करू, कि वा अमुक काजक कि भेल? मुदा विचार करबाक अछि, कहला अछि। खुशी (हास्य) मे विनोद चोरि (छोड़ि) कामिनी पत्नी बजली- 'हम कोन ओहन छी जे विचार करब।'

पत्नीक बात सुनि जीवन काकाक मन मे कनी कचोट जरूर भेलनि मुदा चोट लगला पर जेहन मन चोटाइ-ए, से नहि (नइ) भेलनि। अपनो मन गवाही देलकनि जे अपन तकक जिनगी मे पत्नी कें विचारवान बुझि विचारिये कहिया बुझि कोनो विचार केलौं अछि। तैं जे पत्नी बजली त कोनो अनचितो त नहिये बजली अछि। पत्नीक बात कें विचार मे विचरित करैत जीवन काका बजला- 'जइ ओकर नइ छी, सैह ने दुनू परानी मीलि विचार करब।' अपन उठैत जिनगीक रंग आ पतिक लबैत विचारक भंग देख कामिनीक आन्तरिक अन्तर्मन बिहुँसि गेलनि। बिहुँसते आँखि उठा पतिक आँखि मे गाड़ैत मन मिलबैत बजली- 'चाहक ओरियान त सब किछु चुल्हि लग रखने छी। लोटा मे पानि सेहो आनि कें रखने छी। बैसू. लगले नेने अबै छी। जाबे अहाँ पानि पीब ताबे चाहो बनि जाएत।'

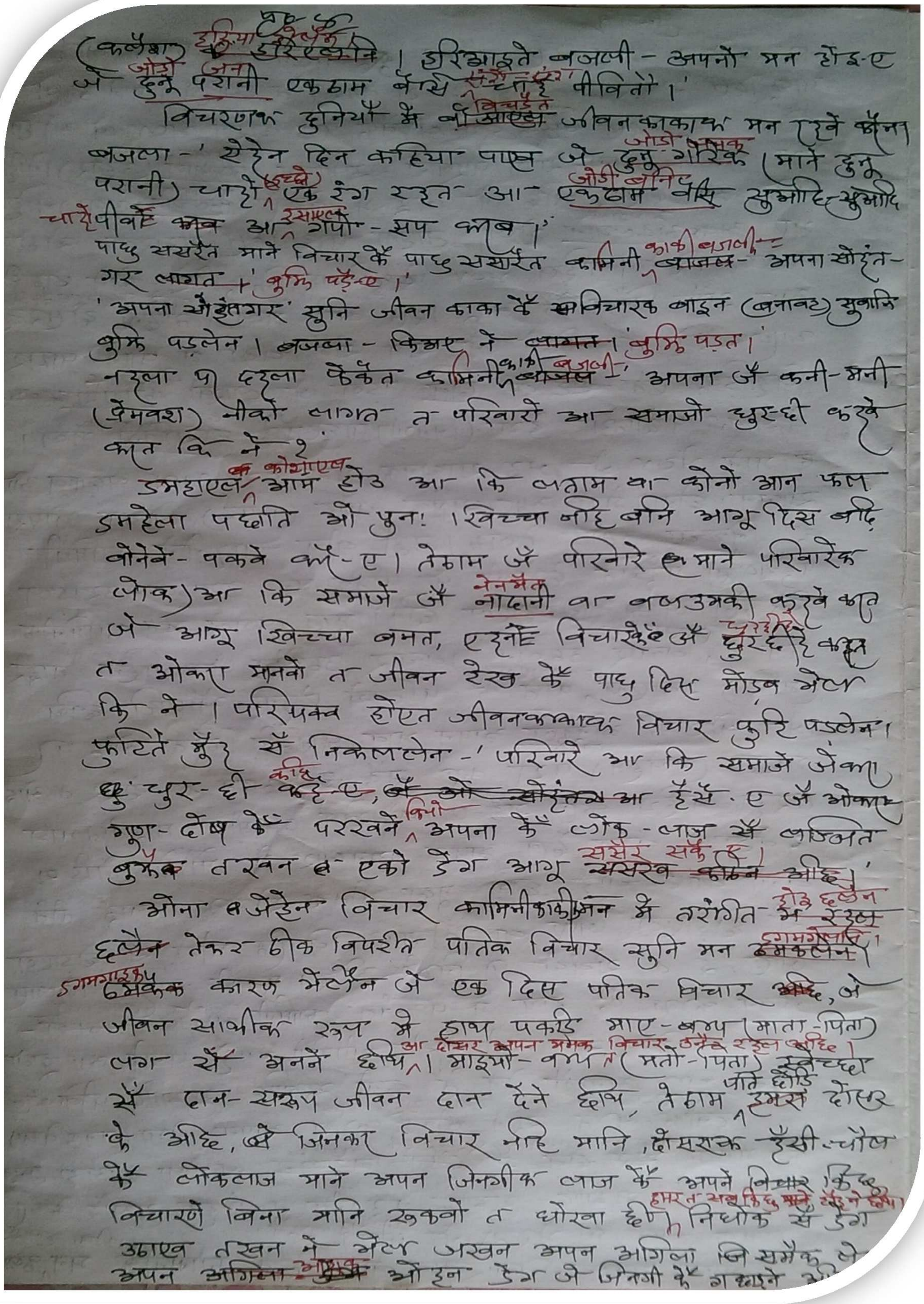
सोलहन्नी पत्नीक बात अन्ती केकैत वा नहुआ कऽ हुआ केकैत, जीवन काका बजला- 'शुभ काज मे विलंब करब मूर्खता भेल। पहिने लोटा-गिलास नेने आउ, जाबे हम पानि पीब पाछाँक सुसार

पृ॰ 2

(परसब) तावे अइ दुनू के चाह बनि जाएत।'
अपन काज कें विसवासक रंग चढ़बैत कामिनी काकी बजली- ' से किए (किअए) ने बनत। भेल त दु गिलास दुध-पानि औंटैत अछि।'
कहि कामिनी काकी आंगन दिस बढ़ली। चुल्हि लग लोटा मे पानि रखने रहथि, लोटा-गिलास नेने कामिनी काकी देवजा पर पहुँच पतिक आगू मे राखि देली। ओना मन मे नव-नव विचार जरूर उठैत रहैन मुदा चाह बनाएब कें जरूरी बुझि किछु ने बाजि घोंटे आंगन घुमि गेली।
अधा गिलास पानि पीबैत-पीबैत जीवन काका कें विचारक तरंग तेना तरंगित कए देलकनि जे गिलास चौकी पर बुझिमाँ रखिते पड़लिआ जिनगी (अपन दुनू परानीक जिनगी) दिस मन डुमरि कऽ घुमड़ि पड़लैन। मन मे उठलैन अपन जिनगी आ अपना संग पत्नीक जिनगी आ तइ संग परिवारिक जिनगी, मुदा अंतहीन रस्ताक अछैत ओर-छोर नइ हेइ-ए तहिना मन मे उठै लगलैन। दुनू परानीक बीच-तीस बर्खक जिनगी हएलैन। मुदा अंतहीन रास्ता (रस्ता) कें तें लोक खतिया कें खुटिया अपन रस्ताक लीमा तेर करैये लइ-ए।
आबन तक माने पचास बर्खक जिनगी तक जीवन काका ओहेन बेहेन जिनगी धारण केने अछि रहल हला जे ग्राम-समाजक हएलैन। ओना मन मे ई बात जीवन काका कें जरूर उठलेन जे अधा जिनगी रीब-रीबे मे चलि गेल। रीब-रीबक माने भेल जे जहिना मिरचाइक गुण कड़ुपन होइ-छै जँ ओइ मे कड़ुपन नइ आएल रहल वा ओकरा मे कड़ुपन रहबे ने केलै सेह भेल रीब-रीब। मिचाइयेक गुण-स्वभाव जकाँ मनुक्खोक दन्त अछिये। जे मनुख कैलक-खेलक किछु ने आ खाइत पीबैत, सुतैत-पड़ैत जिनगी बीता लेलक ओकरे जिनगी ने रीब-रीबाइले रहि गेल। जिनगी तँ ओ ने भेल जे भरण-पोषण अपन जीवन-यापन कौते किछु आगू धारि डेग उठबैत चलै। ओना डेगो-डेगोक अपन-अपन गुण अछि। एक भेल जे आगू दिस उचित डेग बढ़ाएब आ दोसर भेल पाछू ससरब। मुदा बीच मे तेसरो तँ अछिये जे ने आगू दिस बढ़ल आ ने पाछु दिस ससरल, बीच मे डमकल चलैत रहल। ओना आगू दिस डेग बढ़ाएब आ कि पाछु दिस ससरबक कारण अपन-अपन रहैत अछि। एक कारण

पृष्ठ-३

नई अछि। आगू दिस बढ़बाक कुनू अहिना दुनू कारण अछि तहिना
पाछु दिस ससरबाक सेहो दू टा कारण त अछिये। माने दू जे
अहिना आगू दिस उचित (कुसहो) डेग बढ़बैक एक कारण भेल जे ओहन
डेग जइ मे अपना संग परिवारो - समाजक मंगल कामना (उद्धार) निहित
अछि, आ दोसर अछि जे जइ मे केकरो मंगल कामना (उद्धार) नहि
भए अमंगले भेल। तहिना पाछु दिस ससरबाक सेहो
कारण अछिये। पहिल भेल बिना किछु केने-धेने ठाढ़ छी
आ सभ निकैल कऽ आगू दिस बढ़ि गेल आ अपने पछुआएल कऽ देखैत रहैं। तहिना दोसर
कारण इहो त अछिये जे सभ संग चलैमे पानि-पाथर
विहाड़िक एते चोट दान पड़ल जे लाखो कोशिश
केलाक पछातियो डेग (जिनगी) पाछु मुँहे घुसकैत गेल।
माने भेल जे जइ साधनक संग डेग आगू बढ़ाएब ओ
साधने छीना गेल आ सभक थपेड़ (थपेर) ओकरा थोपरा
कऽ निच्चा उतारि देलक। तही बीच चाह नेने कामिनी काकी
पहुँचली। पहुँचते देखली जे पतिक मन उखड़ल-उखड़ल
बिरहीन जकाँ बिढ़ाएल छन्हि। मुदा जगले कामिनी काकीक
मन मे एकटा नव विचार उठलैन। विचार उठलैन जे अहिना माइर
(मारि) खाएल वा चोटाएल पति कऽ पत्निये ऐहन औषधि छथि
जे चोटक अनुरूप अपन भाव प्रदर्शित कऽ ओइ पर
मलहम (मलहम) पट्टी कए सकै-ए। आन तँ दोसर त ओइ
तरहक नहियेँ कए सकै-ए। कोशिक अनमोल माइयोंत मात्र
बेटाक बेथा देख अपन नयनधार मे मोनि फोड़ि
बेथा बाँटै चाहै छथि मुदा तीतक रोगक दबाइ तीते
सँ छोड़ाएल जाए वा तीतक विपरीत मीठो सँ छोड़ाएल
जाए, ई त संबंधे पर निर्भर अछि। चाहक गिलास
जीवन काका कऽ हाथ मे पकड़बैत कामिनी काकी बजली-
' आन दिन सँ कनी बेसी चीनियो, चाहो पत्ती आ दूधो
देल चाह अनलौं हेन, तेँ कनी सुआदि-सुआदि पीबो करब
आ रसिक जन जकाँ रसो ग्रहण करब।'
पत्नीक बात सुनि जीवन काका अपन बेथा (मनक बेथा)
कऽ मनेक मन सँ मनबैत मुस्कुराइत बजला-' अहाँ हाथक
चाह जँ सुआदि-सुआदि नइ पीब त ऐहन सुआद केकरा
हाथक चाह मे भेटत जे रसी नइ कुड़बै।'
अपन सुतरल विचार बाण देख कामिनी काकीक मन हुलसि


(कलौआ) ... ढरिआइते बजली- अपनो मन होइ-ए जे दुनू परानी एकठाम बैसि चाहु पीबितौं।'

विचरणक दुनियाँ मे विचरइत जीवनकाकाक मन एहेन भेलनि, बजला- 'एहेन दिन कहिया पाएब जे दुनू गोरेक (माने दुनू परानी) चाहो एक रंग रहत आ एकठाम बसि सुआदि-सुआदि चाहोपीबैत आ गपो-सप करब।'

पाछु ससरैत माने विचारकेँ पाछु ससारैत कामिनी काकी बजली- 'अपना सोहंतगर लागत। बुझि पड़ैए।'

'अपना सोहंतगर' सुनि जीवन काकाकेँ विचारक बाइन (बनावट) सुआलि बुझि पड़लेन। बजला- 'किअए ने बुझि पड़त।'

नहला प दहला फेकैत कामिनी काकी बजली- 'अपना जँ कनी-मनी (प्रेमवश) नीको लागत तँ परिवारो आ समाजो धुरझी करबे करत कि ने?'

डम्हाएल आम होउ आ कि लताम वा कोनो आन फल डम्हेला पद्धति ओ पुन: स्वेच्छा नहि बनि आगू दिस बढ़ि बौनेबे-पकबे करै-ए। तेठाम जँ परिवारे (माने परिवारक लोक) आ कि समाजे जँ नादानी वा बजउमकी करबे करत जे आगू स्वेच्छा बनत, एहेन विचारकेँ जँ धुरछी करत तँ ओकरा मानबो तँ जीवन रेखकेँ पाछु दिस मोड़ब भेल कि ने। परिपक्व होइत जीवनकाकाक विचार फुरि पड़लेन। फुटिते मुँह सँ निकललेन- 'परिवारे आ कि समाजे जेकरा धुर-छी कहै-ए आ हँसै-ए जँ ओकरा गुण-दोषकेँ परखबे अपना केँ लोक-लाज सँ लज्जित बुझब तखन एको डेग आगू ससरब कठिन अछि।'

ओना एहेन विचार कामिनीकाकीक मनमे तरंगित भऽ रहल छेलैन तेकर ठीक विपरीत पतिक विचार सुनि मन ठमकलेन। ठमकैक कारण भेलैन जे एक दिस पतिक विचार अछि, जे जीवन साथीक रूपमे हाथ पकड़ि माए-बाप (माता-पिता) लग सँ अननेँ छथि। माइयो-बापो (मतो-पिता) स्वेच्छा सँ दान-स्वरूप जीवन दान देने छथि, तेठाम हमरा दोसर के अछि, जे जिनकर विचार नहि मानि, दोसराक हँसी-चौल केँ लोकलाज माने अपन जिनगीक लाज केँ अपने विचार किछु विचारने बिना मानि रहबौ तँ धोखा हैत, निधोक सँ डेग उठाएब तखन ने भेल जखन अपन अगिला जिनगीक लेल अपन अगिला ओइन डेग जे जिनगीकेँ गढ़इने ...

कथा - क्रान्तियोग - पृ०-५

छैलैत, तोड़ैत वा कुदि क फनैत टपब अछि। मनक कल्पवृन्त-विचार मे विचड़ैत कामिनी काकी बजली - 'अखन एते प्रेम सँ चाह बनौने छी, तइ बीच जँ कोनो कवि-काठी फेक मन कैं (चाह पीबैक मन कैं) दुइर कए दिऔ, दुहू सहमत सन (माने पटनी सन) हैत। लोकक लेल केहेन हैत।

कामिनी काकीक सहगर विचार सुनि जीवन काका बजला - जँ गपे-सप मे चाहक - चाह आ (चाहक) ओकर गुण सुआद कैं पानि बना लेब, एखन सेहो केहेन हैत।'

ओना कामिनी काकी आ जीवन काकाक बीच आबन धरिक जे जिनगी रहलेन ओ ने तीते रहलेन आ ने मीठे रहलेन। तीत-मीठ दुनू रहलेन जइ सँ एक वस्तुत गुण जे हजारो-लाखोक संख्या मे किअए ने हुअए मुदा ओकर रूपो-गुणो आ सुआदो त एके रंग ने होइए। जेना मालदह आम अछि। एक गाछक छी संख्या मे पाँच अछि। ओइ मे सँ एकटा मिथिलांचल मे खेलौं, दोसर असाम मे खेलौं, तेसर मद्रास वा केरल मे खेलौं चारिम गुजरात वा राजस्थान मे खेलौं, पाँचम पंजाब वा कश्मीर मे खेलौं, कि ओकर गुण-सुआद जगह बदलने सुआदो-गुण बदैत थोड़े जाएत आ कि ओहिना रहत जे मिथिलांचल मे छल। एकर माने इहो नहि जे मिथिलांचलेक मालदह मे इ गुण छै। इ गुण सब ठामक सब वस्तु मे छै। (पारा कदैल) चाहक गिलास ठोर मे (मुँह मे) सटौने कामिनी काकी जीवन काका लग पहुँचली। ओना कामिनी काकी कैं चाहक गिलास मे मुँह सटौने देख जीवन काकाक मन मे कनी कुबाध भेलेन। कुबाध इ जे चाह कि कोनो पानि छी जे चुल्हि लग सँ पीबैत-पीबैत दलानो तक भरि पोख पीब लेती। इ तँ चाह छी, एक घोंट पीलौं ओकर सुआद कुभेलौं, तावे चाहो ससरि कऽ पेट मे गेल जइ सँ मन मे फुहरामी जगलेन। फुहरामी कैं आगि छोड़ैत फुहरपन विचार उठलेन। ओना कनी-मनी जीवन काकाक मन कड़ूएलनि जरूर, जइ सँ क्रोधक बिनबिनी (बीन-बीनी) जगलेक मुदा अपन मन तँ फुहराम रहबे करैन। क्रोध कैं चोप विचार जखन मन मे फुरलेन। विचार फुरिते मन - विचरण कऽ जगलेन जे क्रोध भाव नीक कि अधलाह क्रोध तँ कतौ संसार सँ लोक मे नइ अबै छै। (ओ) त लोकक मन मे सदैत जगल रहै छै मनोविकार (मनक विकार) ओ सेहो सब मे रहबे करत आ रहैते अछि।

पृष्ठ-६८

मुदा एकटा विचारणीय प्रश्न त अछिये जे जँ क्रोध सीखहि आना अधलो छी तखन ओकरा किअए ने (माने सामूहिक रूप मे) ओकरा पानि बहैक नाली वा कचड़ाक ढेरी मे फेक दइ-ए। प्रश्न अछि क्रोधकरूप कैँ देखब। मनक विकार कहियौ आ कि शरीरक उर्जा शक्तिक उपज कहियौ मुदा क्रोध त छी जरुर। मुदा ओकर सीमा-सरहद कि अछि आ कते अछि, सेहो त देखै पड़त। एक दिस क्रोध मनक संकल्पशक्तिक प्रहरी (सिपाही) छी त दोसर दिस पौरबैर-झारखंड, धार-समुद्र मे डुमबैबला सेहो छी। ओ क्रोध बुद्धिवक्क मुर्खता पैदा करैबला छी त कावलक संकल्पक संगी सेहो छी तेँ क्रोध कैँ सँ क्रोधी नहि बनि क्रोधी जिनगी धारण कावे ने जिनगीक पथ कैँ प्रदर्शित करै-ए।

रसे-रसे जीवनकाकाक मनक कुभाव सँ जे क्रोध-चीड़ हुल दइलैन तेकरा समन करब लगला। समन होइते (क्रोध कमिते) मन मे उठलैन जे जहिना जाँत मे, जेइ मे तर-उपर दु पट्टा होइ छै, दु पाट रहितो बीचक जे कील होइ-ए ओ एकटा कैँ सक्कत सँ पकड़ने रहै-ए आ दोसर के कील रखि कुइ रखबाइ जे छोड़ि दइ-ए। बीतहि बीच मे ने पीसिनिहारि वा पीसिनिहार बाम हाथ से हथरा चलबैत दहिना हाथे ओइ मे झीक दइ-ए। मुदा ओ त रहै-ए अन्नक झीक त ~~उपरक होइ-ए~~। तखन हथरा जे झीकै ए, माने हाथ से जे झीक के हथरा कैँ चलबै छी ओ कि भेल? मुदा लगले जीवनकाकाक मन मानि लेलकैन जे एतेटा जिनगी लै जँ जाँतक झीका-झिकी मे लगि जाएब तँ जिनगी ससैर कैँ पहाड़ पर से निच्चा खाधि मे खसि पड़त। तैँ दहिना हाथे झीक देलौ आ कि वामा हाथे-माने जाँत मे अन्नक देलौ, ऐहेन-ऐहेन खींच-खाँच कैँ विचारे सँ सरिअबैत चलब, तखने भाकुर मादे जेकाँ सुरकुमिया मारि चलि सकै छी नइ त हल्लुक-फल्लुक रहितो रचना मादे जेकाँ खढ़-पात मे ओझराएल जल से विदा भेलौ, ततै रहि जाएब। मने-मन जीवन-काका सामंजस्य करिते छलाह कि दुनू गोटेक हाथक गिलासक चाह सठि गेलैन। चाह सठिते जीवन काका कामिनी काकीक हाथ मे गिलास (खाली) पकड़बैत बजला-

'अहाँ ~~सबो~~ लगाएल पानो खाएब।'

पानो खाएब सुनि कामिनी काकी कैँ सुतरलनि। सुबेर बजली-' सासुर मे नइ कहियो पान लगेलौं तैँ कि कुमे छी जे पान नइ लगबै अबै-ए।'

कामिनी काकीक मन त ओते फरगर (फुरगर) नइ रहैन मुदा

पृ०- ६

जे आवेश रहैन- मुदा तइ सँ बुझि पड़ैत छैन जे आवेगित भऽ जरूर छथि तैं आवेगित आवेगक वेग कें अपना दिस मोड़ैत जीवन काका बजला- अनेरे ने अहाँ मीठो के तीत बनबै लगै छी। हमर विचार अछि जे जहिना हम पान लगा कुचकुचा खा मुँहक लाल बना मुँहक लाली मुँह मिलानी करैत लालका तिलकोर ताकबो आ देख-देख खेनो लोक। सुग्गा-सुग्गी जकाँ लालका लाव।'

ओना जीवन काका अपना सूड़िये बजैत रहैथ मुदा कामिनी काकीक मन जीवनकाकाक पान लगाएब सुनि मोड़नी जकाँ मोड़ि देने रहैन। तैं मने मन सोचै लगली जे नैहर मे पान त जरूर लगबै देलौं। देव स्वरूप पिता कें बुझै छेलिऐनि; जन्मदाता सेहो छेलाह, इनका पान लगा खुअबै छेलिऐनि। मुदा ऐठाम त दुनू परानी मीलि मे तेसरक जन्मदाता छी। तैठाम त अनाड़ी छथि। अनाड़ी ई जे ओहन पत्नी जे ने पान लगबै छथि आ ने खाए छथि। बजली- 'किअए ने पान लगा कें खुआएब। मुदा लगाएब साँझ मे। पहिने गिलास आंगन मे रखने अबै छी।'

ओना जीवन काकाक मन मे उठलैन जे साँझ मे पान लगौती (माने पत्नी) आ जँ एकेटा खिल्ली हमरे टा लेल लगेती तखन कि हएत। ओ त पान नइ खाइ छथि। मन आगू बढ़ि अखार (अखाढ़) मास पहुँच गेलैन। पाइनिक (वर्षाक) फुहार पड़िते फुहराम भऽ सृजन शक्ति सृजन करै लगै-ए आ जरैत धरती हरिया लगै-ए। ओना तीन मौसमक बीच धरती कें छह रूपक रंगो बनै-ए, मुदा छबोक अपन-अपन गुण धर्मो (धरमो) छै आ रूप धरमो छइहे। जइ सँ रंग-रूप एक रहितो गुण-रूप मे अन्तर अबिये जाइ छै। जाड़क मौसम सँ निर्मित गरमी मासक पहिल रूप आ अपन बितौलाक पछातिक रूप मे अन्तर आबिये जाइ-ए। तहिना गरमी सँ बरसात आ गरमी बरसातक बीचक मधु मास भऽ ओ जाड़-गरमीक मधुमास सँ भिन्न किअए ने हुअए, मुदा छी त ओहो मधुमासे। तहिना जाड़-बरसातक बीचक सेहो अछिये।

गिलास रखि कऽ रसि कामिनी काकी लपकल आंगन सँ दरबज्जा पर आबि धमकली। अबिते बजली- 'लाउ, कहाँ अछि पानक समचा।'

गमछाक खूँट मे बान्हने जीवन काका पानक सब समान रखने रहथि, कन्हा पर सँ गमछा उतारि, खूँटक मे बान्हल मोटरी पोटरी

पृ.८

खोलि आगू मे चोकी पर रखला। अपने कनी पाछु घुसैक देवाल (दरबज्जाक देवाल) मे ओंगठि क' गेला। आगू मे पानक समान, बगल मे माने आगू दिस सोझा-सोझी बैसी कामिनी काकी पानक पन्नी (पोलीथीनक झोरा) खोलि पान निकालि एक खिल्ली पानक बैसार केलैन। ओना मन मे इ जरूर रहैन जे देखियौ जे कि (पति) बाजि रहला अछि। तेँ पानक खिल्ली माने पानक पत्ता बैसा कामिनी काकी जेना किछु बिसैर गेल होथि तहिना पान छोड़ि उठि क' आंगन दिस बढ़ली।

देवाल मे ओंगठल जीवन काका आगू मे पसारल पानक पात देख मने-मन विचार करए लगला जे जखन पति-पत्नीक बीच विषमता अछि रहत, जे जीवन संगिनी सेहो छथि, तखन दोसर-तेसरक बीच केना नइ रहत। एहन खाइ (खाधि) त' जिनगीक क्षेत्र मे अनेको अछि। आबैर एहन-एहन खाइ बनल रहत ताबैर चौमास खेत जेकाँ समतल समभूम केना बनत। आबैर से नइ बनत ताबैर समरूप समउपज केना उपज सकै-ए। माने इ जे जाबे तक एक-दोसराक बीचक विचार समतल नइ हैत-(माने एक गहराइ) ताबे तक समरूप विचार मन मे केना उठत आ ओना समरूप निर्णय कोनो समतल बाट पकैड़ आगू केना बढ़ि सकै छी आगू बढ़ि ले-माने दोसर-तेसरक संग, त' एकरूपताक सहमता अछिये। जँ से नइ हैत त' अनुभार जगह मे (माने समस्याक) एक रूप जँ भइयो सकै छी त' ओहेन परिचित जगह मे तेँ एकरूपता भंग भइये जाइत जइ सँ संगपना मे विघ्न-बाधा उठबे करत। जखन चलैक बाट-(जिनगीक संग चलैक) मे विघ्न-बाधा उपस्थित हैत तखन चलब त' दुरकर भइये जाइत। असकर चलब, दशाक चलब आ दुरका चलब मे अन्तर अछिये। मुदा लगले मन मे (जीवन काकाक) उठलैन जे आबन जे परिस्थिति आगू मे उपस्थित भ' गेल अछि ओकरा सोलहन्नी मानियो लेब जल्दबाजी (धड़फड़ी) हैत। जँ पान जा सकै छल, मुदा आबन त' पहिलुके (प्रथमे) डेग उठौलैन अछि, जइ मे अवसरो अछि, माने दोसर खिल्ली पसारैक बैसबैक, तखन किअए ने इनकार (पलिने) पर आबन रहै दिअनि जे आगू कि कए रहला अछि। जँ सुरेसँ गतिये दोसरो खिल्ली बैसबैत छथि त' बड़बढ़ियाँ। जखन संगे पीलौं, तखन जँ पानो खाएब त' इ कोन नइका मत भेल जे मन हानि हैत।

कथा- क्रान्तियोग - पृ०- √

जीवन काका मने- मन अपन जीवनाकार हारि-जीतक विचार करैत चुप-चाप आँखि कें कनी छोट कैने माने दुनू पीपनी कें निछिअबैत चिन्तक रूप जकाँ दैनाल मे औंगठल पत्नीक प्रतिक्षा (परतीक्षा) करै लगला। तइ बीच आंगन सँ पत्नी (कामिनी काकी) सेहो पहुँचली पहुँचते अपन जगह - माने पहिने जेना बैसल छेली, पकड़ि जेना बिसैर गेल होथि तहिना ई पानक पन्नी (पौलीथिनक झोरी) कें हौंड़- हौंड़ औंड़ै लगली। ओना मन मे ई बात जरूर नचैत रहैन जे देखियौं, अपना बेर मे पति कते इमानदार छथि। अनका कें सबकें एक कहै-ए, 'मुंह कइलो गेल अछि जे पंडित होइजो गाल बजाबा'। गाल बजाएब अलग भेल आ गाल भरब अलग भेल। पान लगा कें देबैन (माने पति कें देबैन) ओ हमरे लगौलहा पान सँ अपन गाल भरि लेता मुदा हमर गाल।

ओना जीवनो काका गबाँह (गवाही) कं गनदिया गबदी मारि पत्नीक लीला- भूमि देखै चाहै छेला मुदा कामिनियो काकी तेहने शिकारी जकाँ शिकार पसारलनि जे शिकार कैल छी, आ शिकारी कें छी, - माने दु टा शिकारी जँ दुनू एकटा शिकार लग पहुँचि बाण (तीर) फेकलक (फेंके) आ दुनू तीरक बीच तिरिआएत (तिरिआएल) शिकार खसल (खसे), तँ ओइ ठाम निर्णय करब कठिन भइये जाइ-ए। जेना राणा प्रताप दुनू भाइक बीच भेल छेलैन। कामिनी काकी दोसर बाण (तीर) छोड़ैत बजली- 'पान मे दइ छै जे चुन रखने छी, ओ तेहेन भरचुन जकाँ माने सुखि गेने, बनि गेल अछि जे पात मे लागबो मे कठिन अछि तँ कनी पानि देने आंगन सँ अबै छी।'

पत्नीक बात सुनि जीवन काकाक मन मे उठलैन जे (किछु) बाजी। बाजी ई जे कहिऐनि चाहु भेल इच्छा आ पान भेल पौनाइ (पेनाइ)। माने इच्छाक पूर्ति हैब। मुदा फेर लगलै मन मनाही कैलकैन जे अखन परीक्षाक घड़ी अछि तँ राजेन्द्र बाबू जकाँ रस्ता मे नाच देखब सभे नोकसान करब हैत। भाए अखन परीक्षा दइ ले बिदा भेलौं तखन सभ सँ पहिने नहि पहुँचब त अपन कें तैयार कैना करब। ई त नहि जे जेना लोक बजै ए जे भोजक बेर कुम्हर रोपबे काज छोड़े चलत। मुदा जँ अहीं बिचार कें ए रूपे राखल जाए जे भोज मे कुम्हरक तरकारी वा तीमन बनिते ने अछि। तखन ने कुम्हरक संग न्याय भेल से त नहिये अछि। बिचारक बौन मे तेना जीवन काका ओझरा गेल छेला जे पत्नीक बात अनसुनिये रहि गेलैन। माने म...

पृ०- १०

मन जीवन काका विचारिये रहल छथा तइ बीच कामिनी काकी चून मे पानि दइले चलि गेली।

कामिनी काकी कँ परोछ होइते माने दरबज्जा सँ आंगन दिस बढ़ने, जीवन काकाक मन मे दोसर विचार फुनः फुना कँ फुनकसेन। फुनकते विचारें लगलिा जे पानक जे सरमजाम माने पात, चून, खैर, सुपारी, जर्दा, अछि ओ त परिवारक भेल माने परिवारक आमदनीक खर्च भेल, जे दुनू परानीक (पति-पत्नीक) भेल मुदा खेबा काल हम खाएब आ ओ (पत्नी) नइ खेती, इ त सोझा-सोझी अनुचित भेल। पान कि कोनो दवाइ छी जे रोगी खाएत त रोग भगतै आ बिनु रोगी खाएत त रोग बढ़तै। तइ बीच कामिनी काकी चून मे पानी देने दरबज्जा पर पहुँचली। दरबज्जा पर पहुँचते जीवन काका कनडेरिये आँखिये पत्नीक चेहराक चुहचुही पर देखलखिन। (देखलेन) ओना कोनो काजक काँक तीन अवस्था होइ-ए। पहिल जे काज सफलपूर्वक होइक संभावना रहैत तखुनका चुहचुही, दोसर काज असफल हेबाक संभावना जाबे नइ बनल रहल तखुनका चुहचुही आ जखन काज सफल नइ होइक संभावना स्पष्ट भ' गेल रहल तखुनका चुहचुही मे स्पष्ट झलक आबिते जाइ-ए।

ओना कामिनी काकीक चुहचुही देख जीवन काका बुझि गेला जे इनका (पत्नीक) चुहचुही सँ साफ झलैक रहल अछि जे शिकार इनका हाथ छनि। माने पत्नीक सफल विचार छनि (छैन)। जीवन काकाक मन मे लगले दोसर विचार जगलेन। जगिते मन विचार जगिते विसवास सेहो जगलेन। विसवास इ जगलेन जे जहिना चाह पीबै काल कहने छेलिखिन जे दुनू गोरे (पति-पत्नी) संगे-संग एकठाम बैसि चाह पीबा। जखन एकरूपताक प्रस्ताव रखि दुनू गोरे संगे चाह पीलौं, तखन चाहक पद्धतिक ने पान भेल। जखन इनको (पत्नियो कँ) बुझले बात छनि तखन जँ पान मे कटौती करती, माने हमरा ले लगौती आ अपना ले नइ लगौती, तइ मे हमर कोन दोख। किअए ने हमही छाती पर चढ़ि फटकारि क' कहबनि जे 'अँह अहाँक इमान छी, जे अपनो हक हिस्सा (अधिकार) छोड़ि क' भागि रहल छी। जखन अपने हक-हिस्सा छोड़ि किओ पड़ा जाएत तखन दोख केकर।' अपन सुतरल विचार मथन सँ जीवन काकाक मन कलिएलनि। कलिआइते मनक विचार के मने मे रस सँ रसरसबैत गुड़ चाउर फकै लगला। मुदा बाजि किछु ने रहल छथि। पान मे चून लगबै सँ पहिने कामिनी काकी जीवन काका दिस आँखि उठा क' तकला जे किछु बाजि रहला अछि कि नहि। ओना जीवन काकाक मन मने मे मनुआ (लगबनि) क' मुरझा गेलेन जे एकटा चूक अपनो जिनगी भेल अछि। ओ इ जे अखन तक क' जिनगी मे (माने पति-पत्नीक) आदेश दइत (दैत) रहलएनि जे अमुक काज करू, अमुक काज नइ करू। मुदा अपना विचार मे केना ऐहेन विचार ...

पृ.- ११

अवितनि (ऐनैत) जे अपने ई बात बुझै छथिन्ह जे अमुख काज कौल्ह अछि आ अमुख काज नइ कौल्ह अछि। ई त चिन्तनक अतल तल ने भेल जे अखन तक छुटल रहल। खैर जे रहल मुदा पाछु उनटि देबै लाग त फेर संबंध पछुआ जाएत। तैँ नीक हैत जे विचारक (ज्ञानक) उत्स जेना मन छै (पत्नीक मन सँ) रोपि दिअनि जे स्वयं ओ पत्नीक रूप मेँ हाथ म' चलै लागथी। अगर पति अपना कैँ पतिक (पतित्वक) रूप धाड़ि (धारण कैल) पकड़ि चलैथ आ पत्नी जौं अपन पत्नीत्वक रूपक धाड़ि (धोड़) पकड़ि चलैथ त जिनगी कैँ दोषारोपणा करै' हैत। जौं एक-दोसरक बीच दोषारोपण नइ हैत तखन दुषित मन कैना बनत। आ जौं दुषित मन नहि बनत त जिनगी दुषित भ' दुखित कैना हैत। मन कलशखेल। कलेशते जीवन काका बजला- 'चाह-पान मे दिन बीता लेब, तखन त भेल जिनगी मोटा उठाएब आ मोटाक विचार करब। कते काल भ' गेल बुझना जे। किछु विचार करब अछि।'

पतिक बात सुनि कामिनी काकी अपन देहक पानि जगबैत बजली- 'अहाँ से पानक खर्च बढ़ि जाएत।'

जौं पत्नीक बात सुनि जीवन काका बजला- 'जाबे पानक खर्च नहि बढ़ाएब ताव मुँह मे लाली कैना औत। जाबे मुँह मे लाली नइ औत तावे जिनगी कैँ जिनगी कैना बुझबै।'

ओना जीवन काकाक विचार कामिनी काकी नीक जकाँ नइ बुझली मुदा भगवानक मंदिरक पुजारी जकाँ अपना कैँ समर्पित कैत माने अपना पराकाष्ठाक तियाग देखबैत बजली- 'अहीं ने हमर सब किछु छी। अहींक आश्रय मे ने हमहुँ बसब।'

पत्नीक सिनेह सँ बोझिल बदलैत बादल जकाँ पत्नीक विचारक रूप देख जीवन काका बजला- 'जाए दियौ, अहिना समैक तीत-मीठ सुआद बहि बुझि गमेलौं तहिना बुझियौ जे जिनगियो गेल। मुदा आइ सँ त से नइ अछि। जिनगी मे किछु ऐहेन काजक सँ संकल्पित हेबा अछि जे पति-पत्नीक पहचान बनै।'

हँसैत कामिनी काकी बजली- 'तइ ले कोनो हाथ रोकै छी, सदिकाल त हाथ पकड़िये चलै चाहै छी कि ने, जेना माता-पिता हाथ पकड़ा अपना घर सँ विदा कैने देला।'

समाप्त- १३।५

एक गच्छा आमक गाछ

सुन्दरपुर गाम मे सोनमा बाध अछि। ओना चारू कात बाधक बीच गाम अछि मुदा दछिनक बाध। बाध माने गामक दछिन जे बाध अछि, जे बाध मे प्रवेश करिते दछिन मुँहे कनि डेग उठत। ओहि बाध मे एकटा आमक गाछ अछि, जेकरा लोक एकगच्छा सेहो कहै-ए।

ओना सोनमा बाध नमगर-चौड़गर अछि, नमगरे-चौड़गर नइ, ऊँचगर-नीचगर सेहो अछि। ततबे किअए अहिना खेत-खेतक माटि एकरंगाहो अछि आ अहरंगाहो त अछिये, तेँ दसो-पनरह रंगक (किसम) माटियो अछि आ नीचा-ऊपर रहने सीढ़ियो त बनले अछि कि ने। खैर जे अछि मुदा एते त अछिये जे गाछक कमी नइ रहितो बाध मे अछिये। माने खेती-पथारीक ... खेत रहितो अनेक खेती होइए जे मे गाछी बिरछी नहि। ... एकर माने इहो नइ जे गाछ-पात नइ अछि। अनेक गाछो होइते छै, पातो होइते छै। तइ मे माटिक जे बहुरंगी प्रश्न छै ओ त आरो बेसी रंगक गाछ-पात उगबै-ए। जेँ एकरंगाह (एक माटि) रहैत त किछु समतल ऊबरौवार (माने माटिक अनुकूल उपजा) रहैत, से नइ बेसी रंगक रहने बेसी रंगक होइते छै। खैर जे छै, मुदा तइ बाध मे एकटा आमक गाछ छै। ... त अछिये। एकरा नकारलो नहियेँ जा सकै छै।

बाध मे असकर एकगच्छा आमक गाछ, खूब चतरलो अछि आ नमहरो (ऊँचगरो) अछि। ओना ओ गाछ कियो रोपलक आ कि अपने जनमल, से अखैन तक गौँआ नइ फड़िछा सकल अछि। कियो कहै छै बाधक जे रखबार छल ओ रोपलक, मुदा ओ बढ़बा त मरि गेल। रोपलाहा गाछ ने रहि गेलै, मुदा से जानकारी हुअए तब ने। ओ किछु गोटे इहो त कहिते अछि जे कोआ पाकल आम आनि मुदा खेलक आ आँठी-खोइढ़ा छीटि देलक, ओही आँठीक गाछ छी। मुदा जे लोकक मन मे (माने गौँआक) जे होइत होउ, ओ परती पर जनमल त अछि, केकरो खाप जमीन मे छै ने, तेँ सबहक छी, सबहक छीहे नइ सब छाही मे छहरैबो करै-ए आ आमो चटनी ...

पृ० - 2

करिते अछि। गाछो सब रंग होइ-ए, मुदा से नइं, ओ आमक गाछ देखलक आ कते पीढ़ी (मनुक्खक) कते आगुओ देखत। ओना आगुक निसचित बिसवास नइ कैल जा सकै-ए, ओना पहिला अछि, मुदा बिसवास नहियो कैल जाए, सेहो ते उचित नहिये हैत।

ओना जहिना साँसे बाध मे एकटा गाछ रहने एकगाछा भेल, तहिना हमार बीघाक आमक गाछी मे एकटा बेलक गाछ एक गाछा भेल। आमक गाछी, बिआए, ताड़ा फुलवाड़ियो, सब मे होइते अछि। एकगाछा रहितो ओ आमक गाछ कुड़ाक त अछिये। अपन चालि-बाइन छोड़ैत अछि। कुड़ाक ई जे अनरनेवा आ धात्री गाछ जकाँ बिनु जोड़ (प्राग क्रिया) जीवक आशा नहिये रखने अछि, सेहो बात नहिये अछि। असकरे बाध मे अछि, फड़बो करै-ए, मौजरबो करै-ए, हरिऐबो करै-ए, पतझाड़ो होइ-ए, मुदा जीवक बान्हि जीबो त करिते अछि। नइ ते असकरे जना बाध मे अछि तेना से अनरनेवा आ कि धात्री जेँका वंशो उपर गेल रहितै। सब बाबाजिये बनि जइते गेल रहितै। एहिना छै जे समयक मुकाबला नइ करै-ए ओ मेटा जाइ-ए। ओकर वंशक बाढ़ि रुकि जाइ-छै। बिमारिया मेट भऽ जाइ-छै। पंचतत्व मे विलीन भऽ जाइ-ए।

द्वापर युगीन एकलव्य जकाँ ओ एकगाछा गाछ (माने आम) अपना कैँ बुझैत। जहिना ~~शक्ति सील~~ शक्त शील एकलव्य अपना कैँ शक्तिवान बनबै ले शक्तिशालिनीक आराधना केलैन तहिना ओहो आमक गाछ असकरे बाधक बीचला डेढ़ कट्ठा परती पर ठाढ़ भेल अपना कैँ बुझैत। गाछो-बिरीछक दुनियाँ तँ अछिये! हजारो-लाखो रंगक गाछ-बिरीछक बोनाएल दुनियाँ मे कि सबहक वंशो आ वंशवृद्धियो एके रंग थोड़े अछि। कोनो बीआ सँ जनमै ए तँ कोनो फल सँ, कोनो पत्ता सँ जनमैए त कोनो गाछक सीर सँ। केकरो सिर माइटिक तर मे रहै छै ते ककरो पाइनिक तर मे। केकरो डारिये मे सिर होइ-छै ते ~~ककरो~~ अकास मे। केकरो फुनगी पर फुनगिआइये दुनियाँ दिस देखते अछि। बेचारा गाछ कैँ (माने आमक गाछ कैँ) मन ठहिआए लगलै। ठहिआइते मन मे उठलै अनेरे दुनियाँक कोन मे मन कैँ बौआबै छी। तइ सँ नीक जे अपन दिन-दुनियाँ बात ~~बुझबो करब आ करबो करब~~ बजबो करब, करबो करब आ जीबो करब। मन ठमकुर ठमैक गेलै। ठमकते जना तीन बड़ी पर हिसास (दिशांश) लगितो छै, जे से पूब-पच्छिम भऽ जाइ-ए आ पच्छिम पूब तहिना दिशांश छुटबो कोन जइ से उत्तर-दछिन बाध इआए लगै छै। जे कैमहर से एलौं कैमहर जेबै

पृ० - ३

आमोक मक्क कनी खुजल। खुजल ई जे अपना मे अनरनेवो आ... मात्रीयो से बेशी शक्ति अछिये। ओकए दुनू के जे जोड़ा नइ भेटतै (प्रोग क्रिया) ते दैदौ नंगा बवाजी भ' जाएत, वंशो खकि जेतइ आ दुनियाँ ओकरा बिसैर जेतै। मुदा अपना ते से नइं अछि, सब किछु अछि। सब किछु मन मे अबितै अपन शक्तिक अपना शक मे दे खेलक। ऐना मे जेना आकाश कैट अपने मुँह लोक देखैत रहिआ

अपना चुइन मे गाछ धुनियाँ चुनकौ जकाँ जिनगीक रुइया कैं धैंसक गाछ-सब ते अछिये, तहीं मे ने हमहूं एकटा भेलियै। जखन एकटा भेलियै, तखन एकेटा ने भेलियै। दोसराएत-जे तेकब से अपन दोसराएत मेहिअए ने इजोते-इजोत जाएत। बेचारा जिनगीक औंबटोही जे नमहर जिनगीक बाट टपि आबि असोधकिते भ' जाएत तहिना बेचार आमक गाछक मन ठमकल। देह मे शके ने कुम्हे पड़ै जे ठाढ़ रहत। हुब टूट साइकिल जकाँ मनक चक्का आगू ने आगूए चुसकै आ ने पाछुए ससरै। जना जिम आइ औ जिनगीक हारि कबूल क' लेत। मुदा से भेल नइं, भेल ई जे हुब-टूट मन बाजल - आब एइ दुनियाँ देखब कठिन भ' गेल।

पजरे मे हुब चटू बाजल - बूढ़ि कहैं के ई, ब्रह्मा सन-सन कते ब्रह्माकैं देखनिहार- लोमस बाबा लोढ़िया ओदि क' देखैं आ तू एतबे मे ...दैआ फेंकै दैं। एकटा पएरबला कनी नेंगरा के चलैत, मुदा चलैत किमए ने। कोनो कि लोथ छी।

हुब चटूक विचार सुनि हुब टूटू विचार कैं बेचारा आमक गाछ विचार करै लागल। ओना गाछ-बिरीछक दुइअने बोनमे ई दुनियाँ मे एकटा हमहूं छी। रंग-रंगक रूप, रंग-रंगक चालि-ढालि जिनगी सबकैं अपन अपन छै। कियो बीआ से गाछ होइ-ए, ते कियो फूल से। एतै मन मे अबिते गाछ ठमकल। ठमकल ई जे अपन वंशक रस्ता कि अछि। एकटा भेल पाकल आमक सक्कत आँठी से, दोसर भेटबे ने करै। मन मे औं जे हमरा वेश कि एक भगुए रहि गेल। आगू-पाछु किछु भेटबे ने करै। भेटबो केना करितै, अखन तक नजैर बिच बीये-बाउलक देखल-सुनल छलै। मुदा नजैर जखन आगू बढ़लै तखन बुझि पड़लै जे नहि मुदा

पृ-४

...तक दोसरो रस्ता अछि। ओ अछि बच्चा गाछक छाती सँ कलशक डारि सटा देने नव गाछ बनि नव जीवन सेहो त अछिये। तखन जिनगी सँ निराश किअए हैब। मुदा जिनगीक लेल जे समय-शक्ति सँ मुकाबला करै पड़ै छै ओकर अनेको रूप मे दू कारण प्रमुख अछि। एक अछि समय शक्ति जे मे जिनगी निहित अछि आ दोसर अछि दानवी मानव बुद्धि।

एका-एक ओइ एकगाछा आमक गाछक मन फुला गेल। फुलाइते अड़हुलाएल बाजल —' हम लाल छी।' जुड़िआइत जूही बाजल —' जे हने सतरंगी रंग ने हने सतरंगी चालियो ने छै। मरदक लाल अड़हुल बनमे, तहिना फुलवारी।'

मन मे उठैत खौज के रोकैत गाछ विचारै लागल। भाए सात भरल लोक मे केकरा एते फुरसैत छै, जे दोसरो दिस ताकत आ ताकि देखत। जे भरि दिन बोझ छोड़वे ए ओकरा ते एते फुरसतियो ने छै जे अपना पसीना बोझ के कम सँ अपनो वंशक इतिहास आ सामाजिक सरोकार बुझा सकत। आ अनका कोन मतलब छै।

अहिना कोनो हरेलहा बात, सोचै विचारै काज जखन मन पड़ै छै; तखन अनेरे अपनो मन मे फुलाएल हँसी उठै छै। तहिना ओइ एक गच्छा आमक गाछकेँ सेहो भेल। मन पड़लै अपन लगौनिहार रखवार, जे केना असकरे बोध मे ठाढ़ छी, अहिना सब लेल अन्दर-बिहाड़ि, आँधी-पाथर छै, तहिना ने हमरो लेल अछि। आगू चुसकल मन (माने आमक गाछक) कुदकुदाएल,— अपन जिनगीक सब रूपक रखवा अपने सर्वांग जिनगीक अपने कौआ-कुचड़ैल रहैत तखन ने रकुदित रहै छी। लागले दोसर मन टोकलक-' मातृभूमि कहाँ कहै छै ओ अछि ओकर रक्षक के छी?

मन उत्तरित प्रश्न आमक गाछक मन मे उठै लागल। मुदा कलशक डारिक नव गाछक रौशनी देख मन रहैम गेलै। रहैमते फुला गेलाइ। फुलाइते उठलै —' अहीं सँ जीव-जन्तुक संग रमैत एलौं अछि आ आगुओ एहिना रमता जोगी बनि (बन) रमैत रहब।' एकगाछा नइ सतगाछा बनि इन्द्र-धनुष जकाँ आकाश मे फुलाएब।'

समाप्त

कथा - चरिवाह - चैरवाह - चरवाह 56-9

भोरे बड़द कें घर सँ निकालि थैर मे बान्हि गाए कें घर सँ निकालिते रही कि नागेसर भाए कें दहिन सँ उत्तर मुँहें अबैत देखलएनि। ओना नजरि गाए पर छल तैँ नागेसर भाए पर अचक्के नजरि पड़ल जहिना चेहराक रंग-रूप नीक जेँका नहि देख पेलौं मुदा नागेसर भाए कें त देखबे केलिएनि। हाथ सँ गाए कें खूँटा मे बन्हैत रही आ मुँह सँ नागेसरो भाए कें कहलएनि - 'भाए, कतए सँ भोरे-भोर अबै छी, इ

ओना चारि-पाँच बर्ख नागेसर भाए जेठ छथि, तैँ सामाजिक लोक भाजे भाए कहै छिअनि। नै ओ अपन परिवारक छथि माने वंशगत परिवारक आ ने लतड़ल लत्ती जेँका छिपादे बाढ़ छथि मुदा समाजक बीच जे धारा प्रवाहित अछि तइ हिसाबे भाए कहै छिअनि। सामाजिक धारा इ अछि जे उमेरक हिसाब सँ आनो-आन कें, माने जे अपन वंशगत परिवारक नहियों रहै छथि इनको लोक बाबा, काका, भैया इत्यादि कहिते छथि। तही हिसाब सँ उमेरें इनका भाए कहै छिअनि। गाइयक डोरी बान्हि आगू बढ़लौं तावे नागेसरो भाए रस्ता पर सँ उतड़ि दरबज्जा लग पहुँच गेला। लग पहुँचते नागेसर भाइयक चेहरा पर नीक जकाँ नजरि पड़ल। नजरि पड़िते बुझि पड़ल जे असली मन पानि मन पड़ पड़ल छनि। किअए तँ जेहेन मेघ जेँका चोंच लटकल देखलएनि। मिरमिराएत नागेसर भाए बजला - 'ओहिना गाम मे छिछिआइ छी।'

नागेसर भाएक गपक कोनो अरथे ने लागल। तइ पर मुँहो लटकल छलनि आ चेहरोक रंग उड़ल-उड़ल सन छलनि जइ सँ अनेको प्रश्न मन मे उठि गेल। मुदा एक त भोरक समय, पच-कुच्च नहियें बाजल जा सकै-ए आ दोसर दरबज्जा पर छथि। इनकर बात कें टहलबैत बजलौं - 'बैसै चौकी पर

पृ०-2

(दरबज्जक चौकी पर) बैसि तमाकू खाउ, पद्धति दुनियाँदारीक गप-सप। 'हैतइ।'

ओना अरे-तर नागेसर भाएक मन मन्हुआएल रहैत करनि मुदा विचार कें पेटे मे दाबि कें रखने हैला। जँ आन ठाम आन गोटे लग रहितथि तखन त प्रभावशाली भाषण कैत अपन प्रभाव सँ प्रभावित कऽ लेने रहितथि (रैहतैथ) मुदा अहिना हम उनका। चिन्है छिअनि, तहिना ओहो हमरा चिन्हैत छथि तैं वाणी बोल कें समेटि मन मे रखने हैला। नागेसर भाएक चेहरा सँ अनेको रूप टपकि (टपैक) रहल छलनि, जेना मुँह किछए लटकल छनि, भोरे-भोर कतं छिछिआएल छथि, तइ पर सँ पैंइसठि (पैंसैट) बरखक टपान टपल गामक एकटा प्रबुद्ध जन छथिये। गामक अस्सी सँ नब्बे प्रतिशत लोक उनका आदरक नजरि (नजैर) सँ देखैत छनि जेकर जीवंत रूप छनि जे नवतुरिया धिया-पुता मे कियो ओझहा बब्बा, तँ कियो भगत बाबा त कियो गुनी बब्बा कहैत छनि। तइ संग ओइ सँ उपरका लोक माने, चेतनगर लोक, सेहो कियो भगत काका त कियो गुनी काका सेहो कहैत छनि। अनिजाति त सहजे बनाइ मेल छथि। अइ सँ जितका जे नीक नामु रखै छनि, से कहै छनि। तहिना तइ सँ उपरक माने उमरदार आदमी (लोक) सेहो भगत भाए त गुनी भाए सेहो कहैत (कैहते) छनि। मुदा हम तइ सब सँ अलग सोझे भाए कहै छिअनि, उमेरक लेहाज सँ।

नागेश्वर भाएक रूप-रंग देख अनेको प्रश्न मन मे उठि रहल छल जे पुछिएनि मुँह किअए लटकल अछि आ भोर सँ फुफड़ी किअए उड़ि-ए। मुदा अनेरे किअए फूस-फूस मे फूसा-फूसा संग अपनो सार्थक समय कें निरर्थक बनाबी। कहब जे टोकबै किअए कें लिखनिहार तइ मे कनी नजरि (नजैर) मिलानी भ' गेल। नजैर

पृ0- ३

मिलानी ई भेल जे जहिना गाड़ीयक डोरी पकड़ने रस्ता दिस तकलौं तहिना चरपराएल नागेसरभाएक मन सेहो चरपटाएत देखलिएनि (देखलिएनि) जे जरू से भोर दुआरि मन मे आबि गेल जे भरिसक तमाकू दुआरे हस्तमे ढील नइ भ' रहल छनि तेँ कछमछाइ छथि, तेँ कहलएनि, 'तमाकू खा लिअ।' जँ कोनो मुसीबत मे पड़ल छथि ते अपने नै मुँह खोलता। ओना मुसीबतो नीक-बेजाए दुनू होइ-ए, दुनू (माने मुसीबत) के अपन-अपन भाँज छइ। जे नीकवृत्ति ले मुसीबत पड़लनि ओकर महत अलग भेल, आ जँ अधला वृत्तिक मुसीबत छी त ओकर महत अलग भेल। आँखि मूनि सबहक मुसीबत कें एक्के कसौटी पर तौल बाजब ओ त आँखिमूना गुण भेल। ओना आँखि मूनो गुण सेहो दू रंगक अछिये। एकटा अछि नीक कें आँखि मूनि मानि आँखि मूनि चलब आ दोसर भेल अधला कें नीक मानि आँखि मूनि मानब आ चलब कानून।

ओना सँपकट्टा वा ढ़ुढ़ुनारि कट्टा जेँका भीतरे-भीतर नागेसर भाए कछमछाइते छेला, तैं बुझाएल जे बफरि कें बाजी मुदा चालीस सालक पैछला जिनगी दुनू गोरे कें एते दूरी बनाइये चुकल अछि जे जहिना विषुवत रेखा टपला पछाति लोक बुझै-ए जे हम उत्तरी ध्रुवक यात्रा पर छी आ दछिनी ध्रुवक। तइ बीचक लोक त बुझिये नै पबैत जे दुनियाक दूटा छोर अछि आ दू टा धुरियो अछि, आ अपने कौन छोर पकड़ने चलि रहल छी। बड़ीकालक पछाति, तइ बीच एकबेर तमाकू खा थुकैर सेहो फेक चुकल छलौं आ दोसरो जूमक तैयारी मे थोपड़ी दे तमाकुलक गरदी कें उड़ा चुकल छलौं, नागेसरभाए बजला -' आब जीव कठिन भ' गेल। सौंसे दुनिया

पृष्ठ-४

बेर उजड़ि गेल।'

आब जीब कठिन भ' गेल, नागेसर भाएक ई विचार अपनो नीक लागल जे अपनो जीब त कठिन भइये गेल अछि, मुदा दुनिया "एकै बेर दुनियाँ उजड़ि गेल'। एकर कोनो माने लगबे नै केल। तहू मे अपने उजड़ब माने अपन परिवार के उजड़ब आ दुनिया उजड़ब दुनू दू भेल। दुनिया ते सदिकाल उजड़ैते रहै-ए आ बनिते रहै-ए, मुदा अपन जिनगी त सैं नइ छी जे सदिकाल बनत आ सदि काल उजड़त। ओकर त अपन आधार छै, जेहम घाटक संग बाटो बनल छै। बजलौं-

'भाए इ कि कहलियै जे एकेबेर दुनिया उजड़ि गेल? जँ दुनियेँ उजड़ि जाएत तखन रहब कत'?

जहिना हृदयबेधी बाण लगने लोकक मन थरथरा जाइ-ए हृदय हलमलित हुअए लगै-ए तहिना नागेसर भाए के सेहो हुअए लगलनि। मन थरथर लागलनि जइ सँ मुँहक बोली बन्न भ' गेल छलनि। मुदा जाबे अपने मुँहे अपन बात नइ बजता ताबे बुझब केना। तहू मे ओहन लालबुझक्कर नहियेँ छी भुतलगू जेकाँ अनेरे बड़बड़ा लागब। मन मे भेल जे दोहरा कँ फेर पुछियनि मुदा लगले इहो भेल जे नइ सुनने रहितथि (रहैथ) तखन ने पुछब उचित होएत मुदा जखन लग मे बैसले छथि तखन नइ सुनलनि सेहो केना मानल जाएत। भ सकै-ए जे जँ सब शब्द नहियो सुनने रहितथि तखन उनटा के ते पुछले जा सकै ए। सेहो नहिये पुछलनि। तखन किअए मौन बाजि रहल छथि? मन मे इहो उठए जे भ' सकै-ए कोनो ऐहेन काज है भेल हेतनि जइ सँ जिनगी त प्रभावित होएत हेतनि मुदा लाजक संकोचे नइ बजैत होथि।

चालिस-पेंइतालीस बर्ख सँ नागेसर भाए चरिबाहक काज करैत आबि रहल छथि। चालीस कि पेंइतालीस वर्ख तँ डायरी मे लिखि के नइ रखने छी जे निश्चित कहब मुदा अनुमान सँ कहि रहल छी। किअए त जखन उठैत जुआनी नागेसर भाएक छलनि तहिये सँ देखैत आबि रहल छी नागेसर भाए गामक एक नम्बर चरि

कथा – चटिवाह – चटवाह – पृ०-५

छथि, केहनो सापक काटल बीख कें चाटिये सँ उतारि दइ छथि। तइ मे केओ ऐहाम जँ सपकटिया भेल तेहाम ओ खबरि (जानकारी) होइते अपनो वा आनोक काज कें छोड़ि दौड़ल जाइ छलथि। जाति-पाँजि, दियाद-वाद किछु ने मानै छेला। अपना कें उपकारी कहि उपकार कें पहुँचिये जाइ छथि। चलतियो ट्रेन जे तीन-तीन, चारि-चारि टा सापकटलाहाक नम्बर लागि जाइ छलनि।

ओना अइ गाम मे बिसहाराका गहबर छल तइ गामक लोक कें चटिवाह बनब असान छल। किअए त दसमी मे (दुर्गापूजा) जखन दसो दुआरि सबक खुजि जाइ-ए तखन बिसहाराक गहबरक भगत (भगता, पुजेगरी) सेहो दसमीक पहिले दिन सँ गहबर मे भगते कें सभ देवा रंग-रंगक डाली पहुँचते छलनि, केकरो धिया-पुता नइ सेइ छल तेकर डाली, त केको घर मे डाइन-जोगिनक उपद्रव बढ़ि गेल, तेकर डाली त केको धिया-पुता बड़बारि भ' गेल तेकर डाली पहुँचते छलनि आ साभ पहर जखन गोसाइ खेलाइ छेला माने देवता देह पर अबै छलनि, तखन फुल-अच्छत (अछत) भूभूत सँ ओकर गुहारि करिते छला। अहिया मरला माने भगत (पुजेगरी) मरला तहिया सँ भगतोइयो बन्न भेल आ गहबरो खसल। खैर जे भेल। गामोक लोक (जे चटिवाह बनै चाहै छल) आ आनो अड़ोस-पड़ोसक गामक लोक आबि-आबि चाटी धेने छल आ जेकर चाटी उठल माने आगु घुसकि चटिवाहि कें छाड़ै ओ चटिवाह बनै छल। नागेसर भाए चनौरा गहबर क सीख देला। इलाका मे सँ जगता-जोर गहबर चनौरा गहबर कें बुझल जाइ छल। महेशानाथ देला। ओना छोट-मोट (ग्रामीण स्तरक) स्वास्थ्य केन्द्र सेहो बनौने बनौनहि देला। अइ मे डॉक्टर (एम०बी०बी०एस०) तँ नहि छल मुदा एकटा नर्स जरूर

रहै छैली। ओना ओहो तेहेन ट्रेंड (ट्रेनिंग कैल) नहियें छैली मुदा पिन्ती डॉक्टर कें रहने बहुत-किछु सीख लेने छैलीहे। मरीय जी मरीये जी छैलाह। बिआह नइ केने छैला। ई दीगर भेल जे अपने ऐठाम मरीय जी ओकाह (नर्सके) रहैक व्यवस्था केने छैला। आन गामक बेचारी नर्स, ओ तँ डेराह (रहैक) अरजातें रहबे छलि। तइ पर सँ मइनथानाक अगवास मे डेरा येहि रोजलि। मुदा ऐहेन कहियो नै भेलैन जे कुत्ताक बीरन जेँका लसरि (लसेर) लगलनि।

अनहरिया परनक तृतीया (तिरतिया) इजोरिया (चान) जेँका गाम मे चान (कुइम्येक) जरूर उगि चुकल छल मुदा छोट रहने (कम समयक प्रकाश) गाम अन्हारक अन्हार मे पड़िये जाइ छल। जइ सँ जिनगीक सब स्वगताक रस्ताक दुआर (जरूरतक रास्ता) बाधित छलैहे मुदा केतौ लोक पधुआएल छल तँ ओकर मन-पेट नइ छैलइ सेहो त नहियें मानल जा सकै-ए। सैं त छलैहे, तँ अपन विचार सेहो छलैहे आ विचारक विसवसनीयता (विचारो विश्वास) नीय (विसवसनीय) सेहो छलैहे। ओही जिनगीक जुग छल जइ मे ओझा-गुनी, चटिवाह, डानि-जोगिन सबहक उतपति (उतपैत) भेल छल।

अपना सबहक इलाका केहेन अछि (भौगोलिक दृष्टिसँ) आ केहेन छल से त सब भोगिये रहल छी जे गामक फेदार मोरंगक दफेदार बनिले अछि। एक दिस कोशी धारक बाढ़िक पाइनिक विभीषिका जइ मे नेपालक पहाड़ो आ जंगलो झाड़ सँ बाढ़ि मे साप भसि-भसि आबियै जाइ छल। सतासी ई स्वीक (मार्च १९८७) बाढ़िक विभीषिका जेकौं पहिनो भेल हुअए, तँ भेल हुअए मुदा तीन-चारि जेनरेशन सँ नहि भेल छल, जइ मे सापक उपद्रव नीक जेँका भेल। मुदा तइ सँ पहिने सपकटियाक संख्या बहुत बेसी छल। वैज्ञानिक ढंग, वैज्ञानिक ढंगक माने भेल जाँचल-परिखल ढंग, जे विश्वसनीय अछियै।

पृष्ठ-6

तेकर बहुते केसो अभाव छल। ओना दुनियाक आन-आन किछु देश अगुआएलो, आर किछु पछुआएल सेहो छलै, मुदा अपना सब इजोरो बरखक गुलामी सँ लगले निकलले छलौं, तैं अभावे-अभाव सब कथुक अभाव छल।

दोसर उपरान्त सापक भूमकम (भूकम्प-३४) मे भेल। धरती डोलने बिल सब दबाएल जइ सँ बिल मे रहैबला साप नवऽ भेल। ओना सापोक वंशवृद्धि अलग-अलग अछि। किछु साप बच्चा दइ ए तँ किछु साप अन्डा दइ-ए। तइ संग प्रकृति सेहो अछि। अगता बरखाक मौसम मे सापक पनौरा धरती पर अकास सँ खसै-ए जइ मे सैयक-सय साप निकलै-ए। नबे-बेरानबेक शीतलहरी, बिनु बिखैला सँ बिखैला साप खासकए गहुमन), कैं तेना उपटौलक जे बीछा गेल। तइ संग अस्पतालो सब मे आ प्राइवेटो रूप मे सापक बीखक इलाज हुअए लागल जइ सँ सपकटिया (माने सापक काटल) मृत्युक दर कमल। आजुक आर्थिको दृष्टि सँ आ जरूरतोक दृष्टि सँ लोक सजग भेने देखल अछि जइ सँ सापक कोन बात जे ढुढ़नैरो कटखाह ढोंकया (ऐठाम पहुँचे लागल) अछि। सापे जकाँ पाँखिबला फेनगा-फेनगी सेहो जनमारा अछिये मुदा तेहू सँ लोक कैं आफियत भेटिये रहल अछि।

समय आगू बढ़ल, नागेसर भाए सन-सन कते लोकक हाथक काज छीनाएल। जखन हाथक काजे छीना गेल तखन इ हाथ कात कौ, आ नइ कात तँ खाएत कि अही चौबट्टीक मोनि मे नागेसर भाए खसला अछि। खसला पद्धति सुमारक होइ छनि, जे जइ समाजक मे पेटक संग विचारो चलै छल, से जिनगियेक अनटि (अनेट) कैं पुनह-बिलैट गेल, आब केत' रहब? सुमारक होइ छनि जे जइ जिनगी मे भैया, काका, बाबा बनि जीबै छलौं तइ ठाम कौंचिगक (प्राइवेट इस्कूल) जे छौड़ा सबओ सेहो-सब तेना कै ताना मारै ए जे देख

पृ० ८

झनझुना कें तुनतुना- तनतना जाइ-ए मुदा कतेक कि। आब कि हमर ओ उमेर अछि छौड़ा सब सेँ मुँह लगाबीक। सुमारक होइ छनि जे जइ हाथक चारी बले औरन जिनगी बना चलैत आबि रहल छथि, तइ ठाम कोनो पूछ नहि। जइ हँतरे- तर नागेसर भाएक मन मोम जकाँ पिघलि (पिघैल-पिघैल) जरि रहल छनि मुदा मनमे एते शक्ति नहि जुटा पेब रहल छथि जे अपन जिनगीक हार कें जीत दिस बढ़ौता। तकर ठेकान नीक-नीक जिनगीक बीच नै जीवैत आबि रहल छी- तेतेक बीच रस्ता पर औरन मौनि कैना फुटि गेल जे कुरूबे नै देलौं। झोंकमे झोंकाएत नागेसर भाए बजला -' रस्ते पर मौनि फुटि गेल।

ओना रस्ता पर मौनि फुटबक एक माने भेल जे बाढ़िक समय धारक प्रवाहमे रस्तावेँ दहि-दहि रहिते धारक मोड़ सेहो बनै-ए जइ सेँ मौनि फुटै छै। दोसर होइ-ए जे चढ़ान सेँ निचान माने उपरक जमीन सँ निचरस जमीन मे धारक चढ़ी सेँ जे उरवाधि बनै-ए ओइ बढ़ैत-बढ़ैत मौनि बनै-ए जे नम्हरो- गहीरो बनै-ए आ सुखरो आचर बनिते अछि। मुदा ऐठाम त नागेसर भाए जिनगीक गप (विचार) कऽ रहला अछि, खेत- पथारक रस्ताक मौनि जकाँ ओ मौनि थोड़े छएत, तेँ किअए ने नागेसरे भाए सेँ बुझि ली। बजलौं -' कि मौनि कहलियै भाए?

हमर बात सुनिते नागेसर भाए कें मन मे जेना खौंत फेकलकनि तहिना बजला -' अपन मनक मौनि सेहो फुरल आ गामक जे छौड़ा- माउड़िक विचार सुनै छी- तेँ बुझि दै। कि कहबह?

नागेसर भाएक जिनगी औरने बुढ़िया- बुढ़वा माछ जकाँ भ' गेल छनि जहिना सौभरी ऋषि यमुना (जमुना) नदीक जल मे तपस्या करैत नदी माछक गति देखलनि जइ सेँ जहिना विराग उत्पन (उतपन) भेलनि तहिना ते नै नागेसरो भाए

कथा - चरिबार - चरबार - पृ०-५

सेहो भ' रहल छनि। फेर लगलनि मन मे उठल जे सौभरी ऋषि जेकां थोड़े नागेसर भाए जलसमाधि लेने छथि। जे विचार सँ बैरागपन औतनि। हिनका ते, माने नागेसर भाए कें, गरदनि मे बड़का ढ़ोल बान्हि देबनि तइओ बकार नइ फुटतनि। मन छलकि (छलैक) गेल जइ सँ विचारक धारा एकाएक चड़चड़ाइत निच्चा खसै लगल। मुदा तइओ खसैत-खसैत मन बजिते गेल जे जहिया सँ अहाँ कें (माने नागेसर भाए कें) मनाही कैल एलौं जे मनुख बनि जखन जन्म लेलौं तखन मनुखक रूप धारण करब तखने ने मानव कहाएब, से भरि दिन गुरुआइ करैत रहि गेलौं आ आब कनै छी।'

मन कें मारि बजलौं -' भाए, आब अहाँ के कोन मतलब ऐ दुनिया दारी से अछि, ने रहब ओइ टोल ने सुनब ओकर बोल', बेटा कें सँ खरचा लिअ आ, दरबज्जाक ओसारक चौकी बैसि रस्ता दिस तकैत 'सीताराम, सीताराम राधाकृष्ण राधाकृष्ण, करू।

इमर बात सुनिते नागेसर भाएक मन जेना फुटि कें छिड़िया गेलनि तहिना बजला -' बौआ, तोरा से लाथ कि, दुनू बेटो मुँह फुला कें अपन-अपन बहु-बेटा ल' क' जतै नौकरी करै-ए ततै चल गेल अछि। दुनू परानी-बुढ़बा-बुढ़िया घर मे छी।'

बजलौं -' बेटा किअए मुँह फुलौने अछि?'

नागेसर भाएक बेइमान मन इमानक धरती पकड़ि लेलकनि, जइ सँ विचार मे बदलाव आबि गेलनि। बजला - बौआ, इमान-धरम से बजै छी-, दुनू बेटाक परोछक बात छी, जेठका बेटा साइंस (विज्ञान) पढ़ने ने खोट-कमा भइये गेल। बेर-बेर ओ मनाही केलक जे अहाँ झूठ-फुसक धंधा छोड़ू, मनुख छी मनुख जेकाँ रहू, मुदा----?

पृ०-१०

मुदा कहि नागेसर भाए चुप भ' गेला। मन मानि गेल जे बेटा लग अपन दोख कबूल नइ कौं चाहै छथि, बजलौ-' छ: है जेठका बेटा (बेटा) अपन जेठपन देखौलक, ते तैं फुलि रहल मुदा छोटका किअए ~~केलक है~~' फुलल अछि?'

नागेसर भाए बजला -' जेठके: ओकरो तेना कै दुइर केलकै जे ओहो ओहिना दुरि भ' गेल। इमहु अडि ~~गेलि~~ गेलौ, आमदनियो छल आ समाज मे पूछो त छलेहे।'

बजलौ -' अच्छा आब छोड़ू माया जाल कें, बेटा सँ खचा दिया दइ छी। शान्ति सँ रहू।'

समाप्त

६।६।०१८ ई०

कथा — भगैत — भगैतिया — पृ०-१

तीस वर्खक पछाति गोपालपुर गाम पहुँचले मन पड़ला दुखन भगत। कोशी धारक बीच ओ गाम बसल अछि। ऐहेन शंका नइ कबि जे धारक बीच गाम केना बसल अछि। धारक पेट मे ते पानि रहै छै तइ बीच घर केना बनत आ बिनु घरे गाम केना बसत। सब कि, सौभरि ऋषि जेकाँ नइ ने छथि जे जलक भीतर समाधि चोने रहता। धारक बीचक माने भेल जे गोपालपुर गामक अपन सीमा-चौहद्दीक निर्धारित जमीनक बीच अछि मुदा धारक ते कोनो सींग-नाङरि अछि नहि जेम्हर मन भेलइ तेम्हर बिदा भेल। भलें नामक संग गुण-धर्म किअए ने जोड़ल रहए मुदा जेइ गामक देने मुँह बनौत तइ गामक माटि ओहिना छोड़ि देतइ, ओ त ओकर गुण-धर्म के प्रभावित करबे करत किने। खैर जे कहाँ। पहिने जे कोशी धार बहै छल माने तीस वर्ख पहिने, ओ गाम सँ माने गोपालपुर सँ पूब उत्तरे-दछिने बहै छल। साले-साल पछिम मुहेँ कटनिया करैत घुसकै लागल। गामक (गोपालपुरक) जीवन (माल-जाल, मनुखक) दुभर हुअए लागल, मुदा गामक लोक कँ दोसर चारा कि? ओना किछु गोरे परिवार संग गाम छोड़ि नेपाल मे वासी भेला, किछु नोकरी करैत शहर गेला ओ ओतइ रहैत घर बना लेलनि। मुदा गामो त गाम छी, केतबो लोक मिथिला छोड़ि बाहर विदेश तक किअए ने बसल हुअए मुदा मिथिलाक जनसंख्या ओइसँ मेटा थोड़े गेल, ओ त तेहेन माटि-पानिक पा अछि जे आन देश मे दर्जन विद्वान पैदा केलक पा (बाल-बच्चा) पुरस्कार भेटैए, मिथिला मे ओहन-ओहनकेँ मानियो ने अछि। तीस वर्खक बीच गोपालपुर गाम एकैस बेर घसरी बदललक। जे धार गामक पूब बहै छल ओ आवन गामक पछिम देने बहै रहल अछि, मुदा पुरनो धार सभकेँ पेट त ओहिना बनल अछिये। बरसात मे पानि सँ भरबे करै-ए, तेँ कोशी धारक बीचक गाम भेल गोपालपुर।

Ajanta Officer

पृष्ठ-२

तीस वर्खक बीच गोपालपुर, नइ आइक कारण कि भेल। जे काम जेबाक कारण अछि ते काम नइ जेबाक कारण कते' सँ आयल। भाए, अहाँ सँ लाथ कि, तीस वर्ख पूर्व गोपालपुर सँ आवाजाही नीक जेकाँ छल। कम सँ कम साल मे एक बेर, नइ जँ परिवार मे कोनो काज भेल (ओहन काज जइ मे नौत-हकारक चलनि अछि) तँ दुइयो बेर तीनियो बेर जाइ छलौं। नइ जाइक कारण भेल जे ओहि समय (बरसात मौसम) बहीनक सासु साप कटने मरि गेली ओहि मे नौत पुरै गेल। रही तीन ग धार मे, ओहन धार जे भुतिया गेल छल माने मरैत भगैत छल डूमै लगलौं। तेसर बेर जखन बचलौं तखन मन करलक जँ अपने आँखि मुनइ जाएत तखन ऐहेन-ऐहेन संबंधक कोन बेगरता अछि। पारिवारिक संबंध अछि, बड़बढ़िया। सब जखन परिवार मे छीहे तखन अपन-अपन परिवारक कौन ने दोसरोक काज। ओहि बादिक डरे तीसो साल सँ पछुअबैत आबि चुकल छल, तँ तीस वर्खक पछाति गोपालपुर गेल छेलौं। रस्ता कातेमे दुखन भगत कें देखलियनि। दुनू आँखि सँ आन्हर दुखन भगत एकचारीक दरबज्जाक चौकी पर बैसल। नजरि पड़िते अपन मन रोकलक। मन रोकलक इ जे जइ गाम पहुँचबो ओइ गाँआ ने आगत बुझि रोकता।

आन्हर दुखन भगत, देखबे ने केलनि तँ रोकता कि। धोखे-धोखी मे दुनू गोरे बीरान क-बीरान बनले रहलौं। ओना कहब जे एहनो त बहुत लोक छथि जे अपन पद-गरिमा कें निमाहैत अगुआ कें नहि रोके चाहै छथि। भाए अपन छोड़-ए तहिना ने विचारो छल। अपन-अपन छोड़ैत अछि जहिना-पसीन अपन

सूर्यास्तक समय भ' गेल छल। आइ सँ दस वर्ख पूर्व बहीन मरि गेल, मुदा परिवारो बचल छै आ गामो बँचल अछिये। ओना स्वतंत्र देशक अते तेजी सँ उन्नैत कौक जखनि गाम कें छल तते त नहिये भेल अछि मुदा किछु-किछु त भेबे केल अछि। सड़क आ सड़क मे पुल (धारक) बनने गाम अबै-जाए

पृ०-३

सुविधा बनि गेने गाड़ी सवारीक अबाजात सेहो बनिये गेल अछि।

ओना तीस वर्ष पूर्व जे घर-घरारी बहीनक छल ओ आबन नहिये अछि मुदा ओइ सँ नीक अखुनका अरुर बनि गेल छै। पुछैत-पुछैत पहुँचल छलौं। पहुँचते परिवारक कियो ने चीन्हलक। परिचय पात भेला पछाति चीन्हलक। चिन्हते हेरी आगत-भागत कौं लगल। कुशल-छेम भेला पछाति भाँज पा चहल जे अपन परिचित एको गोरे, सिवा दुखन भगत छोड़ि गाम मे कियो दोसर नहि अछि। ओना बहीनक परिवार अहिना लोक सँ सम्पन्न बुझि पड़ल तहिना गुजरो-बसत सँ। अपना सँ जेठ मसियौत बहीनक सासुर गोपालपुरधी मौसी कें एकोटा बेटा नहि दु टा बेटिये टा। मौसीओक आवाजाही अपना ऐठाम आ अपनो सबहक आवाजाही मौसी ऐठाम तहिये सँ छल जखन अपनो जन्मो ने भेल छल। अहिना मौसी कें नैहर छुटि गेल छलनि तहिना अपनो मात्रिक आ मइयोक नैहर छुटिये गेल छल। किअए त नैहरक गाम सँ कमला नदी धारक दहिना मुँहथरि भट्ठा पड़ने उपरि गेल। ओ सब माने मामाक परिवार गाम सँ उपटि कलकत्ता मे कमेबो करै छथि। छथि आ भाड़ाक घर मे रहबो करै छथि।

अहिना माए मौसीक परिवार कें नैहर जेकाँ बुझै छथि तहिना मौसियो बहीनक परिवार कें नैहर बुझि नीक जेकाँ आवा-जाही रखने छली। जइ सँ अपनो सब मौसी गाम कें मात्रिके बुझै छलौं। मौसी कें दु टा लड़कीये (कन्ये) टा छलनि लड़का नहि छलनि। संजोग ऐहेन जे अपने दु भाउये छी बहीन नहि अछि। मर-दुतिया मे अरबधि (अरबैध) कें जाइते छलौं। ओना अपना ऐठामक परम्परा मे एक-बहीन कें दोसर बहीन ऐठाम ऐवा-जेवाक बेवहारिक चलनि (चलैन) नहि अछि मुदा परीस्थिति त सब कथु कें बदलैत-चलि अछि। तही बदलल परीस्थिति मे मौसीक आवाजाही सेहो अपना ऐठाम भेलाकि आ माउयो मौसी ऐठाम अबै-जाइ छथि

पृष्ठ - ४

मसियौत दुनू बहीनक बिआह भेल। जेठ बहीन के गाम सँ सटले दोसर गाम मे भेल तेँ आएब-जाएब असान रहल मुदा दोसर बहीनक बिआह गोपालपुर भेल।

जलखै-चाह केला पछाति मन गप-सप करैले उनिया लगल। केकरा सँ गप करब। मन तेँ उनिया गेल जे किछु लोके ने लगैत छल। गप-सपक माने भेल जे बरावरी मे दुनू दिस सँ चलैत रहए। तेहेन त सँ नहि अछि। जहिना बचइन भागिन-भगिनी अछि तहिना सियनगर-जेठगर मरदामरदी नहियेँ अछि। बच्चा सभ सँ गप-सप करैक मन नइ भेल। अखन पढ़ब-लिखब दिस धियानो ने गेल। अखन सुखी-दुखीक गप-सप करैक मन अछि। तइ लेल ते ओहन संगी चाही। हारि-थाकि दुखन भगत लग बिदा भेलौं। तइ सँ पहिने भाँज लगि गेल छल जे दुखन भगत दुनू आँखिये अन्हरा गेल छथि। एहेन मुसीबत मे जाइ बेकारे पड़ल छथि, तेहेन जेँ हम अपन गाँआ-अनगाँआक बड़प्पन ताकै लागी, ओ नीक नहि। दुखन भगत एकचारीक चौकी पर असकरे बैसल।

मन अछि तीस वर्ख पूर्वक दिन, जखन दुखन धामिक ओइ समय मे दुखन धामि सँ मानल जाइ छेला, एकाधदिन-राति दस गोरे दरबज्जा पर बसिये छेला खेनौ-पीबो करै छला आ झालि-मिरदंग पर भगैतियो गबै छेला। आइ दुखन भगत, असगरे जिनगी हारबज्जा सँ उतीड़ (खसि) एकचारीक जिनगीक वास कए रहल अछि। गाम-गाम बिजली भेलो पछाति गोपालपुर मे अखनो डिबिये-लालटेन अछि। सीसीक डिबियाक गरदनि मे ताड़ बानि चार सँ लटकल डिबियाक इजोत। फड़िके सँ बजलौं-

धामि सहाएब, नमस्कार।

नमस्कारक उत्तर नहि दइते दुखन भगत बजला—

अहाँ के चिन्हलौं नहि?

दुखन भगतक विचार सँ मिसियो भरि मन मे कुभाव नहि भेल जे दरबज्जा पर आएल अभ्यागत केँ एहेन बात किअए कहलनि। सब कि ओहन औखदानी मे नाव नहि ने छथि जे बिनु परिचय कहनौं केको

कथा - भगैत - भगैतिया; पृ०-५

असीरबादो दए देताह। अपन त' देखल सुनल दुखन भगैत छथि जिनका जवानी दउ देता -जुआनी नेने चमकैत छलनि जे। शरीर सँ अबल भ' गेल छथि मुदा मन त' ओहिना छनि जे धरमराजक भगैत गबैत- गबैत झालि - मिरदंग बनि जाइ छैथा।

एक्के शब्द मे बजलौं - फल्लाँ, गामक फल्लाँ छी।'

नाम सुनितो अन्हाएल आँखिये चौकी पर ठाढ़ कै दुखन भगत भ' दुनू बाँहि पसारि छाती मिलबै चाहलनि मुदा तइ बीच मनाही करैत बजलौं - 'अहाँ जत' बैसल छलौं, तत' बैसि रहु, हमहूँ चौकिये पर बगल मे बैइसै छी।'

जहिना बजलौं तहिना दुखन भगत अपना-जगह पर बैसि गेला। बगल मे हमहू बैसलौं। दुखन भगत पुछलनि- 'कैस-कौसक हाल कहू।'

दुखन भगतक प्रश्न सुनि धुन्ध भ' गेलौं जे अपने आन्हर भेल एकचारी मे असकरे बैसल काढ़ि काढ़ि रहल छथि तखनो कैसे-कौसक हाल-चाल पुछलनि। विचार कै मोड़ैत बजलौं - 'यार, कि कहब कैसा-कौसक हाल, परिवारे मे तैना ओझरा गेल छी जे किम्हरो तकैक पलखतियो ने होइ-ए।'

हमर विचार जेना दुखन भगत के नीक लगलनि तहिना बजला - 'सबहक त' येह हाल अछि।'

गर भेटल बात कैं आगू बढ़बैक, ओना अपनो बुझल अछि जे दुखन धामि कैं जखन पाँच टा धिया-पूता भ' गेल छलनि, तखन पत्नी मरि गेलनि। चालीस-पेइतालीस बर्खक उमेर तहिया दुखन धामिक रहनि। कि बोलीक टाँस, आ भगैतिक सुर छलनि कंठ मे, केकरो मोहित कें राखै छलनि। बीस-बाइस बर्खक एकटा लड़की फनींद (फनैद) कें दुखन धामिक संग बियाह ऐ कबुल बची पर एकी भ गेलनि जे पाँचो बेटा-बेटीक निमरजना हम अपन कोखिक बेटा-बेटी जेकाँ करबै। दुनूक बियाह भेलनि।

पृ०-६६

ओना अपना मे मन मे छल जे दुखन भगत सँ भौतिक संबंध मे
कुनो मुद्दा से मेल नहि। कोसिते दुखनभगतक समदाही स्त्री,
(माने दोसर विआही) समदाही ए दुआरे कहलौं जे जखन रूपनी
अपन परिवारक विचार सँ छिटकि (छिटैक) दुखन भगत पर
आसक्ति भ' गेली, तखन भौतियो समाज आ गामोक समाज
सँ संबंध स्थापित [illegible] तैं समदाही स्त्री। मुदा
रूपनीक विचार से नहि छलनि, ओ स्वयंवरी विआह
मानि अपना कें बियौती स्त्री मानै छथि। खैर जे अछि
ओ दुखन भगत आ रूपनीक बीचक अछि। तइ
सँ हमरा कोन मतलब; छिपली मे दु कप चाह नेने
रूपनी एकचारी मे पहुँच बजली- 'पानो खाइ छी कि
सिगरेट पीबै छी?'

रूपनी हाव-भाव आ बेवहार देख अपन मन सीक पर
लटैक गेल। एक दिन देखी जे जे बौस धरती पर देखै
ओकरा जँ धरक चारक मे लटकल सीक पर रखि दियौ
ते ओ अनेरे ने धरती सँ उठि अकास छुवि लइत
आ दोसर दिन दुखन भगतक दशा देखै छी जे
अइ जुग मे दुनू आँखि मरा काढ़ि काढ़ि रहल छथि।
[illegible] अपने त सर्व भक्षी छी। चाहो पीबै छी,
कौफियो पीबै छी, सिगरेटो पीबै छी आ बीड़ियो त
पीविते छी। तइ संग तमाकुलो खाइ छी आ भाँगो
गांजा त पीबिये लइ छी। तैं अनेरे फुरा कें कि
बजितौं। सरदरे बजलौं- 'धरवारी कें जे सब-
जुड़तनि, सब खाइ-पीबै छी।'

ओना दुखन भगत सेहो सबरसिया लोक, मुदा
जिनगी टुटने बेचारे एकरसिया भ' गेला। चाहे टा पीबै
छथि। चारि घोंट चाह पीविते दुखन भगतक मन
फलशलानि। फलैशिते बजला- 'यार, दुनियाँ मे जँ ककरो
पतनी अछि तँ हमर रूपनी अछि।'

पृ०- ६

दुखन भगतक पत्नीक प्रशंसा सुनि बजलौं- यार, मानि लेलौं जे अहाँक जोड़ा घरवाली दोसर कें नहि छै मुदा अपनौं आँखि मे इजोत देना ओते से आन घरवाली आनि देत।'

ई उमर बात सुनि जहिना दुखन भगतक मन मे उत्साह जगलनि जे शरीर सँ पूर्ण स्वस्थ छी, आँखिक चलैत अथबल भ' गेलौं, तहिना रूपनीक मन मे सेहो जगलनि जे आबन धरि जे कुछो छलौं जे बन्न आँखि मे इजोत नइ अबै-ए, से बात नहि अछि। पति कें मानै दुखन भगत कें अगुअबैत रूपनी बजली- 'हम त मोंगी- मेहरि भेलौं, नइ कुछो छी, जँ आँखिक इलाज होइत होए त करा दिऔं, जाबे जीब गुण गबैत रहब।' जेना जे खर्च पड़तनि तेकर ओरियान हम करब'

रूपनीक विचार सुनि मन मे खुशीक एक नव रूपक दर्शन भेल। मुदा तेकए समेटि कें मनें मे चौपेत रखि बजलौं- यार, अहाँक मैरिया मे कहै सब जीबैं छथि? जेना अपन परिवार मे मृत्युक घटना भेने मन पीड़ा जाइ छै तहिना दुखन भगतक भेल। बजला- कियो ने जीबै-ए। हमही टा जीबै छै, जहिना कोनो गाछक डारि-पात कटि गेने गाछ ठुठ भ' जाइ-ए तहिना ठुठ भेल पड़ल अंतिम दिन गनि रहल छी।'

ओना दुखन भगत बौधिक क्षेत्र मे अगुआएल जरूर छथि से छथि मुदा संगीत कला मे। जीवन-क्रियाक बोध ओते नइ छनि जते सँ जीवन सुचारु ढंग सँ चलै-ए। ओना मन आ शरीर दुनू दू छी। मनक दुनियाँ अलग अछि आ शरीरक अलग अछि। जहिना मनक दुनिया अगम अछि तहिना शरीरोक दुनियाँ अथाह अछिये। लाखो रंगक रोगक आक्रमण जहिना शरीर मे होइ-ए तहिना मनो मे होइते अछि। मुदा जते पियास अपने लगल अछि ततबे पानि खगता ने अछि आ कि समुद्र उपदेक माँज का

अपन जे जीवन अछि ओ कैना दौड़ैत अंतिम साँस धरि चलत
ततबे रवगता ने अपनें अछि। तइ लै जेहेन जीवन धारित (धारण)
कैने छी- तैही अनुकूल नै अपन धारणा बना चलैत ~~धारिया कौर्बे~~
चलब। तइ मैं दुखन भगत एक भग्गु छैला। संगीत
कला खासकए भगैतिक गायन मे त दुखन भगत सिद्ध
हस्त छैला मुदा शरीर क्रिया मैं अनाड़ीक अनाड़िये रहला
जेकर परिणाम भेलनि जे सत्तरि बर्खेक (उमेरक) पछाति
आन्हर भ' गेला, जे पाँच बर्खे सँ चौसिओर काटि रहल
छथि।

एक त दूरक सफर कैनें गेल छैलो, तइ पर रतियो
बेसी भेल जाइ छल तैं सब विचार कें मौकूत बजलो-
यार, अखन आँखिक इलाजक भार लेलौं, तखन पान-
सात दिन मैं फेर अबै छी, परिचितै डॉक्टर सब छथि
तैं अहाँ बुझि लिअ जे बीचक जे दिन अछि ततबे
दिन आन्हर छी। अखन थकलो छी आ आँखी सँ देखै
भसिआइ-ए।'

जहिना दुखन भगत तहिना रूपनी विचार सँ प्रभावित भेला।
प्रभाव मे आबि दुखन भगत बजला- यार, अखन भगैतिक
विषय मैं पुछलौं, तखन पहिने यैह कहि दइ छी। हमर
मात्रिक धरमपुर अछि। धरमपुर परगनो छी आ गामो अछि
ओतै सँ हम हाइ स्कूल तक पढ़बो कैलौं आ भगैत
सेहो सीखलौं, मामा हमर पार्टी (भगैतिया पार्टी)
चलबै छैला।

बीचे मैं बजा गेल -' ओ केहेन भगैतिया छैलाह?'
दुखन बजला -' ओ त सोलहो आना रमता भगैत
छैला। जहिना अपना सब इलाका मैं रामलीला पार्टी
कृष्णलीला रास गामे-गाम होइ छल तहिना भगैतिया
पार्टी भगैतक सेहो होइ छल। ओइ मैं कते रंगक छल
मुदा ओतै पहाड़ धुनैक कोन रवगता छलनि, खाली
धरम राजे टाक गबै छैला। सात दिनक डुनकर भाँज
छलनि। दस गोरेक पार्टी छलनि, झाड़ि-मिरदंगक
संग गबै छैला। एक धुन, एक लय, एक स्वर मे चलै

कथा- भगैत - पृ०- ५

बजलौं - 'कते दूर धरि ओ घूमै छला।

दुखन भगत बजला - 'अपन इलाका त छलनिहेँ। दछिन मे गंगा किछेर, पुब मे कमाख्या आ उत्तर मे सप्तकोशी (सतकोसी) क तक इनका लोक कमाख्या भगैतिया रूप मे जनै छलनि।'

बीचे मे बजा गेल - 'पछबरिया धारक सीमा नइ कहलियैऽ'

पछिम सुनि दुखन भगत मुस्की मारलनि। मुसकुराइत बजला - पछिम मे कमला धारक इलाका मे कमला गीत चर्च छल, ए·जहिना धरमराजक भगैत झालि- मिरदंग पर आठ- दस गोरे मिलि गबै छथि तहिना कमला सेहो भगैत सेहो होइ-ए, ओइह ए· इनका सबहक पछबरिया सीमा छलनि।'

ओना आरो बहुत बात कुरेक छल मुदा मानस भ' गेने बहीनक ऐलाम सँ तते हकबाहि भेल जे आगुक बात बाकिये रहि गेल। ओना अपनो मन धकान कुआरे छटपटाइत रहै जे कखन विछान पर जाएब। बजलौं - यार, अरबैन धुइये दिअ।'

दुखन भगत बजला - 'आगुक गप कालि हेतइ।'

बजलौं -' कालि भोरे चलि जाएब। एको दिन गाम छोड़ै छी ते तते बिढ़ेत होइ-ए जे कि कहब!'

जिज्ञासा भौत बजला - से कि, से कि, यार?'

बजलौं -' जनिते छी जे खेत-पथार, अपना रहने गिरहस्थी करै छी। बाड़ी- झाड़ी सेहो लगौने छी। एको दिन जँ सून रहल ते तते ने उजाड़ भ' जाइ-ए जे कते दिनक केलहा पानि मे चलि जाइ-ए।'

दुखन भगत -' से कि?'

अपसोच भौत बजलौं -' यार, जहिना नील गाइयक उपद्रव अछि तहिना सुगरक सेहो अछि, तइ संग गाम मे तते ने बानर आबि गेल अछि, जे दिन-रातिक ओगरबाहि लगि गेल अछि। तैँ नइ रहब।'

तृप्ति (तिरपित) पियासल बच्चा जहिना माइयक हाथ मे गिलास देख होइ-ए तहिना दुनू परानी दुखन आँखिक इलाज भेला। समाप्त २०।०९८

कथा - झूठ सपना - पृ० -1

मिथिलाक रूप-रंगक भीतर भवनगर गाम, जइ गाम मे सुनीता सुचिता, सुशीला आ सुलेखा।

मिथिला त मिथिला छी तइ मे गामक मिथिला आ गामो मे भवनगर गाम। अदौक गाम भवनगर किअए त त्रेता जुग मे जखन राम धनुष तोड़ै ऐला तखन भवनगरक देखिनिहारो आ स्वागत गीत गौनिहारि मे चारि गोटे भवनगर छेली। तैं भवनगरक लोक कैं आत्मगौरव छइहे।

जहिना सइयो नदीक बीच बसल मिथिला, तहिना साइयो रंगक माटि-पानि सँ सजल सेहो अछिये। कहब जे माटियो त माटि भेल आ पानियो त पाइनिये भेल। मुदा से नइ अछि, अछि इ जे धरतीक माटियो सइयो रंगक गुण-धर्म सँ युक्त अछि। जेकर जीवंत-जगंत नमुना अछि जे अन्नो-फलो, फूलो आ पातोक बढ़बाढ़ि मे सहयोगी बनि सहयोगो कर-ए आ असहयोगी बनि असहयोगो त करिते अछि। जँ से नइ अछि त एके गामक सब माटि मे एके रंग सब वस्तु किअए नै उपजै-ए। कोनो माटि कोनो वस्तु (अन्न फल इत्यादि) कैं उमकबै ए आ कोनो कैं बँझएलो त बौकिऔने त अछिये। तहिना पाइनिक सेहो अछि गाम-गामक त बात छोड़ू जे एको गामक पानि एकरंग नहि अछि। ए जइ इनार वा चापाकलक पानि पीबै छी, बगलेक दोसर इनार आकि चापेकलक पानि पीबै त सर्दी-बोखार लगि जाइ-ए। खैर जे अछि, छी त सबमिथिलेक माटि-पानि।

जहिना आन गाम मे बाध-बोनक लहलही रहै-ए तहिना भवनगर मे सेहो रहिते अछि। अपन-अपन गामक सबकैं अपन-अपन लहलहीक आनेक कारण अपन-अपन छनि। तहिना एहनो गाम त अछिये जइ मे लहलही छैक। कहै छै जे दहदही मे देहो कैंच आवनो दुआएल अछि। तहिन जइ-जड़ी मे सेहो जड़ितो आबि रहल अछि आ अखनो जड़िते अछि। खैर जे अछि सबकैं अपन-अपन समस्यो अछि आ अपना-अपना ढंगे कल्याणकारी बाट पकैड़ चलिओ रहल छै सेहो अछिये। जाँ से नइ हैत तँ कोनो गाम ओहिकें अपना भरे बाट कैना हेतइ। जखन गामक समाज बाट हएत तखन ने गाम बाट हएत। जेकरा कहै छियै अपन गाम अपन घर। अनेरे त ड्रेनवला ने कहएब।

पृ० २

भवनगरबला कें गामक पहिलुकीक कारण दोसर छनि। दोसर कारण छनि जे अदौक गाम भवनगर रहैने अहिना एकदिस अनेक बरबारी भरैबला बाधक बधबला (हरबबार) अखनो खाद-पीतक घर बना बास करितो अछि आ जहियो सँ गाम भेल तहियो सँ पुस्त दर पुस्त, अछिए रहैत सेहो आबिये रहल अछि, आबनो अछिये। तेँ कि मिथिला मे ओहन घर-दुआर, माने रहैबला नइ अछि जे-मे एक सनोर मे बैस हजार लोक पंकित बद्ध खा नहि सकै छ। तेहनो त अछिये।

खैर, जे अछि, अछि तेँ मिथिलेक माटि-पानि, भाषा, संस्कृतक बीच मे तेँ सेचमेच करिते छथि, सब विचारियो रहैबे केल छथि आ जे सत लगै छनि से कतो। ओना भवनगर कें आन गामबला सब अनेको नाम देने छथि, कोनो गामबला कहै छथि धनहा गाम, त कोनो कहै छथि फलहा गाम, कोनो कहै छथि कोढ़ि-कुजराक तरकारी गाम त कोइ कहै छथि चोरहा गाम। ओना रंग-बिरंगक नाओ सँ भवनगरबला चिन्तित नहि अछि, तेकर कारण इ जे गाम त जुगानुकुल (युगानुकूल) बढ़बो कौ-ए आ घटबो त करिते अछिये। तइ मे गाम कें (भवनगर कें) एते त प्रतिष्ठा भेटिये चुकल अछि जे विद्वानक गाम, डॉक्टरक गाम, प्रोफेसरक गाम, मास्टरक गाम, किसानीक गाम, चपरासीक गाम इतिहासक पन्ना मे नइ कहाएल अछि सेहो बात नहियें अछि। तेँ सब किछु अंगेजल गामबला छोट-मोट मान-अपमान कें पाइनिक बुलबुला (बरखा पाइनिक) जेँका बुझै ए जे जहिना अकास सँ खसल तहिना धरती मे सोखा जाइत। तइ लै अनेरे महाकालीक आराधना छोड़ि बातक बतंगर करै मे लागब नीक नहि बुझि धियाने सँ काते रहै छथि।

तेँ कि ओ (भवनगरबला) अपन उपर लागोल अपमान-उपनाम सबहक सफाइ नइ दियै चाहै छथि सेहो बा... नहियें अछि। सबहक सफाइ सार्वजनिक रूप मे दियै चाहै...

पृ०-३

हृदयखोलि छाती तानि भवनगरबला सब सार्वजनिक रूप मे कहै छथि जे धनहा गाम भवनगर छी। से ओहिना नइ ने भेल अछि विद्वानक गाम रहने विद्वत् जन गीता कें पुजक पाठ नहि बुझि आंगिक क्रिया बुझि अंग्रेज भेने छथि जाहि सँ एते विश्वास त छथिहे जे आदि कृष्ण अर्जुन कें कहलखिन जे कर्मक फल ओहने होइ छै जेहेन कर्तीक कर्म रहल। जखने कर्म धर्म मे अबै-ए तखने अर्जुन सन अर्जन (अरजन) शक्ति आबिये जाइ-ए। तैं जँ आन गाम वला सब धनहा गाम कहै छथि त एते बधाइक पात्र त छथिये जे अहिना अयोध्याक शासक दरबार मे बधैया गीत- गौनिहार छला।

दोसर भेल फलहा गाम। एक त विद्वानक गाम भवनगर सब दिन सँ रहल, तइ पर जनक जी सन-सन हर जोतिनिहार सब दिन सँ रहले आएल अछि। केना नइ जोतत? मिथिला कि जर्मनी, इंग्लैड सन देश जेकाँ लोहे-लक्कड़ पर ठाढ़ अछि, ओ त अपन माटि-पानि, नदी-नाला, बाध-बोन, झरना-पहाड़, गाछ-विरीछ, जीव-जन्तु सँ तेना भरल अछि जे अपने-आप मे सघन बन सेहो बनल अछि, आ भरल-पुरल सागर सेहो बनले अछि, तेँ नाम जँ किओ फलहा गाम कहै छथि त ओ जरूर देखल-सुनल बुझल-गमल बात रहला अछि, तैं हुनका धन्यवाद किअए देबैन हुनका फलबादे देब बेसी नीक हएत।

तेसर भेल. कोइर-कुजराक, तीमन-तरकारीक गाम। भाए ओहिना नइ ने लोक कहै छथि, अपन अनुभव सँ कहै छथि कि जे जाबे धरती कें कोड़ल-कमाएल नइ जाएत ताबे तीमन केना तरकारी बनै-ए आ तरकारी केना तीमन बनै-ए से थोड़े बुझबै।

चारिम भेल- चोरबा गाम। जे किओ चोरबा गाम कहै छथि ओहो कोनो खिसिया कें नइ कहै छथि, जँ खिसिया कें कहैतथि (कहितथि) त दोसर रूप होएत मुदा से नहि ओ सोलहो आना देखल-बुझल बात कहै छथि तैं ओ सबसँ बेसी बधाइयोक अ

पृष्ठ-४

धनवादोक पात्र छथिये। ततबे नइ जँ इमनदारी सँ देखल जाए त ओहू सँ (माने बधाइयो- धनवाद) बेसीक पात्र ओ छथि किअए त ओ भवनगरवलाक सब किरदानी आइये सँ नहि सब दिने सँ देखैत आबि रहल छथि जे केना भवनगर वला अनकर पुस्तकालय देखैत- देखैत पसिनगर किताब चोरा कैं बैग मे राखि लइ छथि, तैं जँ ओ करै छथि ते कौनो अपराध नहियें कौ छथि। तहिना ओ आइस्क भवनगरवलाक चालि बुझै छथि सेहो बात नहियें अछि सब दिन सँ देखैतो आ सुनैतो आबिये रहल छथि जे केना अनतै जा-जा ज्ञान- सब आनि-आनि ओकर चोरी नइ कौ छथि। तहिना आन गाम सँ बुरि सब सेहो चोरा- चोरा अनबे कौ छथि। ई त भेल क्लास वन एक नम्बर चोरक सबहक सूची; दोसर नम्बर फुलवारीक मालीकक लिअ। देखवारक माली जखन आने-आन एज दरबाजक फुलवारी सँ ललचकर फूल सबहक बीजो आ गाछो जे किछु देखाइयो कैं आ किछु नुकाइयो कैं अनतौ रहलो अछि आ अखनो आनि रहल छथिये। सेहो बात नहियें अछि, तैं जँ कियो चोरवा गाम भवनगरवला कैं कहै छथि ते भवनगर वला कैं मन मे मिसियो भरि दुख किअए हेतनि! स्पष्ट हुनका सबहक बुझब छनि जे जँ गोवर खतौक फुलाएल कमलक फूल छी, तइओ ओ कमले ने भेल।

परिवारक बात त छी नहि, गामक बात छी, सुनीता सुचिता, सुशीला आ सुलेखाक जनम एके मुहूर्त एके दिन भेल। कहब जे, जन्म भगवानक देल छिअनि तैं ओ असंभव नहि भेल मुदा चारूक नामक पहिल अक्षर 'स' एक केना भेल? केना सोंसे गामक दाय-माए कैं ऐहेन एकरूपता सुझलनि जे चारू गोरके नामक 'स' सँ लगा देलनि। मुदा किछु छथि ते भवनगरक दाय-माए छथि, किए तैं पोथी-पुराण सँ हटि कैं थोरे चलती। माए, रस्ता दिशा कियो बिदा हएब आ इ बुझबे नै रहत जे कतऽ जाएब तखन डेग केम्हर मुँहे उठत। मुदा से थोड़े भवनगरक दाय-माय छथि, ओ प्रौढ़, परिपक्व दाय-माए छथि, किने, तैं समयकेँ दु भाग मे बाँटि, शुक्ल- कृष्ण दु पक्ष केने छथि। शुक्ल पक्ष मे जन्म भे

कथा- भूठ सपना - पृ० ५

चारू गोटेक नामकरण 'स' अक्षर सँ कैलैन।

शरीर जहिना अनेको गुणो-धर्मक आ अवगुणोक धाम छी तहिना मनो धाम छियै। अही धामक बीचक गाम भवनगर। चारू बालक माने सुनिता, सुचिता, सुशीला आ सुलेखा, गाम भवनगर। बच्चाक बीच जहिना गुण-अवगुण अंकुरावस्था मे रहै-ए तहिना भवनगर कें चारू बालाक सेहो सहल। मिथिलाक गाम त भवनगर छीहे, जहिना एक दिशि नीतिशास्त्रक बोन अछि त दोसर दिस अनीतिशास्त्रक झाड़ दुरभाग सेहो अछिये। खैर जे अछि, एक त ओहुना अपना सबहक दुर्भाग रहल जे हजारो बरखक गुलामीक शिक्षा रहलो जइ सँ शरीरो आ जिनगियोक खून-पसेना सँ मांसपेशिया तक खून-मांस सब चुसा-चबा गेले अछि। पढ़ाइ-लिखाइक जहिना एक दिशि (दिस) दुनियाँक शीर्ष पर मिथिला अछि तहिना ओ समटल रहने, आम जनक बीच सँ हजारो कोस दुर रहबे कैल अछि। जँ ओकरो हिसाब देखब त बुझि पड़त जे पढ़ै-लिखै मे अदहो सँ कम आबनो छीहे तैँ मिथिला पछुआ गेल सेहो कैना कहल जाएत। एक सँ एक योद्धा पौरुषक (पुरुषक) पैदाइसो मिथिलाक माटि-पानि, आइयो नहि सब दिन सँ रहैत आनि रहल अछि। जँ से नइ कैत त कहा भरि चास-बास मे कियो योद्धा ओहन जिनगी बन मे रहि जीवन भरि ज्ञान बँटैत बिसरैत रहला अछि। तेकरा जँ आइयो मिथिलाक धरती आ मिथिलावासी कैँ देखब त ओहु दिसाबे हिस्सा लगा खेत-पथार (माने भूमियेँ) बेसी अछि। तेहाम जँ उत्तर-प्रदेश, पंजाब, सन आन प्रदेश, मिथिलांचलक सँ बाहर जे क्षेत्र बिहार राज्यक अन्तर्गत अछि, तेहू सब राज्य सँ खाइ-पीबैक अनेको वस्तु आबि रहल अछि, इहो त अपने ने देखै पड़त। मानो त मान छी सबहक छी मुँह स्वमान ने अपन भेल, इहो देखबे ने। स्कूलक (विद्यालयक) अभाव, आर्थिक तंगी संग धार धूर सँ भरल क्षेत्र आइयो नहि सब दिन सँ भोगी पड़ल रहल छथि, मुदा कैँ एकरा असाध्य मानि ली सेहो एकैसमी सदीक लोकोमे बात भेल। हँसारत कैँ कियो ने सकत। पाहिने किछु कम छल अबन किछु बेसी मे गेल अछि, तैँ कहब जे मिथिला क्षेत्र मे लोकक बढ़वारि कम अछि सेहो बात नहियेँ अछि। टुटलो हथिसार तइओ

नौ (नअ) घरक सौंगर अछियै। केतबो लोक मिथिलाक धरती पर सँ किअए ने पड़ाजाए, तैं घरबी पुरान गाँ हएत। सेहो कत्ते नहियै अछि। तैं ने बच्चा रोकैक आपरेशन धुर-झाड़ चलियै रहल अछि।

एक ठाम रहने चारू बच्चा पहिने वहीनक संबंध सिऔलक, पद्धति सन अपना मे वहीना बनि गेलि। निमंत्रण स्वीकार केलक। तँ जिनगी वहीन जेँका निमाहैत रहला। एक्के गरदा माटि चिक्कन माटि कें घरौंदा (घर-अंगना) बना अपन-अपन अंगना घरक घरवासो लेलक आ घरवासक भोजो केलक। माटिये-माटि सब किछु खाइ-पीबै सँ ल' क' सब किछु रहै।

समय बीतल, परिवारक अंग बनैक संग-संग, अंग बनब भेल परिवाररूपी गाड़ीक, मटे ओ साइकिलक माल दुइ-ए जेँकाँ किअए ने दुआए, गामक देवालयक नीपब-बाहरब सब दिन कें करै लागल। ओकरा जेँकाँ समय नहि छल, पुजाक फूल पहुँचबैं, जेना दुर्गापूजा मे समाजक (गामक) बाल-बोध सब भोरे फूल लोढ़ि कऽ भगवती स्थान पहुँचबते अछि, तँ धरि ओ अपना कें पूजा कौक आधिकारी नइ बुझै-ए, ओ बुझै-ए नरक निवारन चतुर्दशीक उपास स ल' क' रामनवमी, कृष्णाष्टमीक कौ-ए, जइ सँ पुजाक अधिकारी स्वतः बनि जाइ-ए। उपासक उपरान्त ओ पहिने देव-पूजन करैत पद्धति अपने जल ग्रहण करैत। नारीक विशेष गुण मिथिलांचलक नारी मे रहल आबि रहल अछि, जे पतिक विचारानुकूल संगीक मुदा आगू कोन रूपे बढ़त तौहू दिस त देखै पड़त।

कतिये आगू बाल-विवाह एकब शुरू भेले छल, दस-बारह बर्खक बीच चारूक विवाह भ' गेल। जे जनै अगुआ कें गाम छोड़लक ओ ओतै बेसी कनबो केलं आ कानबो सुनलक। मुदा जे सबसँ पछुआएल ओ कनबे ने केलक। केहेन गरदनि जोड़ि कनैत, माए त माइए छथि, हँसू कि कानू माए माइये जेँकाँ रहती। तैं संखी-पड़ोसाक संग ने कानल, आ ने कानब सुनलक तैं हँसियै-हँसी मे उड़ि गेल। कें कत' गेल सें अपने टा बुझलक।

पृष्ठ-6

समय आगू बढ़ल। तीस वर्ख पश्चाति एक-दोसरसँ मोबाइल भेने सम्पर्क भेल। तइ बीच के कत' माने चारू गोरे, रहल से अपने-अपने टा कुफलक। सबहक मन कहै, माने अपन-अपन कहै, जे हमही टा जीवै छी, बाकी के कत' डेरा-डेर गेल तेकर कोनो पतो ने अछि।

चारूक बीच सम्पर्क-सुत्र बनने, नैहर कैँ जइ धरती पर बच्चा मे चारू जिनगी बढ़ैन कोँ वाली बढ़ीन जैँका जीवैक बनबक संकल्प भेने छल, तेहामक बनल। चैतक रामनवमी दिनक दिन, भैंट होइक ऐ दुआरे बनल जे गाम मे ऐबेरक उत्सव मे कम्पीटिशन अछि, तँ देखै-सुनै ओकर गाम सेहो रहबे करत।

संजोगवनल, चारूगोरे रामनवमी दिन चारू दिससँ पहुँचल। गामक उत्सवक तेहेन हल्ला-होरी चढ़िल गेल जे कोसी-कमला चारूकेँ ओइसँ बाढ़िक पानि उछलने गामे फैंसे जाइ-ए आ तखुनका जेहेन मन लोकक होइ छै तेहेन त नहि, मुदा राम-रमैयाक धुनक बाढ़ि ऐने गामक सेखी ग्राम-वनिवैं गेल छल, तइ बीच अपन-अपन दुख-सुख चारू सेहो बिसरिये गेल किअए त सबहक नैहरक गाम ने भवनगर छी।

उत्सव समाप्त भेल। चारू अपन-अपन ठौर धड़त। प्रातक (रामनवमीक मेलाक परातक) समय, सब एकठाम बैसि अपन-अपन अतीतक जिनगीक गप-सप भेल। भवनगरक गाम, छोटे। सब अपन-अतीत-भविसक विचार केनिहार सब अछिये, तँ वातावरण मे ओहन विचार बहैत रहल छल, तँ चारूक मन सेहो वतावरण मे भरल-भरल गेले छल। आन गाम जैँका भवनगर थोड़े अछि जे बाल विद्यालय बच्चा सबकेँ सिखौल जाइ-ए पौआ सत बाजब धरम छी, मुदा सिखौनिहार अपने भरि दिन मे कते निमाहै-छथि से आन कँ कोकेब। कोन रखता छै, मुदा अपनो नइ रखता छथि, सेहो बात त नहिये अछि।

चारू एकठाम भेल, जिनगीक अगिला-पछिला सीमा सटि कैँ एकठाम भेल बाकी तीस बर्खकेँ भेल तेकर ठेकान करै मे बड़ समय लागत, तँ बिसरबैनी कि। देखते छिऐ जे जे

पृष्ठ-८

परिवार देखै भरि दिन रोड पर जिनगी बितवै-ए पढ़लो-लिखल नहि छी, जिनगीक अनुभवी रहितो अपन-बाल बच्चाके बुझबै-सुझबै जे कतेक समय पेब रहल अछि, किओ सोचनीय विचार नहि अछि। धनक भरपाइ कौं मे त सब जुटल छी, मुदा मनक भरपाइ कौं मे किअए फुरल छी, से के
एकठाम होइते सुलेखा बाजलि- 'आइना अपना सब कुल्ला बच्चा मे बाजल रही जे भरि जिनगी बहिन जेकाँ रहब, से मुदा रहु निमहैत आबि रहल अछि।'

सुलेखा पर सुनीता आँखि गुरेड़ै लागलि। मुदा सुचिता आँखिये इशारा सँ हँसी देलनि। सुचिताक आँखिक हँसी सँ सुनीता विहुँसैत बजली- 'बहिन, ई से त अपना-अपना भागक कामे निमहिइयो गेल मुदा---।'

मुदा सुनि सुशीला बजली- 'दीदी, अखन सुलेखेक विचार मानि लियौं। कियो-अपना भागक दमे जीबै-ए आ कि केकरो आनक दमे। सब अपन-अपन राम-धाम कैं सुमरैत समय बिताइये रहल अछि।'

किअए सुनीता सुचिता दिस ताकैत आ कि सुलेखा दिस अपन विचार कैं अपना मने मे गोड़ि, आगू जिनगी देखै लागलि।

सुलेखाक मोबाइल टनटनाएल। मोबाइल सँ गप-सप केला पछाति सुलेखा बाजलि- 'हमरा इमरजेंसी मे गेल, आइ छी-।'

चारि गोरे केँ चारि दिस भगेल। भवनगरक जे अखन धरि गदैन रहल अछि, ओ बाल-बोधक भव सदृश्य रहल अछि, जेकरा सियनगर होइ मे किछु नहि किछु समय लगबे करत।

समाप्त
१५/११/२०१८

कथा - याददास्त — पृ० १

आसीन इजोरियाकें चारिम चान जेकाँ जीवानन मास्टर सहाएबक रूप आइ भोरे-भोर देखलियनि। देखिते मन तिरपित भ' गेल। तिरपितो कैना ने होएत, जइ समाज मे माए-बापक बुढ़ाड़ियै छुट्टि रहल अछि तइ सँ पूर्वे समापत भ' रहल अछि, तइ समाज मे जे पेंसठि (पैंसठि) बरखक अवस्था मे बेटा कहि देलकनि जे जहिना अपने पढ़ाइ छोड़लौं माने इस्कूल कओलेज सँ तेकर अगिले हाइ स्कूल मे पढ़ौनी शुरू केलौं जे काज साठि बरखक अवस्था मे ओ काज (पढ़ौनी) हाथ सँ छीना गेल, आब अहाँ बूते ल' क' इंजीनियर बनल थोड़े हएत, मुदा अकाजक लोककें त ई दुनिया रसपान करबै नइ अछि, तैं जे काज हाथ सँ छीना गेल ओइह काज अपन परिवार मे बाल-बच्चाक बीच करू। चारि टा पोता-पोती अछिये। मासे-मास अपनो पेन्शन भेटिते अछि खूब उड़ाउ-पुड़ाउ, फगुआ खेलू आ दिवालियो मनाउ। मास्टर सहाएबकें देखिते प्रणाम कैत कहलयनि- काका, भगवान केकरो परिवार देखिथिन ने अहाँ के देखलनि। तैं सुख-सुविधाक विषय मे किअ पुछब। मुदा कुशल-क्षेम नहियो पुछब से उचित नइ हएत तैं पुछै छी, चैन सँ रहै छी कि ने?

मास्टर सहाएब दोहरी धारक पेट मे पड़ि गेल छथि, दुनू दिस जहिना धारक पानिक पत पनिडुब्बी कुर्के छोपे तहिना पनिडुब्बी सेहो आगू मे छथिहें। तैं मन मानिये ने रहल छलनि जे चैन सँ रहै छी कि बेचैन सँ, मुदा लोको कि ने जेकरा अपने लेहाज नइ छै। एक रूपे त ओहो त ओहिना लाज छीहे छिपा कें रखै-ए तहिना लाजो ने खुलि कें कहै-ए जे कुछ बनबाइ छोड़ि दे हम तोरे घर बास करब। ओना मास्टर सहाएबक आगू मे हम बचकन छीहे। मुदा प्रश्न त बचकनक नहि चेस्टकनक अछि, माने अपन जीवन अपन लोक अपन सोच- अपन विचार कते दूर धरि अछि। ओना जीवानन काका कें जहिना दुनियाँ कें भौगोलिक रूप मे देख रहला अछि तहिना सेवा निवृत्तिक पद्धति जे अध्ययनक विषय

पृ०-२

बदललनि तरवन अपन दुनिया (मनक दुनिया) सँ सोँझा मे अबै लगलनि। असमर्थ असमनजस मने बजला– 'बौआ, जे चलन सारिके बेवहार अछि तइ मे बेचैन छी मुदा अपन-शीतल दुनियाँ जखन देखै छी तखन बेचैन भ' जाइ छी तेँ कि करब? अपन जिनगी आम जेँका पकलो अछि आ काँचो त छैहे अछिये।'

जीवानन्द काका बी०ए० पासकेला पछाति हाइ स्कूल मे भूगोलक शिक्षक बनला। एकदिशि अध्ययनशील लोक, दोसर दिशि परिवारो समटल मेँ अछा सँ बेसी दरमाहा अपने पढ़ै-लिखै मे लगौलनि। दुनियाक भूगोल कैँ चाटि गेला। ओना एकेँ विषयक पढ़ौनी जीवानन्द काका कैल रहलाह। स्कूल मे बेसी विद्यार्थी, जाइ सँ सेकशन मे बँटल किलास रहने सँ एके विषय पढ़बै मे अपन ड्यूटी पूरि जाइ छलनि। ओना भूगोलक संग-संग आनो विषय सब पढ़ि कैँ बी०ए० पास केने छेला, मुदा अभ्यास छुटने आन-आन विषय मन सँ हेराए त गेलनि, जे अन्तोअन्त तर पड़ि हेरा गेल छनि। ओना जीवानन्द काका अपन जिनगी कैँ समेटि सब दिन सँ बितबैत ऐला अछि। पुछलएनि– 'काका, अहाँ शिक्षक छी तैँ डाक बचन ओँका बोल अछिये मुदा हम त सँ नइ छी, पारिवारिक छी तैँ परिवारेक बात ने जाने चाहब।'

विचारक दुनियाक ढलान सँ ढलकैत जीवानन्द काका बजला– 'बौआ, परिवार देख मन मे बहुत खुशी होइ-ए जे खाइ-पीबै छी, मौज-मस्ती सँ जीब रहल छी।'

जीवानन्द काकाक विचार मौज पर चढ़बै ने केलक जे कि मौज मस्ती कहै छथि। बजलौं– 'से कि, काका?'

जीवानन्द काका बजला– 'अपने जे वंश बनेलौं माने शिक्षक वंश, ओ आबनो दनदनाएत आगू बढ़ि रहल अछि।' 'अपनो शिक्षक जिनगी बितेलौं, दुनू बेटो सैह भेल।'

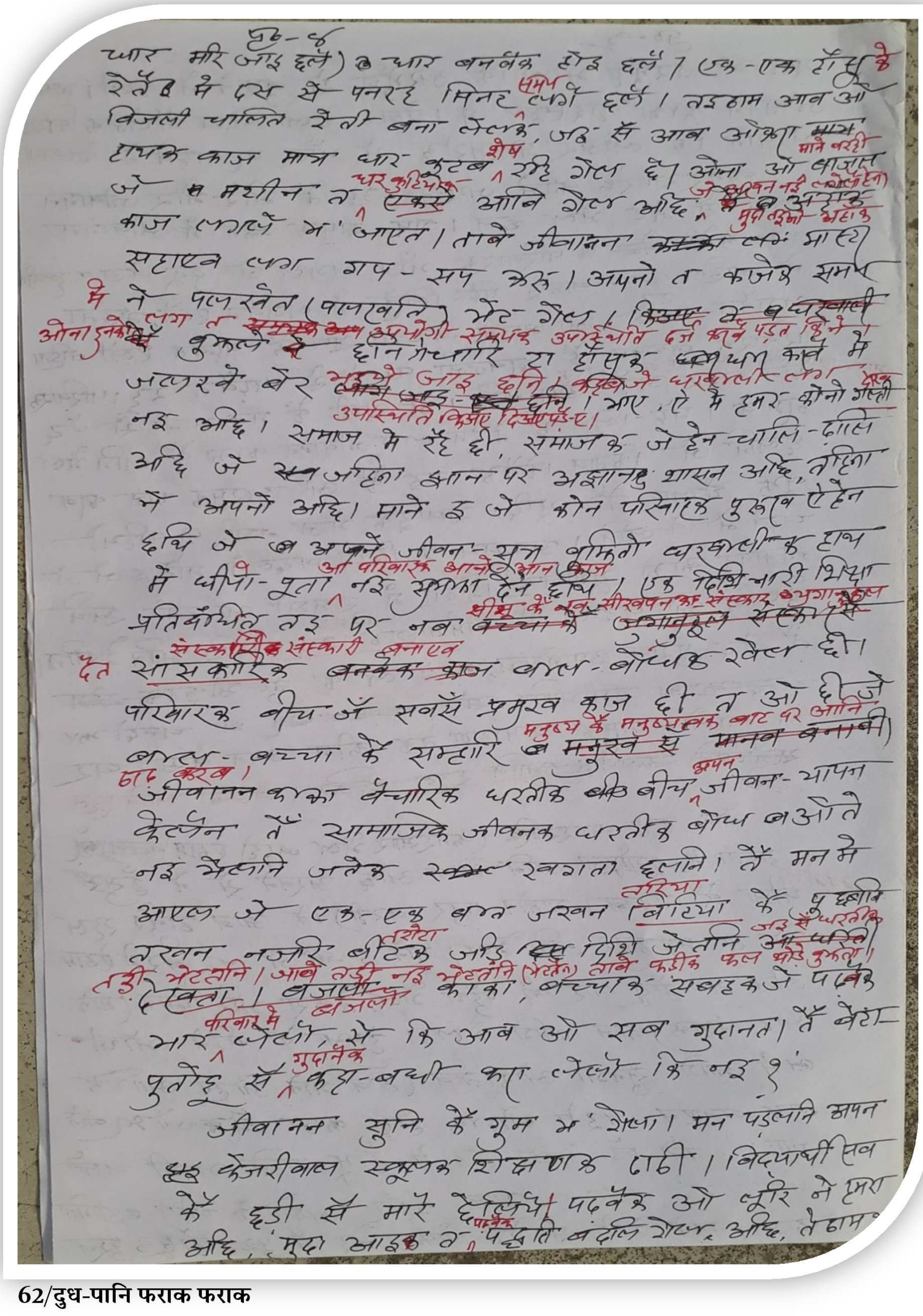
बजैक अभ्यासी लोक जीवानन्द काका सब दिन सँ रहने केला तैँ कि बाजि दइ छथि से मौजे पर नै चढ़ए। तइ मे बजला जे अपनो शिक्षक छेलौं आ बेटो शिक्षक भेल, बेट

पृ०-३

मुदा ओ तरमुँहा भेला कि उपरमुँहा से बुझबे ने केलौं। अपने जीवानन काका हाइस्कूल में शिक्षक छैला बेटा कॉलेजक शिक्षक भेलाति कि लोअर प्राइमरीक से भाँज पा चढ़बे ने केला।

कमरसारिक काजे आएल रही तैं भोरे-भोर जीवानन काका सँ भेंट भेल छल। गप-सपक क्रम मे जीवानन काकाक परिवारक भाँज लागल जे दुनू बेटा कहुना लगबैत रहइ। आ अहिना अपन कमाइ पढ़ै-लिखै मे लगबैत एलौं, तहिना परिवारक बच्चा सब कैं पढ़बैत एलौं तहिना बच्चा कैं लबन्ना पा बोसि पढ़बैत रहइ। परिवारक कोनो भार अहाँ उपर नहि। माने-खाए-पीबै कपड़ा-लत्ता, घर-दुआरक कमावे। पढ़ै-लिखैक तेहेन लत जीवानन काका कैं लगि गेल छलनि जे किताब किनैक पाइ कैं ओ धरमक काज बुझैं छैला तैं सूदि-सवाइक भाँज नजरि प कहियो चढ़बे ने कैलाति। अध्ययनक दिशा बदलने माने इ जे जे जीवानन काका भूगोलक विषय मे समयो आ टको खर्च कैलनि ओ बदलि कैं धर्मशास्त्रक विषय दिशि आबि गेलाह। तैं वेद-पुराण, उपनिषद, सँ लऽ कऽ तुलसीकृतक रामायणक संग आ चन्दो झा आ लालोबदासक रामायण तक कीन अपन बैसार घर सजबैत आबि रहल छथि।

ओना रही कमरसारिक (कमरसारि भेल बरही ऐठाम) काजो रास्ता मे, दुर्गापूजा आबि गेल अछि अरखने सँ ने हँसुआ पीजा कैं रखब। गामोक ठाकुर (बरही) कि आब ठाकुरे रहल ओ त महाठाकुर बनि गेल। माने इ जे जइ बरही ऐठाम बीस टा हँसु धार कौं पहुँच गेल, तैकरा भरि दिनक (माने आठ घंटाक) काज लगि गेलइ। हँसुआ कैं पहिने भाथी स मे आगि सुनगा ओकरा ताव (ताव माने ओहन आगिक ताप बनाएब जइ मे लोहाक हँसु काज कौं जोगर बनि जाए) बनबे पड़ै छैलै, तइ मे हँसु राखि भाथी चलबै पड़ैत रहै छलै। जखन हँसु आगि मे धीप अगिल काज (माने रेती सँ रेतै ओकरा, जइ सँ पुरान हँसुक पुर



पृष्ठ-८

चार मरि जाइ छलैं) चार बनबैक होइ छलैं। एक-एक हाँसु कें रेतै मे दस सँ पनरह मिनट समय लगै छलै। तइ ठाम आब ओ बिजली चालित रेती बना लेलक, जइ सँ आब ओकरा माने बरही हाथक काज मात्र धार कुटब शेष रहि गेल छै। ओना ओ बाजल जे मशीन त घर कुटियोक एकरे आनि गेल अछि, जे अखन नइ लगौने छी, मुदा तइओ ओहो काज लगाबै मे आएत। ताबे जीवानन्द सेहो मात्र सहायक लग गप-सप करु। अपनो त काजेक समय मे पलखैत (पलखति) भेट गेल। किअए ने बचपनवाली ओना इनको लग त उपयोगी सम्पर्क उपस्थिति दर्ज करैत पड़ैत छैन्हि बुझलौं हेतै छोनि-चारि टा हाँसुक धार कावे मे लगाबै बेर भेजैत जाइ छनि। किअए जे धरबाली लोग देख उपस्थिति किअए दिआएपड़ैए। आए, ऐ मे हमर कोनो गल्ती नइ अछि। समाज मे रहै छी, समाजक जे हेन चालि-ढालि अछि जे जहिना ज्ञान पर अज्ञानक शासन अछि, तहिना मे अपनो अछि। माने इ जे कोन परिवारक पुरुख ऐहेन छथि जे अपन जीवन-सूत्र बुझितो घरवालीक हाथ मे धीया-पुता आ परिवारक आनो आन काज नइ सुमझा देने छथि। एक दिस नारी शिक्षा प्रतिबंधित तइ पर नब शिशु कें नव सीखपन का संस्कार युगानुकूल संस्कारी बनाएब देत सांसकारिक बनबैक काज बाल-बोधक खेल छी। परिवारक बीच ओं सबसँ प्रमुख काज छी त ओ छी जे बाल-बच्चा कें सम्हारि मनुष्य कें मनुष्यत्वक बाट पर आनि ठाढ़ करब।

जीवानन्द काका वैचारिक धरतीक बीच अपन जीवन-यापन केने तँ सामाजिक जीवनक धरतीक बोध बओते नइ भेलनि जतेक खगता छलनि। तैं मन मे आएल जे एक-एक बात जखन तरिया कें पुछबनि तखन नजरि बीटक तरोटा जड़ि दिसि जे तीन जड़ि सँ धरतीक तड़ी भेटलनि। आबो तड़ी नइ भेटलनि (भेटतैन) ताबे फड़ीक फल धोड़ दुर्लभ। बजलौं काका, बच्चाक सबहक जे पढ़ैक परिवार मे भार लेलौं, से कि आब ओ सब गुदानत। तैं बेटा-पुतोहु सँ गुदानैक कहा-बची का लेलौं कि नइ?

जीवानन्द सुनि कें गुम भ' गेला। मन पड़लनि अपन केजरीवाल स्कूलक शिक्षणक टाटी। विद्यार्थी सब कें छड़ी सँ मारै छेलियै पढ़बैक ओ जूरि ने हमरा अछि, मुदा आइक त पढ़ैक पद्धति बदलि गेल, अछि, तेँ ठाम...

कथा - याददास्त - पृ०-५

मुदा आबन धरि जे परिवारक ममत्व, जीवनक देखलनि, ओहि अनुकूल जीवानन्द काका बजला - ' बौआ, परिवार मे जँ ऐना कहि बची क 'क' काज आदृस्त तखन बिसवास बिसबासक जगह कतऽ रहत।

अपनहि वैचारिक विचारक हिसाबे जीवानन्द काका बजला। तैं विचारकेँ आगू बढ़बैत बजलौं - ' काका, बच्चा सब पढ़ै मे बढ़ियाँ अछि कि ने ?

हमर प्रश्न सुनि जीवानन्द काकाक मन जेना चनिएलनि। चनिआइतेँ चैनक झलक अबै लगलनि बजला - बौआ बेसी सँ कि कहब। एक परिवारक चारि बच्चा छी। ५ टा अबोध अछि जे पढ़ैक पढ़ाइक जगह अबै धरि छीहि आइ-ए। मुदा ५ टा जे कनी चेष्टगर अछि तइमे एकटाक याददास्त नीक अछि, आ दोसरक कमजोर अछि ओहि सँ कहि जीवानन्द काका गुम भ' गेला। गुम होएक कारण भेलनि जे एक त परिवार सृष्टिजन छी, तइपर जिनगी भरि शिक्षण काज सँ जुड़ल रहलौं। इस्कूल मे त दस गामक दस रंगक विद्यार्थी अबै छल, समय कम रहै छल, ठीक से ने बुझा पबै छेलिऐ, आ ने अपने बुझि पबै छेलौं, समय बीतैत-बीतैत बीत गेल। ऐठाम त ऐ नहि अछि परिवारक बच्चा छी। अगिला पीढ़ीक तैयार करैक जिम्मा कन्हापर अछि। मन कड़ुआ लगलनि। अहिना धार मे कड़ुआइरिक चालि सँ नाव कखनो घाट सँ अघाट दिशि जाइ-ए त आ कखनो अघाट सँ घाट दिशि अबै-ए मुदा नैया नाविक त मात्र कड़ुआरि चलबै-ए, तैं कि ओ ई नइ बुझै-ए जे नाव कखन अघाट दिस गेल आ कखन घाट दिशि आएल ओ त जरूर बुझबै करै-ए। मुदा तैं कि ओ अपन काज बीचे छोड़ि दइ-ए। ओ त अपन गनतब (गणतव्य) स्थान पहुँचला पछातिये छोड़ै-ए।

जीवानन्द काकाक गुमकी त्यधैत देख अपन मन गुम्हरै लगल। मन मे उठल जे आइ Ajanta Officer आसीन मासक इजोरिक पक्षक (परबक)

पृ०-६८

चारिम दिनक चान अगस्त उगत, मुदा सैह चान जखन चैत मासक इजोरियाक रहै-ए, वा अखाढ़ मासक इजोरियाक रहै-ए वा माघक रहै-ए, जइ दिनक बीच एकै उतसवक माहौल रहितो, चानक रूप परिवर्तित भऽ जाइ-ए। चैतक चान जहिना वायुमंडल मे ठेंठ गरदा बालु सँ अन्हार अन्हरा जाइ-ए तहिना ने अखाढ़क मेघक बदलीहन सँ झँपाइये गेल रहै-ए। तहिना कि माघक चान अबंच रहै-ए। ओहो त शीतक लहरि सँ अपन रूप जमुना धारक कालिंदी तीर जेँका रूप पकैड़िये लइ-ए किने? उगैत-डुबैत जीवानन काका रूप एकाएक बदललनि। बदलैक कारण भेलनि जे जे पुतोहु, बच्चा, विद्यार्थी, शिक्षक बनल जीवानन काका आ तेकर इन्सपेक्टरी कर्मो छथि, ओहुना पहिने लोटामे पानि भरि गिलासक संग पहुँचा गेल छलथि ओहि चाहो नैने सेहो पहुँचलनि। भाए परिवार छी, किने अपन-अपन काजक भार अपना ऊपर मे अछि मुदा दोसरक, परिवारक आन-आनक, इन्सपेक्टरीओ नाइ केने जाएत तखन श्रम (काजक श्रम) भरैक घरैक जेनाकेँ संभावना सेहो भऽ जाइ-ए।

चाह पीबैत जीवानन काका बजला- बौआ, तोरा सँ लाथ कि, जेकरा पढ़ैने छी, ओकर यादाश्त कमजोर छै, मुदा ओकरो त मजबूत बनाओल जा सकै-ए। सैह परियास करैत चाहै छी। मुदा---?

मुदा कहि जीवानन काका फेर-चुप भऽ गेलाह। इनका मुँह दिशि ताकी त कोनो थाह ने बुझि पड़ै। मन मे उभार जे एकाएक अधडरेर पर किआए रूकि गेला। ऐहेन त भेलनि जे जहिना कोनो औरत मकानक छत पर सँ निच्चा अबैकाल आ निच्चे सँ उपर जाइ काल बीचक जे सीढ़िक घुमाव (मोड़) अछि तेहाम जा बिसरि जाइ छथि जे उपर सँ निच्चा अबै

पृ०-६

छेलौं आ कि निच्चा सँ उपर आइ छलौं। फेर दुआर जे जहिना बाट चलैत बटोही बाटक अगिला कटारि देख अटकि जाइ-ए तहिना ते ने भेलनि। मुदा से नइ केलौं। मुरदाक मुँह दिशि सँ नहि खोंचारि पएर दिशि सँ खोचारैत बजलौं - 'काका, चाह बड़ सुनर बनल अछि।'
पुतोहुक प्रशंसा सुनैत जीवानन काका बजला - 'बुझिक त देवी छथि पुतोहु मुदा मुँहक जे झनकाहि छथि तइ सँ हुनकर सब देविपन...?'

देवीपन कहि जीवानन काका फेरि मुंह मोड़ि लेलनि। मोड़ैत मुँह देख ए बेर मुँहे दिशि सँ खोरना चलेलौं। 'काका, अहाँ ते तेहेन मोड़ पर आनि अपन विचार कैं छोड़ि दइ छियै जे मन मे ओ भौतिया जाइ-ए।' कनी...।'

हमर इशारा जीवानन काका बुझि गेला। बच्चाक बात अपना उपर लइत जीवानन काका, जहिना समाज मे धीया-पुताक कैल गल्ती कैं माए-बाप अपन उपर लइत (लैत) दोखी मानै छथि तेना जीवानन काका नइ केलनि अपन विचार छनि। जइ अनुकूल बुझै छथि जे बच्चाक गल्ती कैं प्रायचित (पराछित) प्राइसचित) हेबा चाही नहि कि ओकर गल्ती के अपना सिर ओढ़ि छोड़ि देबा चाही। तइ बीच पुतोहु पान नेने सेहो पहुँचलीह। पान देख जीवानन काका मन एते फुला गेलनि जे ओ हमरा केजरीवाल इसकूलक संआरईक विद्यार्थी आ अपने शिक्षक बनि गेला। बजला - 'बौआ, अपन यादास्त त सब दिन सँ नीक रहल मुदा औरो आब डोल-पता कौं-ए।'

जीवानन काकाक विचारक गहीरपन देख बजलौं - 'से कि काका?'
(हिय) हीय खोलि जीवानन काका बजै लगला

बौआ, सब दिन भूगोलक शिक्षकों रहलौं आ विद्यार्थियो रहलौं। दुनिया कें भूगोलक नजरियें देखैत-सुनैत रहलौं। सह दउत बजलौं -' से तें अहाँ मधुमाछी जेँका जहिना धातिफुलक रस लोलियें तहिना मोधो त दैवे केलियै किने?'

जीवानन्द काका मन मधु सुनि मधुआ गेलनि। जइ सँ हृदय पघिलै लगलनि बजला -' बौआ, पाँच साल सँ भूगोल पढ़ाएब छुटि गेल अछि। आब अपनो ने पढ़ै छी। जेकर भूगोल छियै से अपन जानए।'

जेकर भूगोल छियै, से अपन जानए सुनि मन मुस्कुराएल। जे भाव जीवानन्द काका बुझि गेला, तैं बौलती बन्न कैने रहला, मुदा किछु बजलौं नहि। ओ आगू बजलाह -' बौआ, नारायणी नदीक विषय भूगोल मे पढ़ने छी। महादुष्ट नदी अछि। जहिना कमला-कोसी अछि जे गामक-गाम कें उपटबैत रहै-ए तहिना नारायण नदी सेहो अछि। अखनो ओहिना मन मे झक-झक करै-ए। मुदा आब जखन शास्त्र मे नारायणी नदी पढ़लौं हेन आ बुझलौं हेन जे नारायणी नदी पवित्र पावनिक पनधार छी जे जइ मे नर-नारायण मिलि स्नान करै छथि, से पढ़ि जेना अपन यादास्ते चौपट बुझि पड़ै-ए। केना कहौं।'

समाप्त

१५।१०।०१८

कथा - एकरबा बानर - पृ०-१

आसिनक दुर्गापूजाक संगे, कोजगरो भ' गेल। कातिक तेसर दिन बीतरहल अछि। ओना गामक लोक सब बजै छथि जे जुग उनैट गेल। से बजै छथि दू टा चीज देख कें, पहिल जे तेरहम मास जे कातिक मानल जाइ-ए से अगहन (अग्रहन) भ' गेल, माने कतिका धान भेनै आ दोसर जे हैदरावादी किसमक ओलक उपर भेनै। कहैत छथि जे सुआदे खतम भ' गेल। जखन ओल मे कबकबिये नहि तखन ओ ओल कैना भेल? सनइक नामक पाद्धु ओकर गुण-धर्म अछिये। तइ संगे ओलक बढ़बारि (देशी) अधा सेर प्रतिवर्ष अछि। जे तीन सालक पद्धति भूमि सँ उखारब ते डेढ़ो सेर हैत कि नइ। तैठाम जँ तीनिये मास मे छ किलोक ओल बढ़ि कें भ' जाए, ते जुग उनटब भेल कि नहि। पाँच बजे भोरक समय भिनसर नइ भेल हल रबिनाथ भाए, 'रोड ध'क' नहि घुमै छथि; बाधे-बोनें घुमै छथि, तही रुटिंगक (कार्यक्रमक) हिसाब से पछबरिया बाध बोन दिस घुमै निकलला। सड़कक बगल मे गाछी-बिरछीक क्षेत्र अछि, तैका पछिम बाध अछि। बाधक माने भेल खेती-पथारी कॉवला आ बोनक माने भेल गाछी-बिरछी।

बाधक बीच एकटा कट्ठा डेढ़ेक परती अछि और परतीक बीच एकटा कहिया-कतक साहोरक गाछ अछि। बर-पीपर जेँका ने लतड़ल-चतड़ल अछि आ ने ताड़क गाछ जेँका पुरहिसाहे अछि। सब सिरखारे त बरे-पीपर जेँका अछि मुदा पहाड़ी क्षेत्रक लोक जेँका घुटमुटाह त अछिये। मुदा तैँ कि आन गाछ सब सँ कम रुआबी अछि सेहो बात नहिये अछि। कोरियने ओकरो (माने साहोरक गाछ कें) एते दाबी त छइहे जे ढेंवा कें हम अपना उपर नहि रखसैं देब, तेहेन रहक त छीहे। जुग-जुग सँ जे बात सब, सब कुहुकैत बजैत आबि रहला अछि, से झूठ कैना हैत। कहलो ज जाइते अछि जे अपने कैने गायक घी, अपने कैने महीसिक घी होइते अछि। इ त निर्भर करैत अछि घीक चाहे केनिहार कैहेन अछि। जँ गाइक घी पसंद होइ छथि तँ गाएक घी कें पसिन करता, नइ त महीसिक। ओहो साहोरके गाछ लग पहुँच रबिनाथ भाए बाधे दिस नजरि उठा कें देखलैंन त, सतरंगी रंग कहियौ आ कि धानी रंग, मे बाध नेहाएल-सोनाएल बुझि पड़लैन।

पृष्ठ 2

गामक सालक भरिक बेरा पार, होइत देख रविनाथ भाएक मन खुशी सँ कुदि उठलैन जे साल भरि भोजनक अभाव गाम मे नइ रहैत। किअए ने मन कुमकी पड़ि कुमतैन जे गामक मनुष्य एक दिन टपने उनतीस दिनक माघक परवाहि केने बिना आशंका मे जीबै-ए तेँ गाम साल भरि त बहुत भेल। ओइ हिसाबे केता साल सँ पहिने एकरा बानर एकराइते निकलल, ओकरा सबहक माने बानर सबहक निकलैक कि हिसाब छै से त ओकर सब जानत मुदा रविनाथ भाए देखलैन जे एकटा जुआएल. पकठाएल, अनठाएल मोटगर डटगर बानर गाछी दिस सँ बाध दिस आबि रहल अछि। असकर बानर (एकैटा) कें देखिते रविनाथ भाएक मन हनुमान जी पर चलि गेलैन। ओहो बेचारे असकरे जीवन भरि राक्षस सब कें खेहारैत खेहारैत [illegible] भरि त्रेता जुग रहि गेला। जहिना नारद बाबा स्वर्ग सँ नर्क आ देवलोक सँ मर्त्तलोक सदिकाल टहलैत रहै छेला तहिना रविनाथ भाएक मन एकडायरे बानर जेँका टेकार मनुख पर सेहो गेलैन। असकरक जिनगी, असकरे लोक खेत-पथार, बोन-झार सँ कमा कें लौत आ। के चुल्हि लग बैसि भानस करत। से नइ करत ते खाएत केना आ नइ कमाएत केना। नइ कमाएत त अबैये ले किअए। एबे कौत ते पाछु कें भैंसत जखन लोक खा-पी नेने रहैत। तही बीच देखलैन जे खेत सबहक धान निहारैत ओ एकरबा बानर असकरे एकटा खेतक ऊँचगर आड़ि पर बैसि धान खाए लगल। कनी कालक पछाति बानरक जेर करीब तीस टा पतिआनी लगल बाधक खेत सब मे बैसल। कर्णपुर मे कहियो बानरक बसेरा नहि भेल छल। आइयेँ नहि सब दिन सँ कर्णपुर गाछी-कलम सघन रहल अछि मुदा बानरक बसेरा नहि भेल छल। कहब जे कर्णपुर गामक मौसम बानरक अनुकूल कि नइ अछि सेहो बात नहियेँ अछि। एके इलाका मे किछु गाम ऐहेन अछि, जे गाम मे बानर सब दिन सँ रहल अछि। मुदा कर्णपुर मे बानरक बसेरा कहियो ने भेल छल।

एकाएक कत' सँ एते बानर गाम मे आबि गेल। मन पड़ि गेलैन दू मास पहिलुका बात, जे शिवनाथ भाए कहने रहथि [illegible] जे राति कें एक ट्रक बानर गामक गाछी मे आनि कें छोड़ि देलकै अछि ओइ बानरक झुण्ड बनि, बाध-बोन मे उपद्रव करै-ए।

पृ०-३

एक त बानर चरि-चकिया गाड़ीक अन्तिम प्रोडक्ट छी, माने चौपायासँ आन-आन जानवरक ओहि सबहक अनुभवकेँ नीक बनबैत प्रोडक्ट भेल अछि। जइ दुआरेँ आन-आन चरि-चकिया सँ एहो सुरक्षित त अछिये जे जँ कोनो आड़ि पर बैसि वा खेतमे खाने ना आने अजात खाएत रहत आ जहाँ जँ कहाँ-कहाँ रुपि जाएब ते ओ घुरियो के ने देखत मुदा जँ ओकरा कोनो उपद्रव करबै तखन ओहो तँ राम-लक्ष्मणक महावीर भक्त त्रेता जुग सँ आबि रहल अछि। तइमे हनुमान बाबा सन बाबा छथिये जिनका बिनु घरेबालीक परिवार छनि।

ओना साहोरे गामक निच्चा मे बैसि रविनाथ भाए हिसाब जोड़ि रहल छला जे जहिये हिसाबे बानरक आगमन गाममे भेल अछि तइ हिसाबे साल भरि मे खाएत करैते आ उपद्रव सँ नोकसान (दुइर) करैत करैत। जखन नान्हि-नान्हि टा मुसे-बानरक हिसाबे-उपजाक छअम भाग खा जाइ छै, तखन ओकरो बनाए। तइमे गाय-महींस जेकाँ दूधो ने दूधे देत भैंसा खस्सी-बकरी जेकाँ मांसे देत आ बड़द जेकाँ हरे-गाड़ी खींचत आ ने घोड़ा-हाथी जेकाँ सवारियेक काज करत। पाँच टा नीलगाय किसनपुरक बोनमे अछि सेहो ते गामक खेती-पथारी रोकि देलक; रोकब भेल जे ततेक उपद्रव करए जे किसान खेती करब छोड़ि देलनि, तहिना सिन्नुरपुरा गामक खेती बारह-चौदह टा बोनैया सुगर सेहो दैते अछि। कोनो गरे रविनाथ भाएकेँ हिसाब बैसबे ने करैन। मुदा लगले मन मे उठि गेलैन जे अनेरे कोन जानवर सबहक ओझरी मे ओझरा लगलौं। अपने जिनगी तेहेन पहाड़ बनि गेल अछि जे पाड़ करब पार ने लगि रहल अछि आ गामक बोनक भार हमरा करैते उठत। ओ त उठत ओकरे जे करैते ने जेकर भार छिऐ।

रविनाथ भाए बाबा साहेब भीम रावक अंध भक्त श्रवण कुमार जेकाँ छथि। जहिना भीम सहाएबक जिनगी एकटा खुल्ला दस्तावेज अछि तहिने दस्तावेज बनबै पाछु अपनो लगाएल छथि। ओहुना भीम सहाएबक मन मे के दर्शन, अपन शक्तिके दर्शन, तइ अनुकूल जीवन-धारण केने छेला। संविधान सभा मे भीम सहाएब एक-एक जन कैँ मोहक बोटक पति आनी मे आनि के रखि देलैन। मुदा जीवन त ओइ सँ हजारो कोस दूर अछि, जेकरा पाड़ करब सबकेँ अपन-अपन दायित्व अछि। ओना रंग-रंगक चश्मा सँ भीम सहाएब केँ सेहो देखल जाइ छथि, आ ओइ अनुकूल करैत अपन दिशो निर्धारित कइये लइ छथि। मुदा रविनाथ भाए मे सेबा

पृष्ठ-४

नइ छलनि। माता-पिताकेँ जहिना भार बना श्रवणकुमार तीर्थ यात्रा करै विदा भेला तहिना रविनाथ भाए सेहो अपना कें बुझै छथि।

बाध दिस सँ टहलि (टहैल) केँ रविनाथ भाए दरबज्जा पर पहुँचि देखलनि कि पत्नी (सुचिता) बुझि गेली जे जते काल मे अपने हाथ-पएर (माने रविनाथ भाए) धोता तते काल मे अपनो चाह बनि जाएत। अपने जिम्मा बुझि अपन सीमाक काज मे उचित जुटि गेली। ओना बाध मे देखल बातकेँ मन मे रखने छैन जे गाम मे नव उपद्रव बढ़ि गेल अछि।

दरबज्जा पर रविनाथ भाए केँ बैसिते सुचिता चाह नेने पहुँचली। पाइनिक कोनो रुकावट मन मे उठबे ने केलैन जे पानियोक अनिवार्य (ऐनटैब)। किअए त एते बुझले छनि जे हाथो-पएर धो लइ छथि आ जरूरि होइ पानियो करै पर पीब लइ छथि। हाथ मे चाह लइत अपन शुभ सन्देश पत्नी केँ रविनाथ भाए सुनबे चाहलैन। शुभ संदेश गाम मे बानरक आगमन मन मे रहबे करैन। मुदा मुँह सँ बकार निकलै सँ पहिने तेकर लाज होअए लगलैन। तेकर कारण जे बानर कहि पत्नी केँ कहैत छथिन आ कि हनुमान जी छी। किअए त ई मनमौजी बात अछिए जे जे मन फुड़ए से बाजू। रविनाथ भाएक दशा ओहि मूर्तिकार जेकाँ भ' गेलैन जे जे मूर्तिकार मूर्तिक निर्माणक हाथ रहैत छथि, ओहए हाथ ने मूर्ति निरमि (नैम) निर्माणकर्ता सेहो बनबे-ए। जीह-जाति (जी जाति) रविनाथ भाए बजला- 'आइ नव जीवनक दर्शन भेल।'

धुकद होइत सुचिता कुदकुदेली- 'नव जीवनक दर्शन भेल, मर-र ई कि भेल।' बजइ सँ मन मे ने कोनो जिज्ञासा जगलैन आ ने कोनो विचारक अंश फुटलैन। मुदा गपक सिलसिला केँ सिलसिलेबार आगू बढ़बैत सुचिता बजली- 'से कि?'

रविनाथ भाए बजला- 'पछबारि आगक बाध-बोन दिस टहलै गेल छलौं। बीच बाध मे सारैरक गाछ लगाओल नाढ़ भ' बाध दिस हियासैं लगलौं त संतरंगी रंग मे रँगल बाध बुझि पड़ल। मन हिया-हिया हियासि रहल छलौं कि...।'

कथा - एकटा बानर - पृ० ५

'कि' कहि रविनाथ भाए चुप भ' गेला। जानि कें चुप भेला कि टूटल साइकिल जेँका एकाएक रुकैत बेकार भ' गेलैन, से त रविनाथ भाए जनता। मुदा सुचिता कें बुझि पड़लैन जे शरीरक कोनो असाध्य व्याधि मन मे नेने ते डौंड़ गेलैन। होइते एहिना अछि जे असाध्य रोगक किओ नाम नहि लिअए चाहैत अछि। अहिना पारखी डॉक्टर हड्डी (देहक हड्डी) सँ सड़ल गुड्डल खून वा सड़ल पस (खूने पस बनै-ए) के निकालै ले उपरक खून (चमड़ा कें) तइर दऽ तइर हटबैत हड्डी लग पहुँच ओकरा निकालि स्वस्थ शरीरक निर्माण करैए तहिना सुचिता जानै-कौ-चाहै छेली मुदा पतिक विसमित होइत मन कें उपरक तइर हटबैत बजली- 'ऐना जे बीचे....।'

पत्नीक बात सुनि रविनाथ भाए कें अनासुरती मन मे उठलैन जे नीक हैत पहिने बाघक रंग देखा दिअनि आ पछाति भंग देखा देबैन। रंग-भंगक आ कि रंग मे भंग, आ कि भंग मे रंग, (जेना होइ-ए) से आबन नहि, आबन एतबे बजला- 'ऐबेरक बाघक जे रंग चढ़ल अछि, ओ अगामो कें रंगि रंग चढ़ा देत।'

रविनाथ भाएक विचार सुचिता नीक जेँका नइ बुझली। भइ सँ मन भीतरे-भीतर औनाइ लगलैन। औनाएक कारण भेलैन जे पमरिया तेसर जेकाँ सब मे 'हाँ जी' करब नीक नहि, मुदा। बिनु बुझल बात बजबो केना करब। से लगले मन मे भेलैन जे ऐठाम कि कियो आन अछि जे कोनो बात बजै मे चड़ी-चोखा हएत। बजली- (सुचिता बजली) ऐना जे रंगरेज- अंगरेज जेँका अच्छा बजै- बनबै छी आ आधा छिपाइ जेकाँ छिपा लइ छी, तइ से काज नइ चलत। जखन अपना कें पुरुख बुझै छी त पुरुखपनक बातो रखू।'

पत्नीक बात सुनि रबिनाथ भाएक मन मे भेलैन जे आ, ई कि भ गेलैन। ई त ओहिने भेलैन जे कियो उपन्यास पढ़निहार पहिलुके पृष्ठ पढ़ला पर एते निराश (बिखाद) जाइ छथि जे दोसरे पृष्ठ मे रिजल्ट देखै चाहै छथि, तेहने स' ने ते पत्नियो भ' गेली। भाए जखन पति- पत्निक बीच जिनगी भरिक एकरारनामा भेल अछि तखन जँ कुदादियो मे निमाहैक रस लेब तखन कुदादीक रस भुइला पछातिओ भेटत। रसमय जिनगी

पृ० ६८

काव्यमयी दुनियाँ मे रमणैत-रमकैत चलैं, यैह ने भेल पुरुखपनक जिनगी। तहुठाम जे मरदुआर बनि अपन दरबाजाकेँ मरदुआर बनाएब त साकू-पट्टर केँ चून-तमाकुल, चाह-पान आ भाँग-चौंट पर' ढेर होत। अपन बुढ़िआएल-बुढ़िआएल मन केँ समेटि (समेट) रबिनाथ भाए बजला - 'बाधक सतरंगक रंग केँ अबैन हटबे छी, मेला-ठेला मे ते सतरंगक कि सहस्त्ररंगक सँ रंगल रहै-ए, तइ से अपना दुनू गोरे केँ कौन मतलब?'

पतिक लहकल बात सुचिता नहि बुझि पेली। बुझबो केना करतैथ, जे घाट पर लड़की खेलेनिहार अछि से ने बुझत आ जे से नहि अछि। पतिक पावन घाट मे भसैत सुचिता बजली- 'नीके कीने। कौन-मतलब अछि अनका दुनियाँ सँ, रामचन्द्र भगवान दुइये परानी राजगद्दी से बोन आ बोन से रजगद्दी देखलैन आ कि हमहूँ-अहाँ देखलौ हेन।'

पतिक टौकारा मे सुचिता देह भाँथि गेली। बजली- अनेरे कोनकि दुनियाँदारीक लपौड़ी मे पड़ैत रहब, ने हमरा दोसर पति हएत आ ने अहाँ के दोसर पत्नी। तेँ बीच मे ने दुनू गोरे लड़ैत रहब, झगड़ैत रहब, आ संग मिलि घार-घार चलैत रहब।'

अनुकूल बतावरण देख रबिनाथ भाए बजला- 'बाधक परती पर ठाढ़ भ' बाध हियासैत रही कि एकटा बानर पर नजैर पड़ल। नजैर पड़िते मुड़ी उठा-उठा देखै लगलौं जे एकेटा अछि कि जोड़ो छै।'

बीचे मे सुचिता बजली- 'जोड़ो हेबे करतै। ओहिना नइ ने अखन दिन मे टहटहौआ रौदो रहै-ए आ बरखो होइत रहै-ए, ओहू दुनूक बिआहक लगन छी। ओइ लगन मे दोनो बानर अछूत रहै-ए।'

ओना रबिनाथ भाइक मन मे जगलैन, जे एकटा लगन भेने एकोटा बानर अछूत नइ रहत, तखन ते मनुख केँ ले जे सालो भरि कोट-कचहरी से मंदिर धरि रहै-ए तखन तेँ मनुख मे छूत केना रहै-ए। जाबे छूत नइ रहै-ए ताबे छुटि केना जाइ-ए, ओ त सहजे बात छी। कनी काल चुप रहि रबिनाथ भाए बजला- बड़ी-काल तक अखन ओकरा दिस तकैत रहलौं, तइ बीच ओ बानर गाछी-दिस सँ निकैल बाधक आड़िये-धुड़े टपैत एकटा खेतक उँचका मेड़ पर बैसि धान खाए लगल, ताबे तक तकैत-देखैत रहलौं। ओ बानर असकरे

पृ०- 6

जैँका रहै।'

मुस्की दइत सुचिता बजली- 'अहूँ के ते लोक एकखे बानर कहै-ए।'

पत्नीक मुँह सँ एकार बानर सुनिते रविनाथ भाएक मन हनुमान जी पर टेक गेलैन। ओहो त एकाग्रे रूप, जिनगी भरि धारण केने रहि गेला। मुदा जहिना सइयो कोस उपरका पानिक कैँ धरती पर खसै मे मिनटो नइ लगै-ए तहिना रविनाथ भाएक मन अकास सँ धरती पर उतड़लैन। मन सँ बाधक देखल बानर हटि गेलैन। किअए ते ने आबन असकरे बाध मे छथि, जे बानरक उपद्रवक चिन्ता होएतैन आ ने कतौ आन ठाम। तइ-ठाम जँ पत्नी बजली जे लोक सब एकखा बानर कहै-ए, ते जरूर किछु बात अछि। ओना जँ ओ, माने पत्नी बड़ गिरिथानि देखी- त छुपे रहितैथ, नइ जँ मनुख रहितैथ ते तखने तेकर जबाब दितैथ, से सब किछु ने केलैन, आ हमरा सुनसान मे, माने असकर मे, सोझर सुना रहली अछि। मन कनी- कनी तिरिंग-भिरिंग सन हुअए लगलैन। मुदा लगले मन मे उठलैन जे सब धरवालीक दाब-चाप सब धरवाल सुनिते छथि, तेठाम अपनो किअए ने पत्नीक मुँहक सुनल 'एकखा बानर' हटा ली। मुदा लगले मेलैन जे, जे कोनो बात मुँहे निकलै-ए, ओ त ओकरो मुँहक ने भेल। भ' सकै-ए जे जँ अपनो मने बाजल होथि आ हनुमाने जी जकाँ कोनो ऐहन रूप देखने होथि, हनुमानजीक नाम बदैल बानर कहि देने होथि। किअए त उदाहरणो त- ओहुने ने देल जाइ-ए जे करीबक होय। तेठाम बिनु पत्नीक हनुमान जीक, उदाहरण केना दितैथ तैँ इनके बनरपनह रूप कैँ अनुचित बूझि बानर बजली अछि। पति-पत्नीक बीचक रस्सा-कस्सी मे रहिते रहैत छै। तइ ले अनेरे कतेक समुद्र उपद्रव।

मुस्की मे हुसकी दैत रविनाथ भाए बजला- 'लोक हमरा एकखा बानर किअए कहत?'

सुचिता कैँ जना कानक सुनल सइयो आवाज कान मे झनझना लगलैन जइ सँ, पतिक विचार कैँ रस्ते मे लोकैत बजली- 'घुरोक लोक त कहिते अछि। पुरन बाबा जखन मरल रहैथ, इनकर जे क्रिया-कर्म ओहीत से मने हएत [illegible]।

पुरनबाबाक मृत्युक नाओ सुनिते रविनाथ भाए बीचे मे

टपैक उठला- 'श्राद्ध-कर्म मे किछो नइ पुछलैन. तेकरा अपने अधला कहाँ बुझलौं, काजक भारो माने जस-अजस, त नइ ने पड़ल।'

पतिक विचार सँ खौंझनियाँ कौत सुचिता बजली- अपन दोख अपने मुँहें के कबूल करत-ए जे अहाँ करबै। मुदा अहीं कहू जे जखन पचास घरक दियादी अछि, जइ मे सब कें सब मैथन-शुक मे केश करबै छथि, अहाँ नइ करबै, छिये जेना बदला ओही सब एकरा बानरे कहि दियादियो छोड़ाय लेलैन।

ओना दियादी सुनि रविनाथ भाए मुस मने विचारे लगला जे जे जखन दियादी छोड़ैत जाइ-ए तखन लगौलो त जाइये सकै-ए। तइ बीच ऐतबू ने अछि जे लोक वंशागत माने छथि। मुदा मनुखक वंशक त सब ओना से बात नहि अछि, दियादिक अधिकांशतः युवक बेसी अपन दियादीक नियम मे सुधार केलैन जे वृद्धक मृत्यु स्वाभाविक अछि, जखन कि जवान-जहानक दुखद, तैं स्वाभाविक मृत्यु मे केश कटाएब जरूरी नहि अछि, इमहूँ तसैर ने केलौं, तखन जँ ओ सब माने सब दियाद, एकरा बानर कहै छथि ते अपन मुँह दुइर कहै छथि। कनडुस हँसी रविनाथ भाए बजला- 'जाए दियौ ओ सब घरक दियाद-वाद भेला, गामक समाजक लोक नइ ने कहै-छथि।'

एक त ओहुना पति-पत्नीक बीच बजे-भुकै मे कोनो बाधा-रुकावट नहिये अछि, मुदा तेहाम जँ वेदान्ती बात मे पत्नी चढ़न्त होथि तखन जेहने बोल मुँह सँ निकलै-ए, ओही स्वर मे सुचिता बजली- 'गामक लोक कुहै छिये, दस गामक लोक कहै-ए जे सौंसे गाम मे सब अपन-अपन डेढ़िया पर पसीद आ सैनी गाछ कौं संगे रोपलैन आ अहाँ। कि केलियै।'

रविनाथो भाए कें जेना मुँह मे बड़ी जकैत रहैन, तहिना चोट्टे पत्नी कें कहला- 'अइ दिन करने रही जे पहिने उ फड़िछोर नै हुअए जे पहिनो रहैन परम्परा, छलु कि आइये शुरू भेल।' जखन से नहि भेल, तखन ....।

ओना सुचिता पतिक बिचार सँ कने सहमली। मुदा गामक लोकक बोल तते बेसी कान मे पड़ि गेल छेलैन जे काने झड़झड़ाए य' गेल छलैन। मुदा तइओ होश... कौत बजली- समाजो त समाज छी कि ने, सबकें मिलि कें हुअ...

कथा - एकरंगा बानर - पृष्ठ-५

कि ने ?

अहिना किछु कटे पर सँ कारि किछो बजै-ए तहिना रविनाथ भाए बजला 'ऐ मे दु राय कहाँ अछि। मुदा गाम-समाजक सब एकठाम बैसि वा एकविचारक रास्ता बना चलतह तखनै ने ?'

गामक समाज पर नजैर खिरबैत सुचिता बाजलि - गामक लोक कँ एते कुहरी छै जे सब एकठाम बैसि विचार करतक। किओ आठ बजे तक सुतनिहार अछि त किओ तीन बजे भोरे सँ काज मे लागि जाइ छथि, तखन एकठाम कैना बइस सकैए।

पटनीक विचार मे सह दैत सहीट जगह पर ठाढ़ होइत रविनाथ भाए बजला - 'से त हमहुँ देखै छी जे जे बाप (पिता) भरि दिन गाड़ी-सवारीक भीड़ मे रोड नपैत रहैए (नपइहारि) जेहि बेटा ले कैएने छथि ओइ बेटा कँ ने संग-संग खुआ-पीआ पबै छथि आ ने दिन-दिनक क्रिया-कलाप सँ जुड़ि पबै छथि।'

रविनाथ भाइक प्रश्नक उत्तर अपना मे नहि पेब सुचिता खुरखुर बिलाइक नाच जकाँ नचैत बजली - 'एहिना पुरुख सब, गपो आ काजो मे जिद्द रोपि बलउमकी सब दिन सँ करैत ऐला हैन आ अखनो करै छथि।'

हराएत-भोथिआएत पत्नी कँ देख रविनाथ भाए बजला - 'पहिने सुनियौ, तखन बुझियौ, पछाति विचारियौ, तखन जँ जरूरी बुझि पड़ै त बजियौ। से नइ करब आ केकरो मुँहे सुनब जे कौआ कान नेने पड़ाएल (उड़ल) जाइ-ए, आ अपन कान देखि नइ देखि कौआक पाछु दौड़ब नीक हएत।'

कोनो समस्याक समाधान जखन 'हँ' नइ लग पहुँच जाइ आ सोझमतिया कँ निर्णय करब असान भ' जाइ-ए, असानक माने बिनु सोचल-विचारल, तहिना सुचिता कँ सेहो भेलैन। बजली - अच्छा अहीं कहु जे जखन सौंसे गौंआ अपन डेढ़िया पर पसीद-सैनी रोपलैक आ अहाँ नइ रोपलौं, तखन अहीं कहु जे समाज अहाँ कँ छोड़लक आकि अहीं समाज सँ फुट भेलियै।'

ओना पत्नीक प्रश्न बेतुकार उत्तर रविनाथ भाइक मन मे उठलैन, उठलैन ई जे, जँ पसीद-सैनी रोपने रोग-बियाधि व्यक्तिक संग परिवारो आ परिवारक संग समाजोक मेटा दैत, तखन किअए ने सरकारो डाक्टर-अस्पतालक खर्च आकि योजना से बोनै लागि देत जाइ-ए। मुदा पत्नी कँ अपन अधीनस्थ बुझि विचार

पृ०-१०

रविनाथ बजला – जखन आइक युग, माने एकैसमी शताब्दी मे अपना सब छी, तखन आइक मनुख बनि संसार मे जीवैक अछि, तइ मे जँ रानी सरंगाक ।खिस्सा सुनै मे दिन राति बीता देब, तखन केना दुनियाँ कँ देख पाएब, जइ मे रहैक अछि।'

रविनाथ भाएक विचार सुनि सुचिता सहमली। जहिना सब पत्नी पति लग हारला पछातियो जीतले कुऔ छथि तहिना सुचिता कँ सेहो भेलैन। मुस्की दैत बजली- 'सर्वदिक पुरुख लबर-दौरे रहल अछि।'

ओना रविनाथ भाएक मन मे भीमकायाक विचार जागि गेलैन जे ऐ इतिहास नइ जानत ओ इतिहास रचत केना। मुदा फेर मन उनैट पत्नीक साहचर्य पर पहुँच गेलैन। साहचर्य पर पहुँचते मन धड़ती पर औंघरा गेलैन। बजला— 'केतबो लबड़दौर पुरुख हैत तइओ पुरुखे रहत किने?'

रविनाथ भाएक बात सुनि सुचिता गरमेली नहि मनै-मन मुस्की भरि लेलैन।

समाप्त
७/१२/०१८

कथा- विचारभेद - पृ०-१

बाजिबपुर मिथिलाक प्रमुख गाम सब दिन सँ रहल आ आबनो अछिये। ओना मिथिलाक बीच आइये नहि सब दिन सँ माटि-पाइनक बिलहा बाँट होइत आबि रहल अछि आ आबनो होइते अछि, कहियो कौसीक पानि धकिया कमलाक पानि बढ़ैत रहए तँ कहियो कमला धकिया पाइनिक संग-संग माटियो कें काटि कें बाँटि दइ-ए आ नाम राखि दइ-ए पनिकुहा-कोसिकन्हा। खैर जेते जे अछि से अपन-अपन भोक्ता। मुदा आइ बाजिबपुर गाम मे दुर्गा पुजा आराधनाक बैसार छै तइ मे सामिल हेवा ले गाँआ सब आमंत्रित छथि। जे तीन बजे बैसकाक समयक प्रतीक्षा कइये रहल छथि।

ओना बाजिबपुर गामक अपन इतिहासो छै, आदि सँ भूतक संग वर्तमानो त छइहे। कौसी-कमलाक बीच बसल बाजिबपुर ऊँचरस जमीनक गाम छी। तैँ बाढ़ि सँ प्रभावित आइ धरि नहि भेल अछि, ओना गौरे बर्ख जे पहाड़ी इलाका (नेपाल सँ उत्तर जइ पहाड़-समूह बीचक रकवा हजारो किलोमीटरक बीच अछि) मे हिमक हिमाएल बेसी गलल तइ सँ सेहो बेसी बरखा भेल आ कि हिमगिरी पड़ल, तँ बदवारि सेहो भइये जाइए। जइ सँ मिथिलांचलक बीच बहैत धार सब उछलबो करैत अछि जइ सँ पाइनिक उपद्रव सेहो बढ़िते अछि जइ सँ गामक-गाम केर चरो-चरारी आ खेतो-पथारक घरक संग माटियो नष्ट होइते अछि। से सब समस्या बाजिबपुर कें आबन धरि नहि भोगए पड़ल अछि। तैँ कहब जे सरकारी बैंक सँ ऋण मुक्त बाजिबपुर भ' गेल सेहो बात नहिये अछि। जहिना-दाही-मासीक ऋण भेटै-ए तहिना बाजिबपुर कें साले-साल त नहि मुदा अन्दाज मे रखू जे गंडा मे एक बेर, सौदियाहो (हीन) ऋण भेटिते अछि। आइ सँ बर्खक गाम मिथिलाक बाजिबपुर छथि जेकर [illegible] पुर्वजक आइ सय मे दु सय सौदी त बजरूर देखवो केलैन आ भोगबो न करबे केलैन, तेकर ओरियान माने सौदीक बीच जीवन-धारण केना बचाओल रहत, सेहो नहि केलैन सेहो बात त नहिये अछि मुदा ओ त अविकसित साधनक बीचक जिनगीक

पृ०-२

बीतल बात भेल जे डी०एम०सीए आ कि खिचड़ी खौंकै इस्कूलैक नवतुरिया बच्चा केना बुझत। मुदा जौं ओकरा अपन समाजोक अपन सामाजिक अपना ऐना आ, आ माता-पिता अपन पारिवारिक ऐना (अएना) आगू मे देखबए त किअए ने बुझत।

खेला-पीला पद्धति माने दिनक दू बजे; गोवरधन आए ओछाइन प नहि जा माने आराम कौले, खुशीलाल ऐठाम बिहा होएत पत्नी कैं कहला - 'गाम मे समाजक बैसार दुर्गापूजा ले होएत, से कनी बुझने अबै छी।'

एक त ओहुना जगत्-जननी दुर्गा मान्य छथिये तखन माइक हृदय (मातृत्व माने पत्नीयो) त सहजे मनमस्त त छथिये, तैं पतिक बात सँ पत्नी (लड़ुदाइक) मने-मन मुंगबा मनमे फूटै लगली। तैं बजली किछु ने, आँखिक इशारा सँ एतबे पति (गोवरधन) कैं कहली जे हमरो हिस्सा ने हेतै। जहिना कोनो बच्चा कैं पहिल दिन कोनो नव विद्यालयक प्रवेश दिन खुशनुमा होइ-ए तहिना गाम मे सामाजिक रूप मे जौं कोनो सामुहिक उत्सव होइ-ए त गामो खुशनुमा भऽ जाइ-ए।

खुशीलाल आ गोवरधनक आएक घर अगले-बगल, कहाँ भरिक दूरी, कहब जे एतबो दूर जाइ-ले पति के माने मर्द कैं जाइले पत्नी सँ परमीशन काज पड़ै-ए। ई बात ठीके जे जौं एहनो-एहनो छोट-छीन काज ले पति-पत्नी सँ आ कि पत्नियो पति सँ जेबा ले (सामिल हेबा ले) आगू मे आवेदन दाखिल करत ऊहो नीक बात ऐछ माने मे नहि मेल जे ऐहेन व्यक्ति जीवन मे केना फुरफुरोलक (फुरौल) जाएत। मुदा से बात नहि अछि बात अछि बाजिकपुर मे पूर्ण सामाजिक रूपक बीच संबंध स्थापित धार्मिक परिवेश मे काब। नीक बात, मुदा धार्मिक रूप कि आ कुहेन से आबन नहि, आबन एतबे जे समाज मे धार्मिक अनुष्ठानक बैसार छी।

ओछाइन पर पड़ल गोवरधन कैं देखिते खुशीलाल बैसैत बाजल - 'भैया, आइ दुर्गापूजाक बैसार छी। से चलबइ कि ने।'

सोझ मतिया गोवरधन आए, चौकी पर ठाग मे बैसैत

पृ०-२

बाजला- 'बौआ, अपना दुनू गोरे ते एक जतिया दियादो आ पड़ोसियो ओहिनो, ते तोरे से ने पुछबह।'

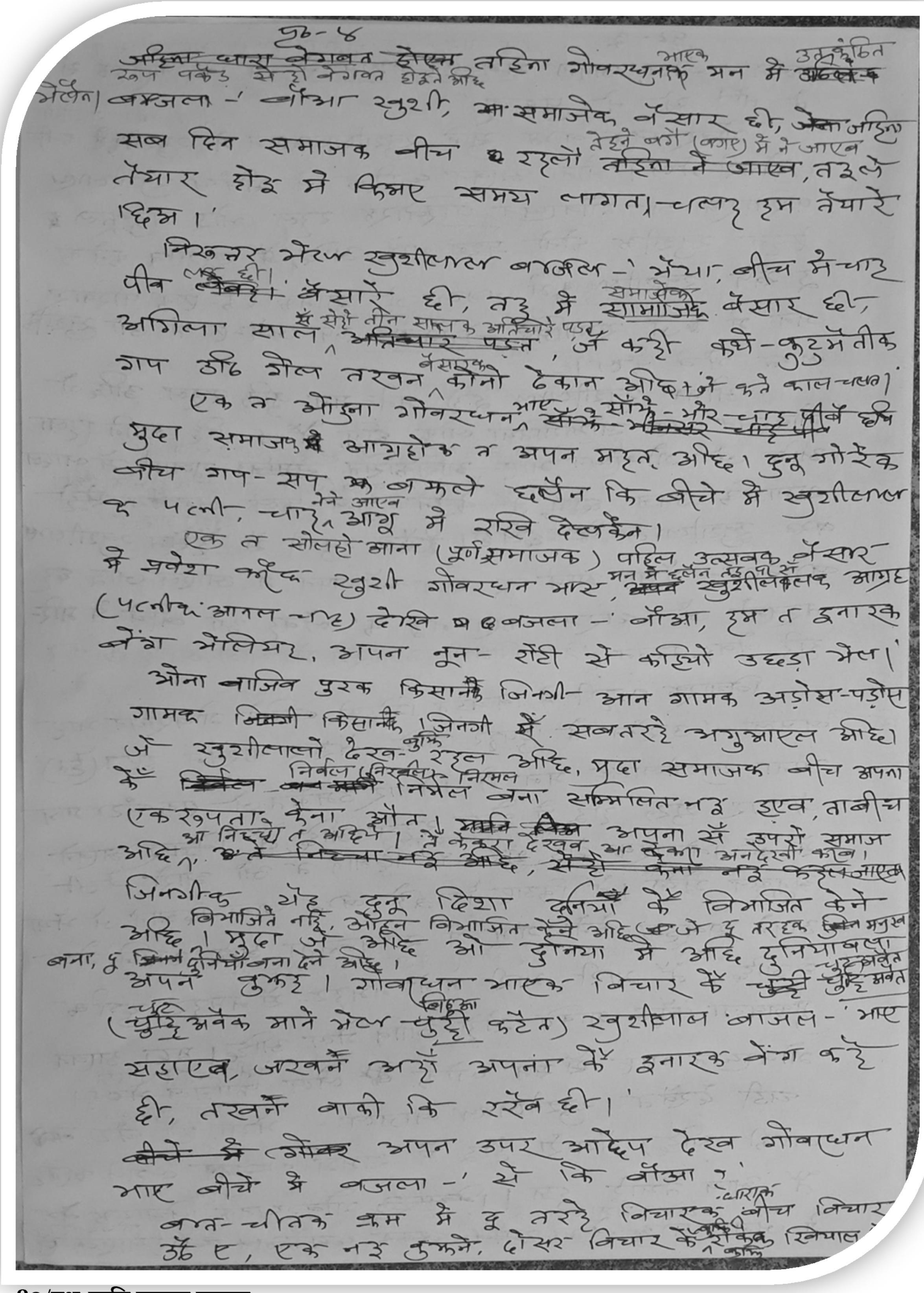
गोवरधन भाएक बात सुनि खुशीलालक मन मे भीतर जमल खुशी मे बढ़ोत्तरी भेल। ओना आवन धारिक जे संबंध खुशीलाल परिवारक आ गोवर्धन भाएक परिवारक रहल ओइ अनुकूल ऐहन खुशीक कोनो मेहत नहि अछि। तैं खुशीक कनेक इ रूप खुशीलालक मनमे जगल जे गामक एक-एक परिवार जन मे जे सामाजिक चेतनशीलताक रूप जगौ-ए त ओ खुशीक बात भैवे कैल।

ओना खुशीलाल इहो मने-मन बुझि रहल अछि जे गोवर्धन भाए सोमभतिया लोक छथि, तैं ई नहि जानि रहला अछि जे एक त अविकासित तैपर उजारो वर्खीक गुलामी सँ लादल समाजक उपज अपना सबहुँ छी तैं केहेन फूल-फल फलाइ-फड़ जोकर छी। खुशी आएल खुशी सँ खुशीलाल बाजल- 'भैया, आब तू सब चौथापन मे आएल जाइ छह तखनो जँ धरम-करम नइ क' लेबह आ बीचे मे मरि-हरि जेबह, तखन इ तँ जिनगी अकारथ मे चलि जेतह कि ने?'

विचारक खिड़कीक विचड़ैत सिहकी लगिते गोवरधन भाए सिसकैत बजला- 'अखैन ते दुपहरे अछि, बैसार करबैन हएत (हैत)।'

ओना खुशीलालक मन मे विचार उमकैत जे एक घंटा मात्र बैसार शुरू होइ मे शेष रहल अछि, तैं गोवर्धन भाएक मनमे जँ विचारक दौड़ शुरू क' दिअनि त ओ आरो बेसी अनुकूल हएत। तैं किअए ने इहो बात जना दिअनि जे भैया अपने सबहक केने गाम मे सम्पन्नता आनियो गेल अछि आ जे विपण्णता अछि ओकरा मेटा सेहो सकै छी, तैं भारी-भारी माने नमहर-सँ नमहर, दुश्‍मनक मुकाबला करैक शकित सेहो आबि गेल अछि। मुदा आवन गोवर्धन भाए सन लोक जेल बेसी सुनैत आएत।

घड़ी देखैत खुशीलाल बाजल- 'भैया, बैसार शुरू होइ मे एके घंटा बाकी अछि। तैयारी होइ मे समय लगबे करत तैं आब तैयारे करू।' गोवरधन भाएक विचारक बेग मे जेना बहैत बेग (धारा) मे साधु सँ जेहेन धकिआल जाइ-ए तेहेन ज्वार



पृष्ठ-४

रूप पकैड़ सेहो बेगवत होइत अछि तहिना गोवर्धन आएक मन मे उत्कुंठित भेलैत। बजला -' बौआ खुशी, समाजेक बैसार छी, ओहिना सब दिन समाजक बीच रहलौं तेहने वर्ग (कगए) मे ने आएब, तइले तैयार होइ मे किछए समय लागत।-चलइ हम तैयारे छिअ।'

निरुत्तर भेल खुशीलाल बाजल -' भैया, बीच मे चारि पीब लगै छी। बैसारे छी, तइ मे समाजेक बैसार छी, अगिला साल सँ सेहो तीन सालक अतिचारे पड़त, जे कही कथे-कुटमैतीक गप ठाढ़ भेल तखन बैसारक कोनो ठेकान अछि। जे कते काल चलत।'

एक त ओहुना गोवर्धन आएक साँझे-भोर-चारि पीबैक छन्हि मुदा समाजक आग्रहो त अपन महत्व अछि। दुनू गोरेक बीच गप-सप चलिते छलैन कि बीचे मे खुशीलालक पत्नी, चारि नेने आएब आगू मे रखि देलखिन।

एक त सोलहो आना (पूर्णसमाजक) पहिल उत्सवक बैसार मे प्रवेश करैत खुशी गोवर्धन भाए, मन मे छलैन तइ पर सँ खुशीलालक आग्रह (पत्नीक आगल चाह) देखि बजला -' बौआ, हम त इनारक बेंग भेलियइ, अपन नून-रोटी से कहियो उघड़ा भेल।'

ओना बाजिब पुरक किसानक जिनगी आन गामक अड़ोस-पड़ोस गामक किसानक जिनगी सँ सबतरहे अगुआएल अछि। जे खुशीलालो देखि-बुझि रहल अछि, मुदा समाजक बीच अपना कैँ निर्वल (निरबल) निरमल निर्मल बना सम्मिलित नइ हएब, ताबीच एकरूपता कैना औत। आ निच्चो त अछिये। तँ केकरा देखब अपना सँ उपरो समाज अछि आ केकरा अनदेखी करब।

जिनगीक येह दुनू दिशा दुनियाँ कैँ विभाजित केने अछि। विभाजितो नहि, ओहुना विभाजित केने अछि जे दु तरहक मनुख बना, दु दुनियाँ बना देने अछि। मुदा जे अछि ओ दुनिया मे अछि दुनियाबला अपन बुझइ। गोवर्धन भाएक विचार कैँ चुट्टि अर्वत (चुट्टि अर्वक माने भेल छिड़िआ कटैत) खुशीलाल बाजल -' भाए सहाएब, जखनेँ अहाँ अपना कैँ इनारक बेंग कहै छी, तखनेँ बाकी कि रहैब छी।'

अपन उपर आक्षेप देखि गोवर्धन भाए बीचे मे बजला -' से कि बौआ?'

बात-चीतक क्रम मे दु तरहे विचारक धाराक बीच विचार ठाढ़ भए, एक नइ बुझने, दोसर विचार कैँ रोकैत खियाल

कथा - विचार भेद - पृ०- ५ - विचारान्तर | खुशीलाल दोहरसंबंत

गोबर्धन भाएक विचार कें स्पष्ट करैत बजलाह
भाए सहाएब, पतालक बेंगक माने भेल (गहराइ सँ) शरीर
मे आ क' दुनियाँ देखब। मुदा...

अपन खुजैत मक्क कें देखिते गोबर्धन भाए बजला- 'बौआ
हमरा बातक कोनो दुख नइ करियह। मौगी-मेहरि (मेहर)
मुँहे सुनि कें सीखिने छी, तें बजा गेल।'

चुस्की लइत खुशीलाल बाजल- 'भाए सहाएब, येह
मौगी सब ने अपन असमिया (माने कमरुपिया) रूप
बना मरद सब कें भेंड़ा-भेंड़ी बना बाघ-बोन मे
अनेर चरै ले छोड़ि दइ-ए।'

गोबर्धन भाए रस कें चोहैत बजला- से सैरपो (सरिपँउ)
हौ खुशीलाल, ह'

गोबर्धन भाएक रसिआएल मन कें असिआइ सँ समटैत खुशीलाल
बाजल- 'भाए सहाएब, एक बेर जे दुनू गोरे निकलब आ
कियो देखलेत तें कहत जे ई दुनू गोरे बुधि-बिचड़ी
क' नेने हैत, तें कनी आगू पाछु भ' कें बढ़ा।'

सैह भेल, गोबर्धन भाए, बैसार स्थल दिस आगू बढ़ला।
गोबर्धन भाए कें लग सँ हटिते खुशीलालक मन आजुक
समाज सँ ल' क' आदिक समाज (अपन गामक) धाड़ि छोड़
गेल। दुर्गापूजा गाम-गाम होइते अछि, त बाजिबपुर
मे सेहो हैत। गाम मे धार्मिक नींव पर पूजा हएत, नीक
बात। अखन बाजिबपुर मे अनेको धर्म स्थल अछिये।
कतौ धुजा फहरा, कतौ मुर्तिक रूप मे। कतौ गाछ-बिरीछ मे
फाटल-पुरान कपड़ा बान्हि, त कतौ बिनु धुजेक,
कोनो-कोनो ओहनो स्थानो अछिये, जेहाम लोक (समाजक)
एक ठाम बैसि रामोलीला आ कृष्णो लीला (रास) देखते
आबि रहल अछि। घरमक पोथी सँ सेहो सब घर मे
रहितो सब रंग सेहो अछिये। एके नाहि अनेको रंगक (साम्प्रदायिक रंग चढ़ल) अछि।
कोनो घर गीता-भागवत सँ सजल अछि, त कोनो घर
कबीर-मंसूर आ बीजक सँ सजल अछि। तहिना अनेको
रंगक विचार कियो बुद्धदेवक हृदय सँ जुड़ल तँ कियो
जैन महावीर सँ जुड़ल। त कियो मार्क्स-लेनिन
सँ जुड़ल त कियो हिटलर-मुसोलिनी सँ जुड़ल सेहो
अछिये। आइ सँ बरखे पूर्व अहिया

सँ गामक वास शुरू भेल, तउ सँ पहिने सँ अनेको रंगक धर्मो आ धार्मिक सम्प्रदायो चलिते आबि रहल अछि। जहिना सिद्ध-सम्प्रदायक सिद्धक भ्रमण सँ प्रभाव पड़ल, तहिना नाथ सम्प्रदायक प्रभाव नइ पड़ल सेहो बात नहिये अछि। तउ मे जखन बाजिदपुर कँ बसब सइये-डेढ़ सय वर्ख माने चारिये पीढ़ी बीतल छल कि एक संग कबीर तुलसी, सूरदास इत्यादि-इत्यादि अनेको मध्यमान्य प्रभाव गाम-गाम सेहो होइते केलैन। जेकर असरि (असैर) बाजिदपुर मे नइ भेल, सेहो केना नइ कहल जाएत। मुदा सब कथुक बावजूदो आबनो (एक सूत्रवत्) जीवंतता समाजक नइ अछि सेहो केना नइ कहल जाएत। आगि लगला पर (गाम मे कोनो घर मे) जाति-धर्म सब एकबद्ध भ' जाइ-ए, तेँ कि बिआह-दानक गोत्र-सूत्र बउबद्ध नइ भौ-ए सेहो केना नइ कहल जाएत। आब कहब जे रस्सा-कस्सी आ डोरा-डोरी छइ-ए केना एकबद्ध हएत। समाजकेँ ने अपन शक्तिक आभास भ' रहल छनि आ ने अपन जिनगी समतल बनबैक दिशा। समाज माने मनुष्य ओहन शक्तिवान अछि जे अपना कँ उद्धारो क' सकै-ए आ अत्याचारो त करिते अछि।

आन गाम जेकाँ बाजिदपुर मे सामाजिक बैसारक रूप बदलल-बदलल सन छल। आन गाम मे बैसारे समय मे माने सामाजिक बैसारक समय, मे कियो ठेका खोलैत सूलबाहिक बहन्ना बनौ नइ उपस्थित हैता त कियो महीस कँ पाल खुआबै विदा होइ छथि। एते सचेत सतरकी बाजिदपुर बला सब मे छलनिहेँ। जे समाजकेँ सिर प चढ़बैत सामाजिक संकल्पित रूप कँ महत दइते अछि।

ओना आइ सँ चारि साल पूर्व गामक मे कियो दुर्गापूजाक चर्चो गपे-सप मे उठौलैन जे गाम मे पूजा हुअए। जइ गाम मे मास-मास दिन रामलीलाक भार गौआ उठा साले-साल देखै छथि, जइ गाम मे दर्जनो अष्टयाम कीर्तन चौबीस घंटा (दिन-रातिक) होइए जइ गाम मे एक पनरैहिया माने एक पक्ष भागवत कथा होइ-ए

पृष्ठ 6

तइ गाम मे दुर्गा पूजा कोन असंभव भेल। ओहुना त दसमी मे माने शारदीय नवरात्रा मे घरे-घर पूजा पाठ लोक करिते छथि। भेल त एतबे ने जे ओ सम्मिलित रूप मे सामूहिक रूप मे उभरए।

सम्पन्न गाम बाजितपुर ऐ दुआरे कहल जाएत अछि, जे चौबगली गाम सँ सब तरहेँ, जहिना किसानी जिनगी मे तहिना बौद्धिक जिनगी मे सेहो अगुआएल अछिये। जे बात बाजितपुर बला नीक जकाँ बुझै छथि। भेल त नान्हि टा हिसाब गामक अगुआएल-पछुआएलक अछि जे कते जमीन केहेन उपजा दइबला अछि आ ओकर रकबा कते अछि। तहिना गाम मे पढ़ल-लिखल माने बौद्धिक हिसाब सँ कते कोन गाम मे अछि। छत्तीसो वर्ण सँ भरल जाइतिक बास भूमि छी बाजितपुर। कहब जे आबन धरि लोक छत्तीसे वर्णन चर्चा करै छथि तेहम तइ सँ बेसी जाति केना फड़ल। जइ बिचार मे छत्तीसे वर्ण फड़ल ओ बहिला भ' गेल, किअए त केना फड़ैए से जँ 'सवा लाखे..' पिढ़ि के कुँ विभाजन रेखा दितथि त दोसर रंग होइत। खैर जे अछि।

बाजितपुर मे हिन्दुओ छथि, मुसलमानो छथि, तइ संग एहनो त छथिये जे दुनू दिस छथि। आठ सय बरखक नमहर जिनगी मे गाम अपनो चेहरा देख रहल अछि आ आनो-आन गामक सेहो देखैत रहल अछि। अनेक जाति, अनेक धर्म, अनेक विचार, अनेक रास्ता रहितो बिचारपुर मे जाति-धर्मक कहियो तना-तनी नइ भेल। नइ होइक मूल कारण भेल अछि समाजक बीच बेवहारिक जिनगीक संबंध।

आइ धरि जते लोक, नाच-तमाशा छोड़ि, एकठाम एकत्रित भ' कोनो काजे बैसला, तते आइ धरिक सामाजिक बैसार मे नइ भेल छल। तँ कहब जे बैसार भेबे ने केल सेहो बात नहिये अछि। कहियो एगला बाढ़िक पानिक आशा सँ धारक मुँह बन्हैक बैसार होइ-छल, त कहियो घरक आपसी झगड़ाक। ओना टुकड़ा-टुकड़ी अनेको देवस्थानक पूजो-पाठ बैसार सेहो होइते छल। आबि रहल अछि।

तीन-चारि साल सँ दुर्गापूजाक गप-सपक चालि अबैत बिचार समाजक परिवेश कँ एक मुहरी बनाइये देने छल, तँ बैसार मे सहमत बनै मे देरी नहिये लगत, ई आशा सब समाजदार लोकक मन मे छलनिहेँ।

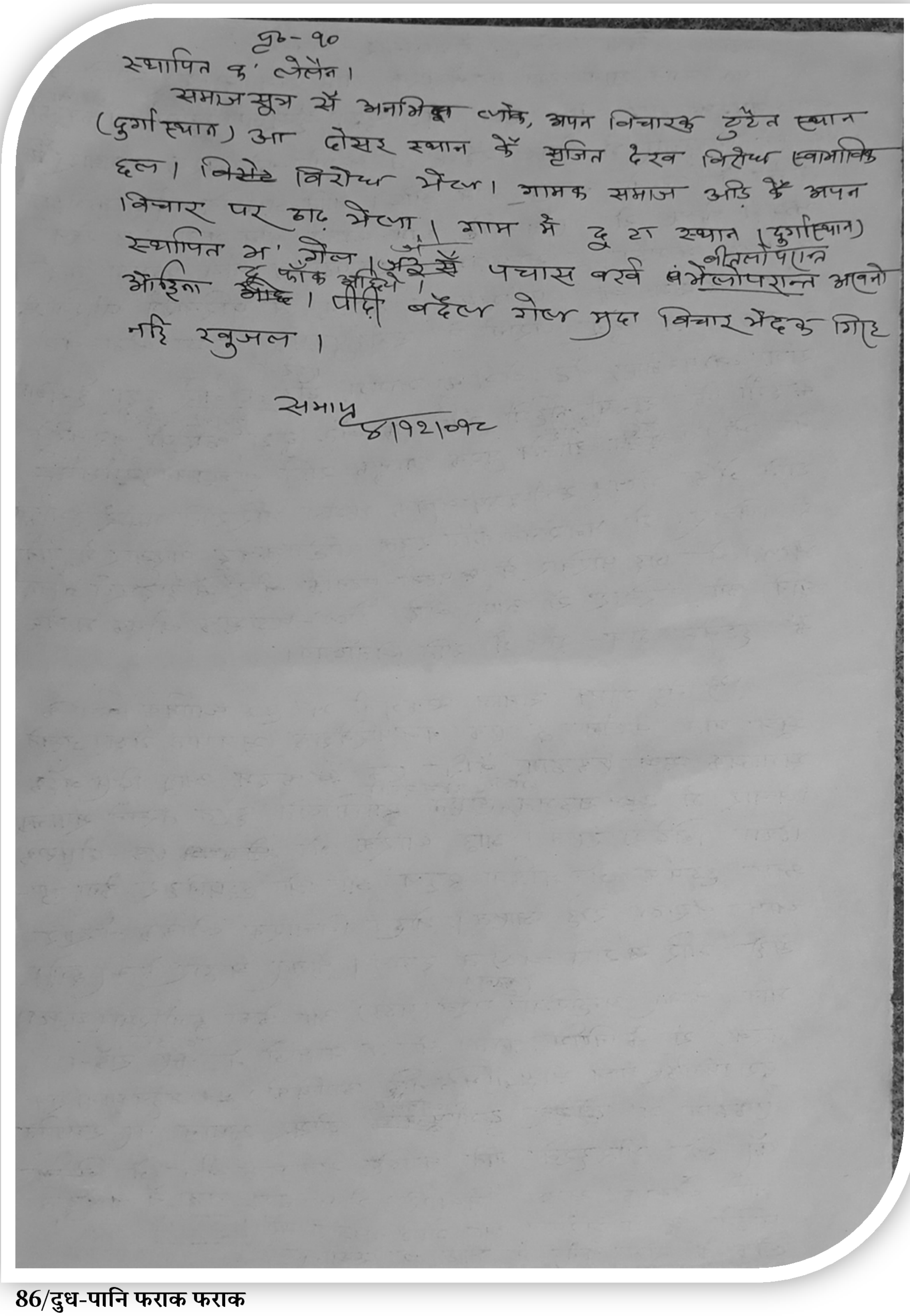
पृ०-७

संयोग अछि जे सब टोलक लोक माने सब जाइतिक लोक एकठाम बैसि समाज मे सामूहिक सामाजिक उत्सवक विचार भवा।
वाता- वरण मे गंभीरता छलैक। गंभीरताक कारण भेल जे सबकेँ बैसारक विचार बुझल छलैन, जइ सँ सब किछु मे किछु विचार कइये लेने छल। जे सँ नइ रहैत त अनेरे ने कियो पुछितथि जे, कि भेलै, फल्लाँठाम। त कियो पुछैत दनी ठोंड़ा के कहियौ। से सब भातक धारि नइ छल। मुदा लोक पानि जेकाँ थोड़े अछि जे पोखैर वा इनार मे सेंच-मेंच दबकल रहैत। मनुख त मनुख छी ओ ते धारक धारा जेकाँ चलैवला छी। ओ कर मनु थोड़े बैइसैवला अछि।
एक गोटे बजला -' भाए, ऐबेर अल्लू खेती मे पौरुका से दोबर खरचा भेल।'
अल्लू खेतीक नाओं सुनिते दोसर गोटे बाजल-' छोड़ू अल्लू- तल्लुक खेती, पौरुखा सौंसे चौमास अल्लू रोपलौं तेहेन पल्ला मारलक जे जे खाद्या भेल से गेबे केलौं जे सालभरि सँ पोसि कें जइ खेत कें रखने छलौं ओ सेहो गेल आ उपजो त गेबे केल।
तेसर बाजल-' हौ जहिना कुआँ छहक जे हम सब जुएक (मौसमक) पाशा पर बैसल छी, तखन हार कि जीत हेबे करत। तइ लें कनबे करइ ते के सुनतइ। सब जनितो छथि आ कहैतो करिते छथि जे-' Indian Agriculture is a gamble of the monsoon. बैसारक शुरुहक प्रश्न यैह छल जे दुर्गापूजा गाम मे हुअए नइ जे विचार करू।
' कियो थोपड़ी बजा त कियो हाथ उठा त कियो मुँह सँ हूँहकारी भरि हुअए। बजला जे हुअ जरूर।
गामक मध्य मे इस्कूलक प्रांगण मे पूजा स्थल सेहो निर्धारित भेल।
सात दिन आसिनक अन्हार बीति चुकल छल। आठ दिन कलशस्थापनक दिन बाकी छला तें काल्हिये माटि लेबाक दिन तय भेल। दिन नेरागनक विचार (माटि लइक) हटि गेल किअए त आठ दिनक बीच दुर्गापूजा सन पर्व कें स्थापित करब अछि। कोसी धारक इमरजेंसी पुल जेकाँ बनाबै हाथ लागि गेल।
एकमुहरी उत्साहक माहौल मे बैसार भेल। टुकड़ी बैसारक उसार भेला पद्धति एक टोलक लोक दोसर टोलक लोकक बीच टुकड़ा-टकड़ी बनि- बनि अपन-अपन विचार उगलै लगला। खैर जे भेल, मुदा गामक एकठाम एकटा निर्णय

कथा - विचार भेद - विचारान्तर - पृ०-८

आजुक राति, माने दुर्गापूजा भैसाखक राति, सन सुन्दर राति कहियो बाजिदपुरक नहि भेल हएत। बेंट कुड़ा हँसुआ-खुरपी जेँका कोनो कोनोघरक पघुआर मे फेकल रहै-ए त कोनो कोनचरक अगवास मे तहिना ने अपनो सबहक गाम छैक। जाति-जातिक बीच झगड़ा, झगड़ा किअए से अबत नहि, धर्म-धर्मक बीच झगड़ा, उ टोल-उटोलक झगड़ा, ई सम्प्रदाय उ सम्प्रदायक बीच झगड़ा, तहूँ संग पड़ोसिया बीच परोसपतक झगड़ा, त परिवारोमे पारिवारिक झगड़ा, त दुनू परानी मे स्त्री-पुरुषक झगड़ा, बेटा-बेटी संग बाप-माए, बेटा-बेटीक झगड़ा, एकरे ने नरक नोरि कुड़ा हँसुआ कहियो कि खुरपी कहियो, चाहे कि बेंट कुड़ा हँसुआ-खुरपी कहियो, बराबरिये ने भेल। मुद्दा से नहि बाजिद पुरक आजुक राति वृन्दावनक रासिआएल राति जेँका भेल, स्त्री-पुरुष बीचक झगड़ा, भरि राति दुर्गापूजा क विचार मे मनरंजन करैत रहल तहिना एकबहु परिवार मे, जेकर माने भेल जे जइ परिवार मे पत्नी-पत्नीक बीच सौहार्दपूर्ण जीवन छनि, ओ परिवार सँ आगू बढ़ि टोल-पड़ोसक बीचक मतभेद कैँ हटबैत गप-सप मे राति बितौलनि।

जेहू गामक समाज एकजुटी भ' धार्मिक क्रियाक सूत्र-पात केलैन, ई एक नव परिवेशक सूत्रपात भेल। जखने समाजक सब एकठाम बैसि एक कदम आगू दिस बढ़ैक विचार मे सहमत भेला, पद्धति सम्मिलित हएत तखने समाजक दिशा निर्देश हएत। आइ धरिक जे एक-दोसरक आम उड़पैद जे प्रक्रिया रहल आ ओ उड़पनिहार कैना चुप-चाप बैसल रहि जाएत। ओइन विचारक लोकक बैसार सेहो भरि राति चलैत रहल। कैक अन्हार कैक इजोत माने कैक अन्हरिया (कृष्ण) परख (पक्ष) आ कैकर इजोरिया (शुक्ल) परख, से कै निर्णय करत। ओ त समाजे ने करए सकै-ए। पुरानपंथीक मात्र साम्प्रदायिके नहि आर्थिको) मइनधाना सब एकठाम भ' दुर्गा बनबैक दोसर स्थान पर स्थापित कौ लै भोरहरबे, माने काल्हि समाजक बीच जे माटि लेबाक समय निर्धारित भेल छल, तइ सँ बहुत पहिने दु टा मइंच आ गोटि-पड़रा मारों लोक कैँ संग कैने, मे माटि ल' स्थान



पृ०-९०

स्थापित क' लेलैन।

समाजसूत्र सँ अनभिज्ञ लोक, अपन विचारकेँ दुहैत स्थान (दुर्गास्थान) आ दोसर स्थान कैँ सृजित देख विरोध स्वाभाविक छल। विरोध भैल। गामक समाज अड़ि कैँ अपन विचार पर ठाढ़ भैला। गाम मे दु टा स्थान (दुर्गास्थान) स्थापित भ' गेल। आइ सँ पचास वर्ष बीतलोपरान्त अखनो ओहिना दू फाँक अछि। पीढ़ी बदैलल गेल मुदा विचार मैदक गिरह नहि खुजल।

समाप्त
४।१२।०१८

…था – अनचोकक अन्हार – पृ०-1

दु बजे राति, भोरक आगमन नइ भेल छल। जीबू काका
ओछाइन सँ उठि लोटा-डोल नेने चापाकल (कल) पर पहुँच
छ बेर हेन्डिल चलौलनि। कि बिजली गुम भ' गेल। आदोक
अन्हरिया पक्षक अन्हारक चतुर्दशीक अन्हराएल-कजराएल अन्हार,
एक हाथ हेन्डिल पर रहनि से त' जीबू काका अनुमान सँ बुझैत छला
जे चलौने (हाथ-चलौने) कल सँ पानि निकलत मुदा
दोसर हाथ जे खाली रहनि से हेरा गेलनि, हेरा ई गेलनि
जे इन्च-इन्च (इंच-इंच) नइ सुझने दोसर हाथो कतऽ छि हएत।
ने डोल देखै दियै आ ने लोटा, जँ टपा-टोइया क'
ऽ' माने टयोरि कै, जँ ताकियो लेब तइयो ऐ समय सँ आगू केना बढ़बा
रस्तो अन्हार सँ अन्हरा गेल अछि। जइ सँ जैनो कारण
रस्ता बाट मे रोड़ा बनि ठाढ़ अछि, कतौ ने कतौ ठेस लगबे
कात आ ओंघरा कैँ खसबे करत। तेँ तेहेन अन्हार मे
पड़ि गेल छी जे किछो खोजौं पुछइ नइ कएँ ओत।

दु बजे राति मे जीबू काका कैँ ओछाइन पर सँ उठैक
कारण अपन सोचक अनुकूल छनि। अपना ढंगे सोचै छथि
अपना हाथे-पएरे कौत चलैत जिनगी बितबै छथि, जइ सँ दोसराक
खुशामदे किए करए पड़ए (अछि)। बिसवासक संग जीबैत रहल छथि,
देशक स्वतंत्र नागरिक कहल जाइ-ए। जेकरा राजनीतिक भाषा मे गद्दीक सुख कहल जाइ-ए। जीबू काका
स्पष्ट सोच छनि जे खान-पानक जे नियम-कायदा
अछि ओ अपना जगह पर भलेँ नीक हुअए मुदा ओकर
नीकपन सबठाम ठाज देत सेहो बात नहियेँ अछि। जखन
गाड़ी-सवारी सँ चलैक चलैन जोड़ पकड़ि लेलक अछि
तइ सेहो हम हटल छी, से त' नहि छी। गाड़ी छी
कतौ, टायर-ट्यूब फुफाटत त' कतौ आगू-पाछुक सवारी
(गाड़ी) से टकराएत, बत कतौ कौनो
खाधियो मे खसि कैँ उनैट जाएत

सं- २

तेनाम अपन निर्मित कायाक जिनगीक कि सफल भेल।

अपन ... देखन भेल? मुदा भरल के? तेँ ऐहेन रस्ता पकड़ि चलब सोचहो आना बिसवास भरिये अछि जइ से इतौ ने करौ ... औँचराएब औहिये। ताहिना योग तंत्र कैँ सेहो बुझैँ छथि, जे आदमी भरि दिन चिमनी पर पजेबा अथवा खेत मे कोदारि पाड़िक, औत आ तरपन जँ मौ व्यायम कौँ लगत तखन देहक दशा कि रहत? सेहो ओहरू ने बुझत जे ओहन अछि। तेँ अइ क्रिया के सहस्र (शतायु) सौ वर्ष (सय बरिस) जीवैक जिनगी किआ नइ बुझैत छथि। तेँ ई कहब जे चारबाक जौं कौ बृहस्पति सन गुरु चार्वाक कैँ ... विचार रहैन जे ऐहेन विचार छनि तेहने विचार जीबूओ करैत छथि... जे जइ समाज मे श्रमशक्ति चुरा गेल अछि श्रम चोरक बोझ्य भऽ गेल अछि, तेहेन जइ सँ अछि तइठाम कैँ जते गुणा अपन शक्ति कैँ संयोगव (संजोगव) ओतेक गुणा वृद्धि जिनगी मे भेल। जेठाम जिनगी शब्द कितावक बात भऽ गेल अछि, वास्तविक जिनगी उतड़ि कैँ (देशक हिसाबे माने आयुक गणना हिसाब सँ) पचास-साठि वर्ष पर अँटकल अछि आ सय वर्खक धुनि सँ धुनियौँ चुन चोन दी। ओहिना नइ ने विद्यापति खिसिया कैँ कहलनि जे 'आधा जीवन हम नीन गमाओल।' ऐठाम आबि जीबू कका अपना मनक विचारकेँ बाट पकड़ि चौबीस घंटाक दिन-राति कैँ सोलह सँ अठारह घंटाक अपन दिनचर्याक कौन्ह गड़ि अपन जिनगीक गाड़ी कैँ रथ कैँ आगू मुँहे ससारि रहल अछि। मने-मन मे एते त विसवास बनले छनि जे कर्मक दुनि छी, जे जते काज से तते पाओत आ जे जेहेन काज से तेहेन पौत। अहीँ दिनचर्याक ...

पृ०- २

कल पर पानियोक आनै आ मुँहो- हाथ धोएक खियाल सँ जीवू काका गेल छैला। दरबज्जा, जे नाम जीवूकाका रहै छथि तऽठाम से सए गज माने दू सय हाथक दूरी पर कल छनि।

करीब जे चार्वाक सन जखन जीवू काका छथि तखन ऐहेन नेगरकट बिजली पर सोहो आना आश्रित किअए भेला? जइसँ ऐहेन फेर मे पड़ला। फेर मे पड़ैक कारण भेलनि एक दिस बिजलीक इजोत मे आँखि चौन्हिया गेलनि आ दोसर भकुआएल मने ओछाइन पर सँ उठले रहथि। ओना बिजली पर आश्रितो छथि आ नहियो छथि। बिजलीक अतिरिक्त सेहो अपन इजोतक ओरियान केने छथि, मुदा से अनचोके मे छुटि गेलनि। फेर करीब जे जखन जीवू काका अपन जिनगी अपना हाथ मे नेने चलै छथि तखन ओछाइन पर सँ उठला पछाति भकुआएल किअए रहला? ओना जीवू काका ऐ बात कें नीक जकाँ बुझै छथि जे लोक भकुआइ-ए नीन टुटला पछाति। 'नीनो त नीन छी, कोनो पकला पछाति टुटै ए त कोनो आम जकाँ कोनाएल- डम्हाइले मे टुटै ए तँ कोनो सोलहनी काँचे मे टुटि जाइ-ए। जे जते काँच मे टुटल ओ ओते भूत बनि लगि भकुआने रहत किने। मुदा से जीवू काका कें नहि भेलनि। जीवू काका जनै छथि जे रावणी जिनगीक सहोदरे भाए कुम्भकर्ण सेहो छी, बिना ओकरा मारने रावणी जिनगी रामी जिनगी नइ बनत, मुदा ओकरा जानो सँ मारि देने तँ काजो नहियेँ चलत तेँ ओकरा अधमरू करि कें छोड़ि दइक अछि, से केने छथि।

एक हाथे कलक हेन्डिल पकड़ने, दोसर खाली हाथ अन्हार मे बौआएत, जीवू काकाक मनो मे जेना अनचोके मे कजरिआएल इजोत छिटकलनि। कारिख से काजर बनै ए, आ काजर कें लोक आँखि मे ए दुआरे लगबै-ए जे आँखि मे एक चमक सेहो होइ-ए। जइ से जेकर पनीला सँ आँखिक चमकी जगै-ए, तेहना

पृ० ४

काका कें कुअरिआएल अन्हार में सेंहो भेलनि।

जीबू काकाकें विचार में कुअरिआएल चमकी जगिते जेना भक्क खुजलनि। नइ सँ चलैं जोंका रस्ता फड़िच बुझि पड़ै लगलनि। अपन कोठरी में आबि अपन भोरक क्रिया-कलाप में लागि गेला।

पौने तीन बजि गेल, भोरक चौँही जगि गेल। अपन मरीस कल्हि साँझे सँ उठि गेल छल, मुदा अबैत अन्हार माने राति, कें देख मरीस कें पाल दिअबै नइ गेलौं। मन मे-बिचारि लेलौं जे जखने भोरक आगमन हएत तखने बिदा हएब। सैह केलौं। मरीस कें छोड़ लगा पीठ प चढ़ि ढेहैत-ढेहैत चलैत बिदा भेलौं। जीबू काका जगले छथि, कोठरी सँ निकलि रस्ता प आबि कहलनि-' हमरे जेकाँ तोरो कपार छह।'

जीबू काका बेसी काल चिक्कारी (अलंकारिक भाषा) मे बजै छथि, तैं धाँए दे' किछु ने बजलौं। एतबे कहलनि-' काका जँ अहाँ सन कपार हमरो रहैत तँ अहीं जेकाँ ने हमहू अपन ओछाइन पर बैसल (बैसल) रहितौं।'

जीबू काका अपन विचार कें समटैत बजला-' आइये रातिक बात सुनबै चाहलियइ।' चाह लिअ।

आब कहू जे ऐहन होए जे काज छोड़ि गप-सप सुनितौं, मुदा से जीबू काकाकें कहबनि कैना। एतबे कहलएनि-' काका, अपना नाचे सब नचबो करै-ए आ अपने देखबो करै-ए।'

नहला प दहला फेकैत जीबू काका बजला-' सबके सब नचबो करै-ए आ सबकें सब देखबो करिते अछि।'

कहलिएनि-' पाल खुआ अबै छी तखन निचेन सँ सब गप करब। आबए जाए दिअ।'

गोष्ठी- १६-८-०१८

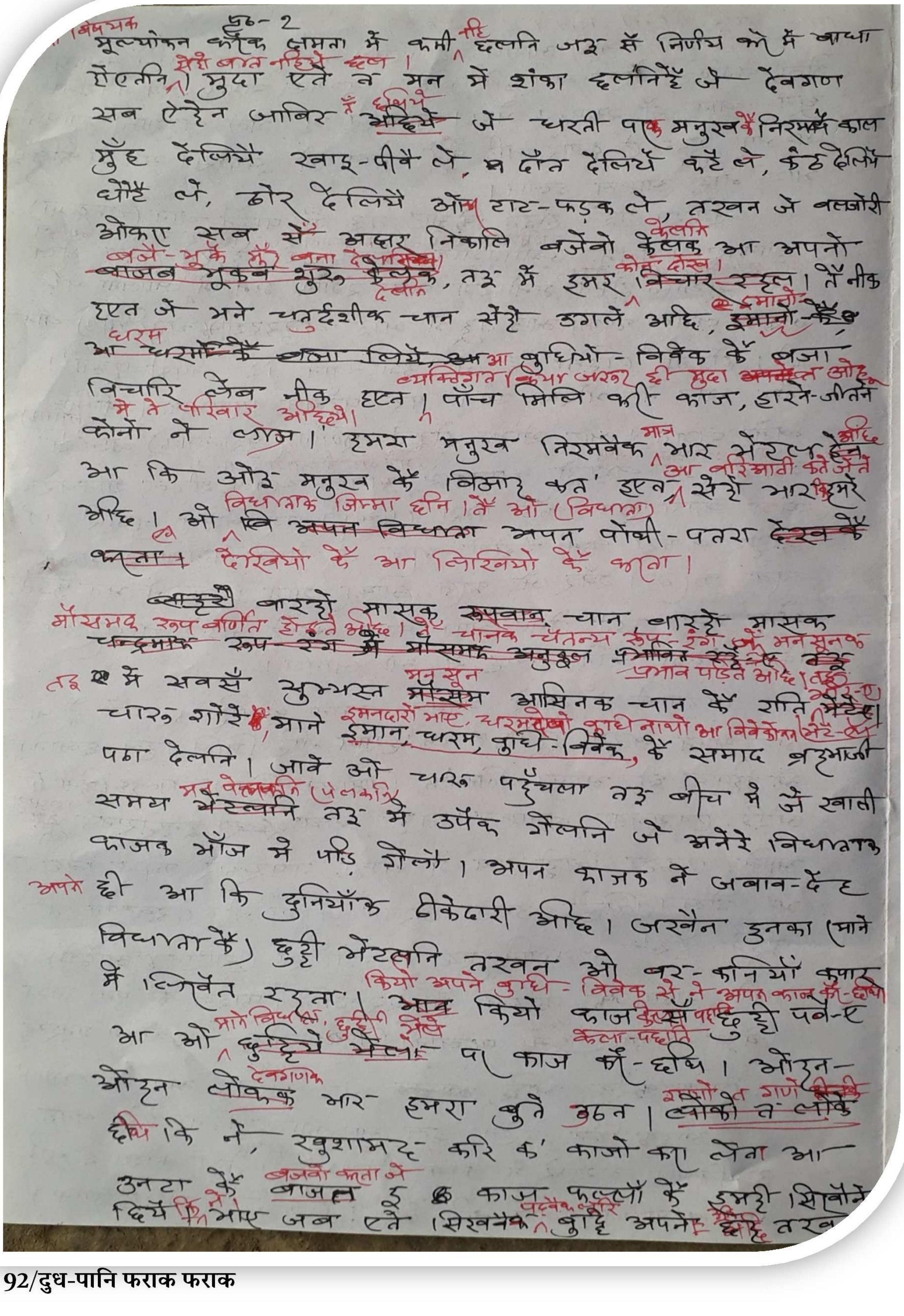
कथा – हारि केना मानव । पृ० – 9

शारदीय नवरात्रा (आसीनक दुर्गापूजा) चारि दिन पहिने समाप्त भ' गेल, काल्हि पुरनिमा (पुर्णिमा) छी। सुव्यस्त समय रहने नवरात्रा धुम-धाम सँ सम्पन्न भेल। सुर्यास्त भ' गेल ब्रह्माजी गायित्री-जप शुरू ऐ दुआरे नहि कैने छेला जे इन्द्रासन सन सँ कौलुका भारक नहि आएल छलनि।

सुर्यास्त होइते, होइते किअए तइ सँ पहिने चान (चन्द्रमा) आकाश मे बिन ज्योतियोक उगल छल। ई, एते जरूर भेल जे सुर्यास्त होएते मनोकरंग आ रंगोक मन मे लालिमा बढ़ जरूर लगल छलनि। तइ मे आइ चतुरदशीक (चतुर्दशीक) चान छी। होइतो एहिना छै जे 'उगै चान कि लपकी पुआ'। यैह चान नै ओरक सीमा पर पहुँचते पुर्णिमाक (पुर्णिमाक) बनै लगत, आ साँझ होइते पुर्णिमाक (पुरनिमाक) चान भ' आएत। जे बारहो चान सँ, धवल-चवल, शीतल, शीतचरक संग कोजगराक कौड़ी पाशा (पचीसी) पर बैसल जुआरी सभकेँ सेहो केकरो हँसेबो आत त केकरो कनेबो त जरूर करबे आत। खैर जे आत, ओकर शति छियै जे मन फुड़ते, जेना मन फुड़तै तेना अपन आत। नड़ंटे नाचइ आ कि नांङग बनि नाचइ, से ओ जानय।

ब्रह्माजी ऐ दुआरे गायित्री बंधन नहि कए पबै छेला जे अपन ब्रह्म मुहूर्तक हिसाब नहि मिलि रहल छलनि। ओ हिसाब छी, आजुक जिनगीक विसर्जन क्रियाक काल्हुक क्रिया मे जोड़ि एकसूत्रता बनाएब। तही बीच इन्द्रासनक दूत आबि, एकटा चिट्ठी हाथ मे थम्हा, नमस्कार कैंत विदा भ' गेल। चिट्ठी उनटा जखन ब्रह्मा जी देखलनि त पहिने हँसी लगलनि मुदा राज्यादेश (शासनक आदेश) मानि राजपत्रक फाइल मे रखलनि। फाइल कैं पुनः उनटा चिट्ठी निकालि पुनः पढ़लनि। लिखल अछि – 'ए ओहन मनुखक निर्माण करैक अछि, जे काल्हुक अनुकूल हुअए।'

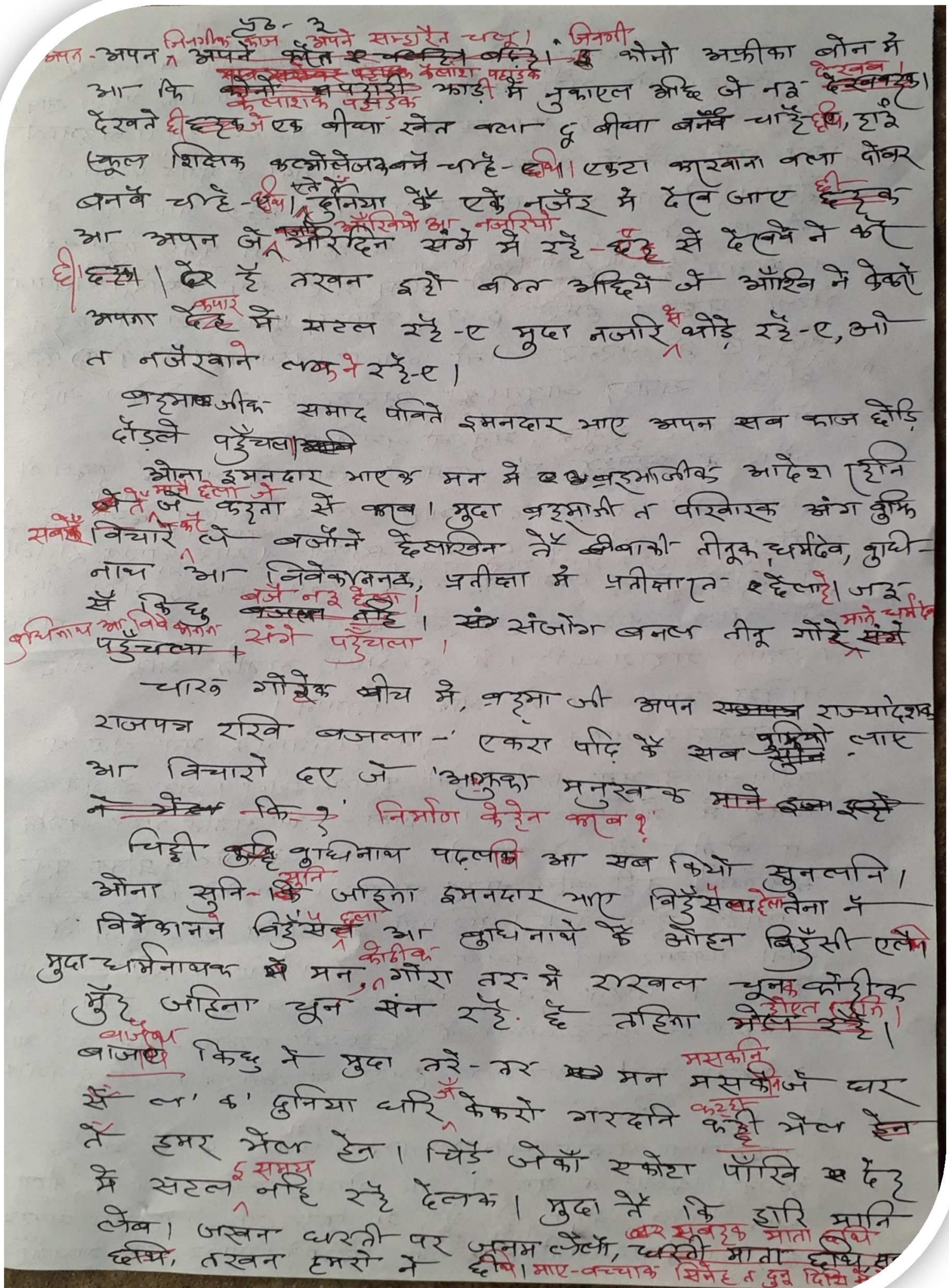
आइक दिन केहेन छल आ काल्हि दिन केहेन बनत ई विचार असकरे मैं काब नीक नहि। तेकर कारण ई नहि जे ब्रह्माजी विवेकवान् नहि छेला। ठीक-ठीक (सोलह आना)



पृ०-2

मूल्यांकन करबाक क्षमता मे कमी छलनि जइ सँ निर्णय करै मे बाधा होइतनि। मुदा एते त मन मे शंका छलनिहेँ जे देवगण सब ऐहेन आखिर किए अछि जे धरती परक मनुक्खकेँ निरमल काल मुँह देलिऐ खाइ-पीबै लै, दाँत देलिऐ कटै लै, कंठ देलिऐ घोँटै लै, ठोर देलिऐ ओकरा टाट-फड़क लै, तखन जे बलजोरी ओकरा सब सँ अक्षर निकालि बजेबो केलक आ अपनो बाजब भुकब शुरू केलक, तइ मे हमर विचार रहल। तँ नीक होइत जे भने चतुर्दशीक चान सेहो उगले अछि, इमानो आ धरमो केँ बजा लिऐ, आ बुधियो-विवेक केँ बजा विचारि लेब नीक होइत। पाँच मिलि करी काज, हारने-जीतने कोनो ने लाज। हमरा मनुक्ख निरमवेक भार भेटल हेन आ कि ओइ मनुक्ख केँ बिगाड़ कत' होइत सेहो भार हमरे अछि। ओ त अपन विधाता अपन पोथी-पतरा देखब के कतना।

साउहे बारहो मासक रूपवान चान, बारहो मासक चन्द्रमाक रूप-रंग मे मौसमक अनुकूल प्रभावित रहैत छै, तइ मे सबसँ सुभ्यस्त मौसम आसिनक चान केँ राति भेटैए। चारू गोटे, माने इमान, धरम, बुधि-विवेक, केँ समाद ब्रह्माजी पठा देलनि। जाबे ओ चारू पहुँचला तइ बीच मे जे खाली समय भेटलनि तइ मे उपेक्ष गेलनि जे अनेरे विधाताक काजक भाँज मे पड़ि गेलौं। अपन काजक ने जबाब-देह छी आ कि दुनियाँक ठीकेदारी अछि। जखैन इनका (माने विधाता केँ) छुट्टी भेटलनि तखन ओ घर-कनियाँ कपार मे लिखैत रहता। भाव कियो काज कुलसँ पहुँचि छुट्टी पर्व-ए आ ओ छुट्टिये भेटल पर काज करै छथि। ओहुन-ओहुन लोकक भार हमरा बुते उठत। लोको त लोके छथि कि ने, खुशामद करि क' काजो करा लेता आ उनटा केँ बाजब इ काज फल्लाँ केँ छियैक। सेहो ने दियें किए भोए जब एते। सिखनैक बुद्धि अपने छैहे तखन



पृ०- ३

अपन-अपन जिनगीक काज अपने सम्हारैत चलू। जिनगी कौनो अफ्रीका बोन मे आ कि कोनो पहाड़क झाड़ी मे नुकाएल अछि जे नइ देखब। देखते छी जे एक बीघा खेत वला दु बीघा बनबै चाहै छथि, हाइ स्कूल शिक्षक कओलेजक बनै चाहै छथि। एकटा कारखाना वला दोबर बनबै चाहै छथि। दुनियोँ कें एकै नजरि मे देखल जाए छी आ अपन जे आँखियो आ नजरियो संगे मे रहै-ए से देखबे ने करै छी। ई तखन होइ बीत अछि जे आँखि ने केकरो अपना कपार मे सटल रहै-ए मुदा नजरि सँ छोड़ै रहै-ए, ओ त नजैरबाने ने रहै-ए।

ब्रह्माजीक समाद पबिते इमनदार भाए अपन सब काज छोड़ि दौड़ले पहुँचला।

ओना इमनदार भाएक मन मे ब्रह्माजीक आदेश होइनि जे करता से कहब। मुदा ब्रह्माजी त परिवारक अंग बुझि सबकेँ विचारे ले बजौने छेलखिन तेँ ओकरो तीनूक, धर्मदेव, बुधिनाथ आ विवेकानन्दक, प्रतीक्षा मे प्रतीक्षारत रहैत छेलाह। जइ सँ किछु बजै नइ छेला। संजोग बनल तीनू गोरे संगे पहुँचला।

चारू गोरेक बीच मे, ब्रह्मा जी अपन राज्यादेशक राजपत्र रखि बजला- 'एकरा पढ़ि कें सब बुझियो लिअ आ विचारो दिअ जे 'अमुका मनुखक माने इमानक निर्माण केहेन करब?'

चिट्ठी बुधिनाथ पढ़लनि आ सब कियो सुनलनि। ओना सुनि जहिना इमनदार भाए बिहुँसला तहिना विवेकानन्द बिहुँसला आ बुधिनाथो कें ओहन बिहुँसी एलनि मुदा धर्मनाथक मन, कोठीक गोरा तर मे राखल चूनक कोठीक मुँह जहिना चून संग रहै छै तहिना भेल रहै। बाजथि किछु ने मुदा तरे-तर मन मसकनि जे घर सँ ल' क' दुनिया धरि केकरो गरदनि कहाँ भेल छेन ते हमर भेल हेन। चिड़ै जेकाँ एकोटा पाँखि देह मे सटल समय नहि रहै देलक। मुदा तैँ कि हारि मानि लेब। जखन धरती पर जनम लेलौं, धरती माता छथि, तखन हमरो ने छथि। माए-बच्चाक सिनेह त दुनू दिसि...

पृष्ठ-४

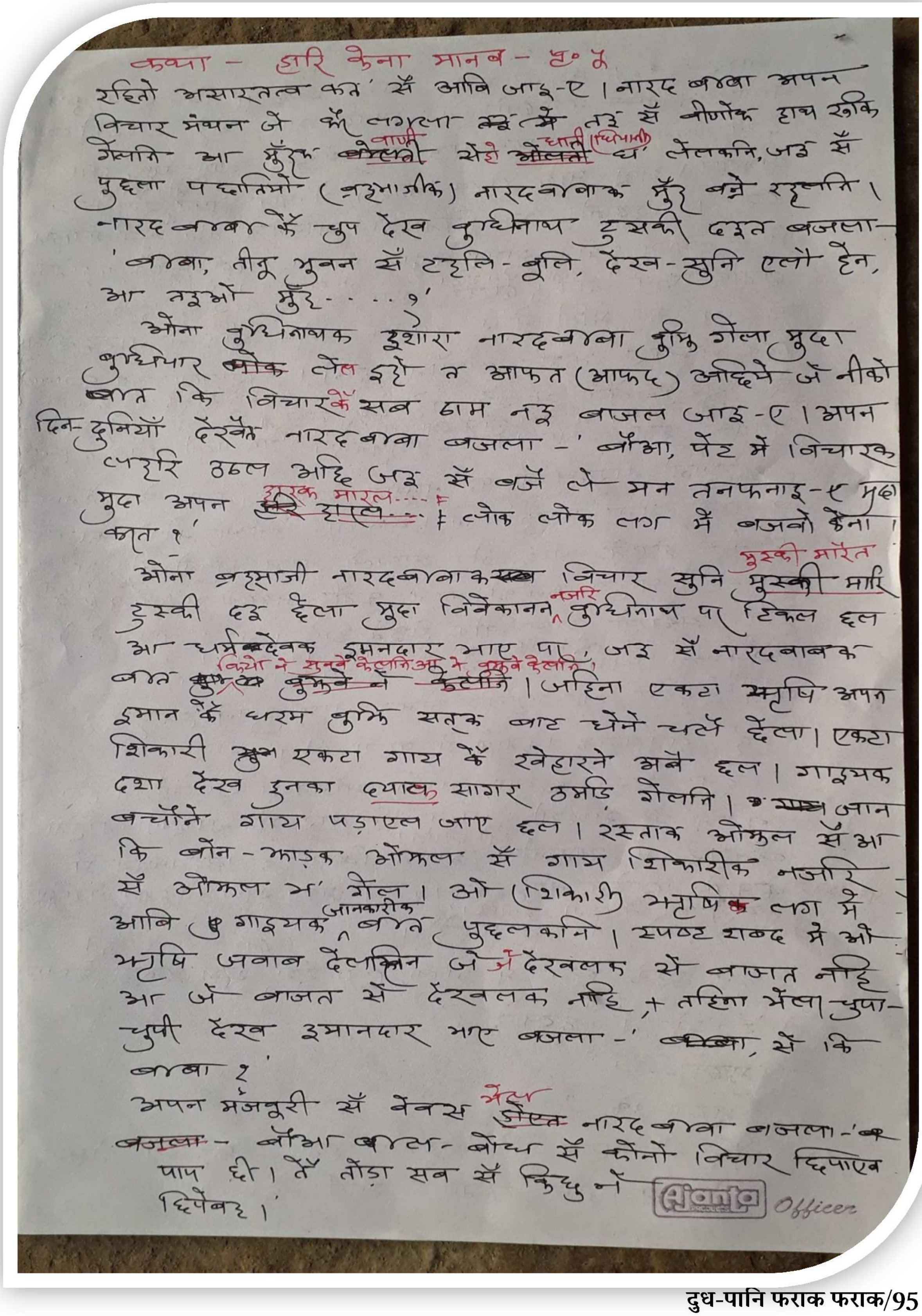
।चिट्ठी सुनि सब कियो गुम्म-गुम्म भऽ ।विचार कऽ लागल जे युग सापेक्ष मनुख बनै आ ।कि मनुख सापेक्ष युग बनै, आजुक मनुखक मुख्य रूप छी। ओना ब्रह्माजी मने-मने मनै मे रखने रहैत छैला। मुदा युगक प्रभाव त देखने छैला जे परिवार मे बेटो माए-बाप कें कहै-ए जे तूं हमर ।कि केलहुं?' जौं पुतोहु ऐहन बजे त उचित छै, ओकर सेवा ओकर माए-बाप केलकै। ओसियान भेला पद्धाति हमरो इघर आएल। मुदा बेटो जौं ऐहन बजै-ए तै जरूर कोनो बाल विद्यालयक कोचिंगक पढ़ाइक छी हैं। सत्तरह बापूतक छी सत्तरह रंगक कोचिंग अछि जइ मे सत्तरह रंगक मनुखो बनबै काल।

ऑखिक इशारे सँ ब्रह्माजी इमनदार भाए कें पुछलनि— जेना रस्ते सँ इमनदार भाए विचारैत आएल छैला कि की चाँथ दऽ उठि कें ठाढ़ भऽ बजला— 'आइ धरिक इतिहास मे छोट-पैघ लगा कें चौदह हजार लड़ाइ भेल अछि, ओ भेल अछि कहियो देव-दानव करै त कहियो रक्षा (रक्षा) राक्षस करै। ई भेल अतीत, आगू अछि भविस आ बीच मे अछि वर्तमान।'

इमनदार भाएक बात सुनि धर्मनाथक मन चुनिआएल मन कनी-कनी चुनियालगल। जइ सँ मनक तामस मे पुनपन एलै। बाजल— 'अतीत भेल बेतीत आ बेतीत सँ जे परतीत भेल सें भेल प्रीतक पूर्व अवस्था। तही बीच नारद बाबा वीणा नेने, बिनु समादे पहुँच गेला। परिवारो मे एहिना होइ-ए जे जौं कोनो विचार कऽ वैसब आ जौं कियो बाहरी लोक आबि गेला त पहिने इनकर विचार सब सुनिते छी।

ब्रह्माजी नारद बाबा कें कहलनि- भने अहाँ आबिये गेलौं। अहींभाग हमरा परिवारक। देश-दुनियाँक कि हाल अछि।'

नारद बाबा पहिने वीणाक तारक कनेटी दऽ कें ठीक केलनि। किअए त मन मे उठि गेल छलनि, हाथ मे वीणा अछि, कोन वीणा छी, मुँह सँ फुकैवला सपहरिया सबहक छी, आ कि सरस्वती दिअनि। सारस्वतक मन



कथा - हारि केना मानब - पृ० ५

रहितो असारतत्व कतं सँ आबि जाइ-ए। नारद बाबा अपन विचार मंथन जे कऽ लगला तइ सँ वीणोक हाथ रुकि गेलनि आ मुँहक वाणी सेहो धाती (छिपाती) धऽ लेलकनि, जइ सँ पुछला पद्धतियों (ब्रह्माजीक) नारदबाबाक मुँह बन्ने रहलनि।

नारदबाबा कें चुप देख बुधिनाथ हुसकी दइत बजला- 'बाबा, तीनू भुवन सँ टहलि-बुलि, देख-सुनि एलौं हेन, आ तइओ मुँह....?'

ओना बुधिनाथक इशारा नारदबाबा बुझि गेला मुदा बुधियार लेल इहो त आफत (आफद) अछिये जे नीको बात कि विचारकेँ सब ठाम नइ बाजल जाइ-ए। अपन दिन-दुनियाँ देखैत नारदबाबा बजला - 'बौआ, पेट मे विचारक पहरि ठहल अछि जइ सँ बजै ले मन तनफनाइ-ए मुदा मुदा अपन डरक मारल.... लोक लोक लग मे बजबो केना। कात ?'

ओना ब्रह्माजी नारदबाबाक विचार सुनि मुस्की मारैत हुसकी दइ देला मुदा विवेकानन नजरि बुधिनाथ पर टिकल छल आ धर्मदेवक इमनदार भाए पर, जइ सँ नारदबाबाक बात कियो ने सुनबे केलनि आ ने बुझबे केलनि। जहिना एकटा ऋषि अपन इमान कें धरम बुझि सतक बाट धेने चलै छेला। एकटा शिकारी एकटा गाय कें खेहारने अबै छल। गाइयक दशा देख हुनका दयाक सागर उमड़ि गेलनि। जान बचौने गाय पड़ाएल जाए छल। रस्ताक ओझल सँ आ कि बोन-झाड़क ओझल सँ गाय शिकारीक नजरि सँ ओझल भऽ गेल। ओ (शिकारी) ऋषिक लग मे आबि गाइयक जानकारीक बात पुछलकनि। स्पष्ट शब्द मे ओ ऋषि जवाब देलखिन जे जे देखलक से बाजत नहि आ जे बाजत से देखलक नहि, तहिना भेल चुपा-चुपी देख इमानदार भाए बजला -' से कि बाबा ?'

अपन मजबूरी सँ बेबस भेल नारदबाबा बजला -'बौआ बात-बोध सँ कोनो विचार छिपाएब पाप छी। तेँ तौड़ा सब सँ किछु ने छिपेबइ।'

पृ. - ६

नारदबाबाक उमड़ल मनक सागर मे विवेकानन्द, बुद्ध बाबो, धर्मदेवो आ इमनदार भाए सेहो टकटकी लगा देखै लगला। नारदबाबाक मन आगू-पाछू करए लगलनि। आगू-पाछू होएक कारण भेलनि अपन तीनू भुवनक रूप-चित्र देखब। नारदजीक रूप चित्र छनि, भक्तिक तीन पद्धति मे – व्यास पद्धति, हनुमान पद्धति आ नारद पद्धति; जइ मे एक पद्धतिक दाताक रूप मे अपनो छथि। मुदा दोसर रूप, जे देखैत छला तइ मे गामक-घरक पुरुख-पातर सँ ल' क' मौगी-मेहरि धरिक बीच छथि जे नारदबाबा एक नम्बर झगड़ लगौन छथि। घरोवला आ घरोवाली दुनू सुख-चैन सँ रहै नहि दइ छथि। से ओ चाहे मर्त्य-भुवनक हुअए आ कि देवभुवनक।

ब्रह्माजी नारदबाबा पर नजरि फेड़लनि। नजरि फेड़ाइते नारद-बाबाक मन फुड़फुड़ेलनि। बजला- 'बौआ, नीकोक काज त नीक होइते अछि, जे अधलो काज कवनो नीक भ' जाइ-ए। तहिना नीको काज कतौ अधलो भ' जाइत अछि तँ कतौ अधलो काज नीक होइते अछि। जइ सँ बुझियै ने पेब रहल छी जे नीक कि आ अधला कि भेल। धर्मदेव बीचे मे टपकल- जेना ?'

नारदबाबा बजला- 'बुद्धदेव आ महावीर जैनक नाम सुनने हेबहक ?'

'हँ, इतिहासक किताबो मे पढ़नो छी।'

'दुनू सन्त छेला, जहिना भोजन मे सादगी, तहिना वस्त्र मे सादगी, जहिना विचार मे सादगी, तहिना बेवहार मे सादगी दुनूकेँ छलनि। अपन विचारक विद्यालय मे अध्ययन सँ केकरो परहेज नहि छल। विचारो आ बेवहारो छलनि।' 'कोँ छला। खुलल किताब जकाँ दुनूक'

'हँ, से त छलनि हेँ।'

'दुनू एके युग मे भेला, एके रंग दुनू युग द्रष्टा सेहो छेला,'

'हँ, से तँ छेला हेँ।'

'मुदा....'

'मुदा कि ?'

'यैह जे एक गोरे 'बहुजन हिताए' आ दोसर गोरे 'सबजन हिताए' मानै छेला।'

पृ० 6

ओना 'बहुजन हिताइ' आ 'सबजन हिताइक' भाँज मे चारू गोरे, - इमनदार भाए, धर्मदेव, बुधिनाथ आ विवेकानन्द ओझरा गेला। मने- मन विचारै लगला मुदा ब्रह्माजी बुझि गेला, मने मन मुस्की मारै लगला। सब अपने-अपने विचार मे तेना फँसि गेला जे बकता कियो रहबे केने केला। जइ सँ चुपा-चुपी पसरि गेला ब्रह्माजीक मन मे भेलनि जे ऐना जँ कोनो विचार कँ बैसी आ कियो बजनिहारे ने रहता तखन विचार कि हएत? नारदबाबा कँ चरिअबैत बजला- 'नारदजी, इन्द्रासन सँ आदेशपत्र आएल अछि, जे आजुक मनुख निरमबैक, तइ मे...?'

नारदबाबाक मन दुनू दृष्टि सँ करुआएल (करुआएल) छलनि, पहिल- चलैत- चलैत तते थाकि गेल छला जे मन करुआ गेल छलनि। दोसर, तीनू भुवनक चालि- चलनिक बेवहार देख मन तेना अगियागेल छलनि जे विचार करिया गेल छलनि। ओही करिआएल मनक बीच ब्रह्माजीक प्रश्न छलनि। बजला - 'आजुक जेहेन दुनिया अछि तइ मे सभसँ उत्तम कोटिक निर्माण (मनुखक निर्माण) ओ हएत जे निरमाणार्थीकेँ (जेकर निर्माण करब) पूँजी (धन) अनुकूल, माने गरीबी मे नेपाली ठर्रा आ अमीरी मे कनाडियन रसक दारू पीया मोटर साइकिलक सवारी पर चढ़ा, एक हाथ मे मोबाइल आ दोसर हाथ मे सिगरेट चढ़ा, सवारीक हेन्डिल केँ दुनू हाथे छोड़ि, अन्हा- गाहीस बाट पर चलाएब नीक निर्माण हएत।'

ब्रह्माजी बुझि गेला जे नारद जी खिसिया कँ विचार देलनि। ओना हुनको विचार केँ सोलहो आना नहियो मानब नीक नहिये हएत। किअए त अपने ने बैसल- बैसल निरमबै छी, मुदा नारदजी तँ तीनू भुवनकेँ छछरैत बुलि देखै छथि तेँ देखल बजला अछि। अपन विचार केँ बेवहारिक बना ब्रह्माजी बजला- नारदजी, अहाँ विचार सँ सहमत छी तेँ समर्थन करै छी, मुदा, ऐहेन मनुखक सँ ते जग- हँसार ने हएत। किछु छी ते जबाब देही मे छी कि ने।' ब्रह्माजीक विचार सुनि नारदजी अपन नामस...

कें मनें मन घोंटे लगला। मुदा जहिना डुमैबला वस्तु पानि में जाइते डूमै लगै ए आ बिनु डूमैबला अथाहो पानि में अलगे रहै-ए, तहिना नारद बाबाक मन में ठेंठत रहनि। अपन पल्ला (पाला) झाड़ैत बजला -' लोको कि लोक छी, जहिना बिनु सींग-सींगहौटीक अछि तहिना बिनु नाङरि-पुछड़ीक सेहो त अछिये, तेहने--?'

ब्रह्माजी बजला -' बदनामी हएत?'

नारदजी बजला - जे बदनाम करत ओ त अपने बदनाम अछि, तखन बदनामीक लाज केकरा हएत? हमरे कियो पद्धति कर्ता कहै-ए आ कियो घर-जरौन, तेकरा हम कि करबै।'

ब्रह्माजी कें नारदजीक विचार जेना जँचलनि, जँचिते मन में खुशी ठपकलैन जइ सँ मुँह मुश्कियएलनि। मुस्की छुटैत बजला -' तखन?'

' तखन कि, अहीं कैं लोक कि कहै-ए से बैसल-बैसल बुझबै, कियो बेइमान कहै-ए आ कियो नशाबाज।'

' से केना?'

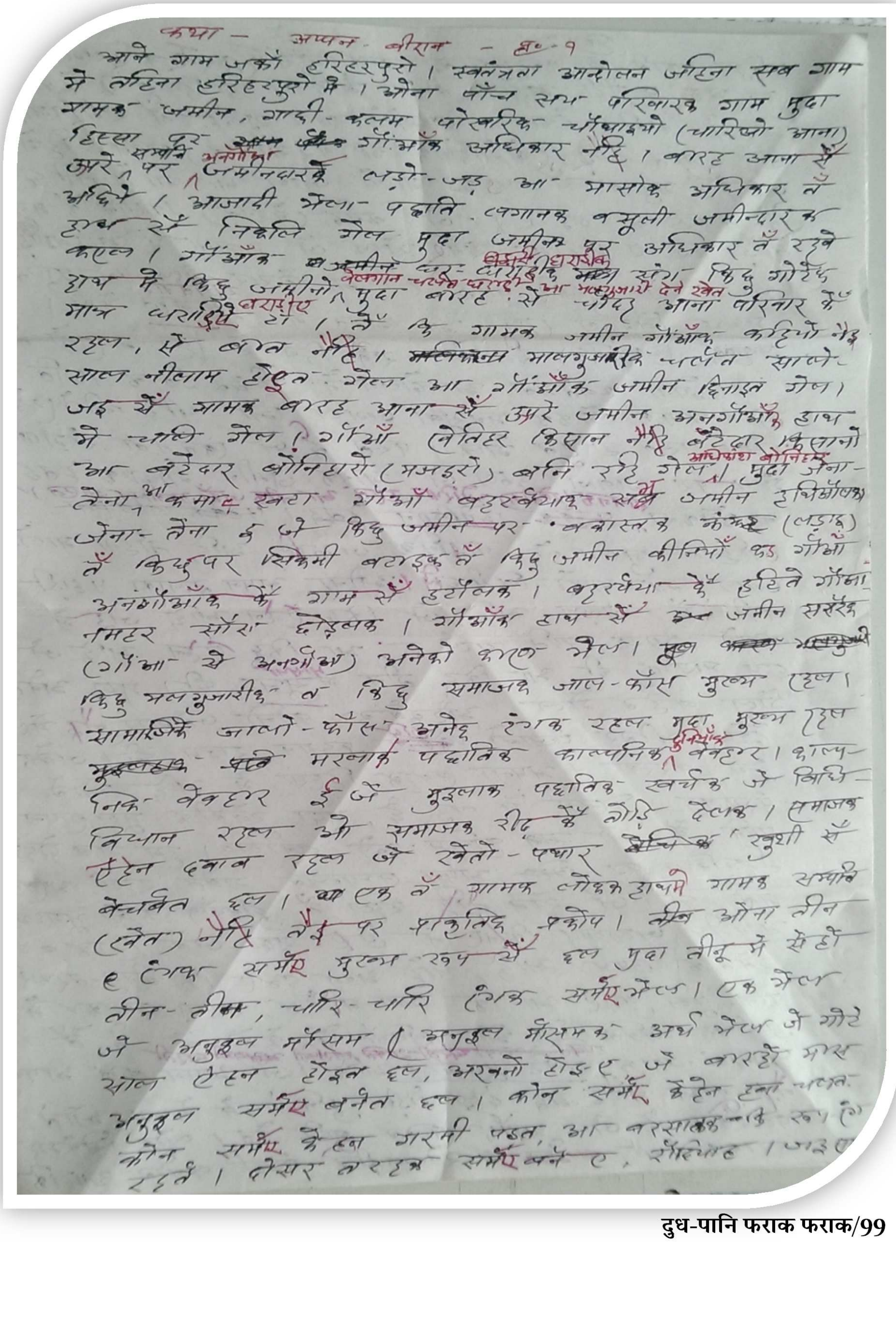
' जेकरा घर में बेटीक बीहा अबै-ए ओ बेइमान कहै-ए आ जेकरा बुधि भसिया जाइ छै ओ भँगपीबा कहै-ए।'

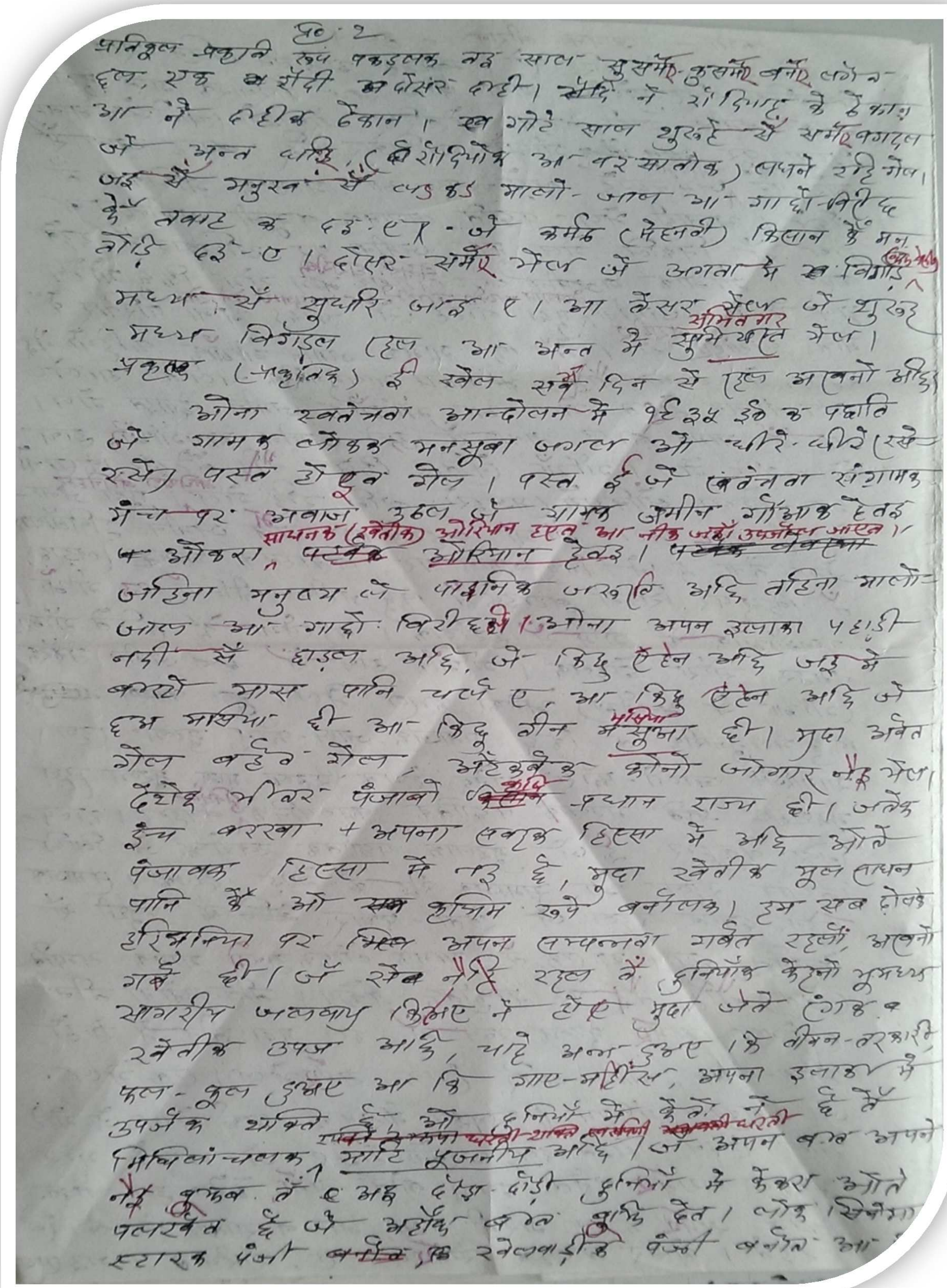
' ऐ में हमर कोन दोख।'

' से अपना मनें बुझने हएत। बजबै जे भाए, हम त दुनियाँक नजैर में नर-नारीक सृजन करै छी, तहिना बुधि-विवेकक सेहो करै छी। तइ से लोक मानत। ओ थोड़े बुझत जे मकान (घर) बनौनिहार त पहुँच गेल, मुदा केतौ सीमेंट कम रहल आ कि बालुए कम रहल, तइ दुआरे मकान बनौनिहार कामै हएत। ओ त कमो-बेसी करि कें मशाला तैयार करये लेत।'

ब्रह्माजी - तखन?'

नारदजी -' तखन यैह ने, जे कतौ बदनामी हएत त कहबै जे भाँग फनी बेसी पीया गेल। तैं हारि थोड़े मानि लेब।' समाप्त २।११।०१८

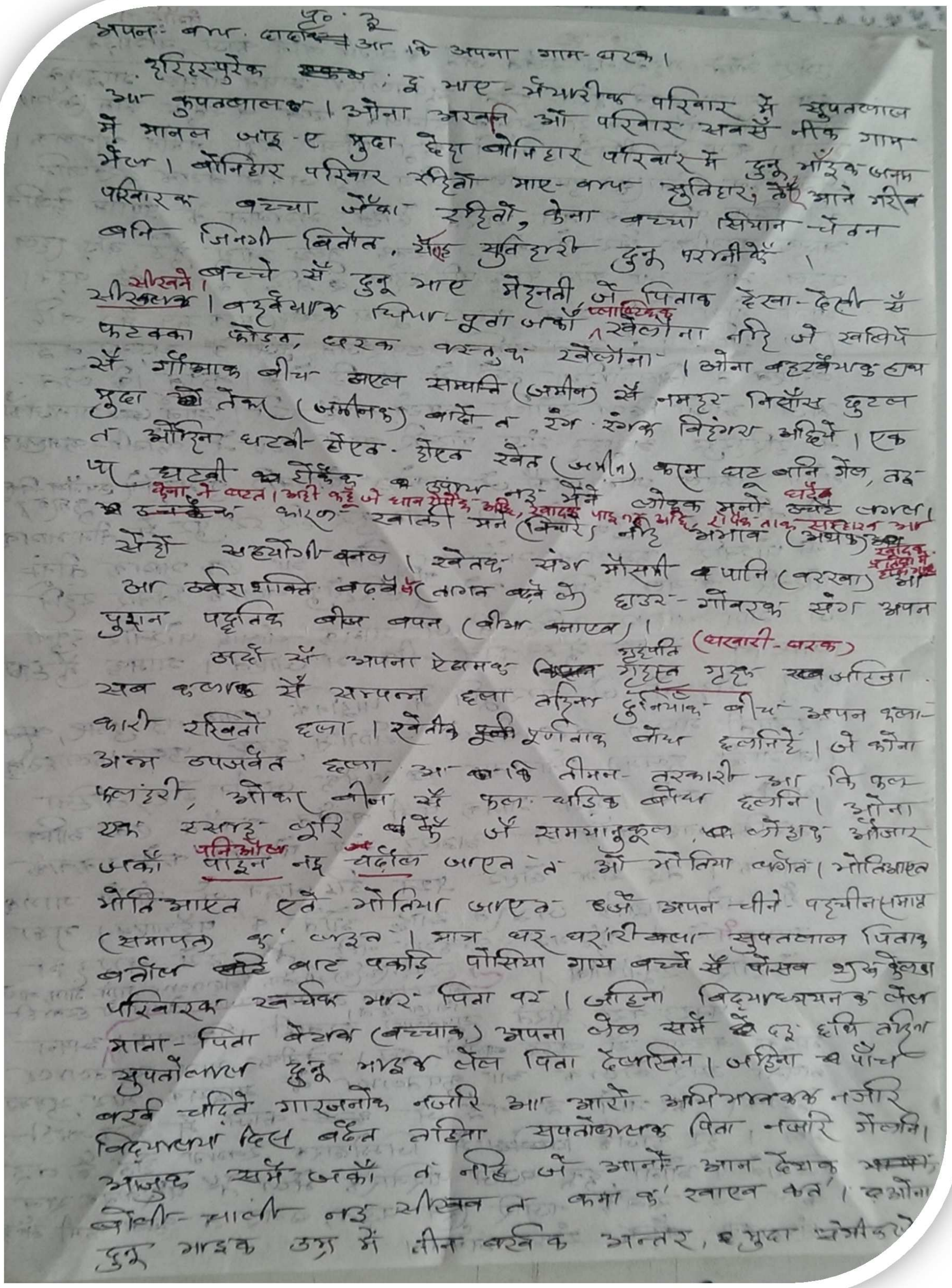




प्र० २

प्रतिकूल प्रकृति रुप पकड़लक नइ साल सुसमौ-कुसमौ बनैत लगैत छल, एक बरौंदी दोसर दाही। सौंदे ने रौंदियाहू के हेनाइ आ ने दहीक हेनाइ। एक गोटे साल शुरुहे सँ समौ बगड़ल जे अन्त धरि (सौंदियोक आ परसातोक) बचले रहि गेल। जइ सँ मनुख सँ पशु धरि माली-जाल आ गाछो-बिरिछ केँ नकारि कऽ दऽ देलक जे कर्मठ (मेहनती) किसान कें मन तोड़ि दैत अछि। दोसर समौ भेल जे अगता मे बिगड़ि मध्य सँ सुधरि जाइत अछि। आ तेसर भेल जे शुरुहे मध्य बिगड़ल छल आ अन्त मे अभितगर भेल। प्राकृतिक ई खेल सभ दिन सँ छल आ अखनो अछि।

ओना स्वतंत्रता आन्दोलन मे १९३५ ई० क पश्चाति जे गामक लोकक मनसुबा जगल ओ धीरे-धीरे (रसे-रसे) पसरैत गेल। पसरल ई जे स्वतंत्रता संग्रामक मंच पर अवाज उठल जे गामक जमीन गौंआक हेतइ साधनक (खेतीक) ओरियान हएत आ नीक जकाँ उपजौल जाएत। ओकरा, ओरियान हेतइ। जहिना मनुक्ख जे प्राकृतिक जरूरति अछि तहिना माली-जाल आ गाछो-बिरिछक छी। ओना अपन इलाका पहाड़ी नदी सँ छाड़ल अछि, जे किछु ऐहेन अछि जइ मे बारहो मास पानि चलैए, आ किछु ऐहेन अछि जे छअ मसिया छी आ किछु तीन मसिया छी। मुदा अबैत गेल बहैत गेल, ओकरा कोनो ओगार नहि भेल। देखैत-देखैत पंजाबो अन्न प्रधान राज्य छी। जतेक इंच बरखा अपना सबहक हिस्सा मे अछि ओते पंजाबक हिस्सा मे नइ छै, मुदा खेतीक मूल साधन पानि छै ओ कृत्रिम रुपे बनौलक। हम सब होइतो इतिहासिया पर मिथिला अपन सम्पन्नता गबैत रहलौं, अखनो गबै छी। जँ सेहो नहि रहल तँ दुनियाँक कोनो भूमध्य सागरीय जलवायु किएक ने होए मुदा जते रंगक खेतीक उपज अछि, चाहे अन्न हुअए कि तीमन-तरकारी फल-फूल हुअए आ कि गाए-महींस, अपना इलाका मे उपजैत रहल अछि ओ दुनियाँ मे केतौ ने छै तेँ मिथिलांचलक माटि पूजनीय अछि। जे अपन बात अपने नहि बुझब तँ अइ दौड़-दौड़ी दुनियाँ मे केकरा ओते फुरसत छै जे अहाँक बात बुझि दैत। जेना सिनेमा स्टारक पंजी, खेलाड़ीक पंजी बनैत आ


पृ० ३
अपन- बाप दादाक आ कि अपना गाम-घरक।
हरिहरपुरेक ; दू भाए- मैथरीक परिवार मे सुपतलाल
आ कुपतलाल। ओना अखनि ओ परिवार सबसँ नीक गाम
मे मानल जाइ-ए मुदा हेरा बोनिहार परिवार मे दुनू भाँइक जन्म
भेल। बोनिहार परिवार रहितो माए- बाप सुनिहार; कौआते गरीब
परिवारक बच्चा जेँका रहितो, केना बच्चा सियान-चेतन
बनि जिनगी बितौत, सेहो सुनिहारी दुनू परानीकेँ।
सीखने। बच्चे सँ दुनू भाए मेहनती जे पिताक देखा-देखी सँ
सीखलक। बहुतेयाक धिया-पुता जकाँ प्लास्टिकक खेलौना नहि जे खलियेँ
फटक्का फोड़त, घरक वस्तुक खेलौना। ओना बहुतेयाक सभ
सँ गौआक बीच अएल सम्पत्ति (जमीन) सँ नमहर निसाँस छुटल
मुदा तेकर (जमीनक) बाढ़ि त रंग-रंगक बिहंगर अछिये। एक
त ओहिना घटबे होएत। होएत खेत (जमीन) कम घटू बनि गेल, तइ
पर घटबी ... उपाय नइ भेने ओहुक मनो टुटै लागल।
केना ने खटत। अहीं कहू जे धान रोपैक अछि, खादक पाइ नहि अछि, रोपैक ताक सरहरन आ
कारण खाकी मने (किसानी) नहि अभाव (अथक) खादक पानिक ... से
सेहो सहयोगी बनल। खेतक संग मौसमी पानि (बरखा) आ
आ उर्वराशक्ति बढ़बैले (लगन बढ़ै के) छाउर- गोबरक संग अपन
पुरान पद्धतिक बीआ बपन (बीआ बनाएब)।
(घरबारी-घरक)
गृहपति
ओर्दो सँ अपना ऐहमक गृहस्त गृहक सभ अहिना
सब कलाक सँ सम्पन्न हवा तहिना दुनियाक बीच अपन कला-
कारी रखितो हवा। खेतीक पूर्णताक बीच हलतिहे। जे कोना
अन्न उपजबैत हवा, आ कि तीमन- तरकारी आ कि फल
फलहरी, ओकर बीज सँ फल चाड़िक बीच हलनि। ओना
एक रसाइ कुरि कैकेँ जेँ समयानुकूल, ओहुक औजार
पनिओखा
जकाँ पाइन नइ चढ़ौल जाएत त ओ मोतिया बनौत। मोतिआएत
मोतिआएल एते मोतिया जाएत कि अपन चीने पद्दीनसमाप्त
(समापत) कऽ जाइत। मात्र घर-घरारीबला सुपतलाल पिताक
बनौल बाट पकड़ि पोसिया गाय बच्चे सँ पोसब शुरू केलक
परिवारक खर्चक भार पिता पर। जहिना बिद्याध्ययनक लेल
माता- पिता बेटाक (बच्चाक) अपना लेल सभे दऽ छथि तहिना
सुपतोलालो दुनू भाइक लेल पिता देलखिन। जहिना पाँच
बरख चढ़िते गारजनोक नजरि आ आरो अभिभावकक नजरि
बिद्यालया दिस बढ़ैत तहिना सुपतोलालक पिता नजरि गेलनि।
आजुक सभ जकाँ त नहि जे आनो आन देशक ...
बोली- चाली नइ सीखत त कमा कऽ खाएत कते। ओना
दुनू भाइक उम्र मे तीन बरखक अन्तर, मुदा ...

पृष्ठ-६

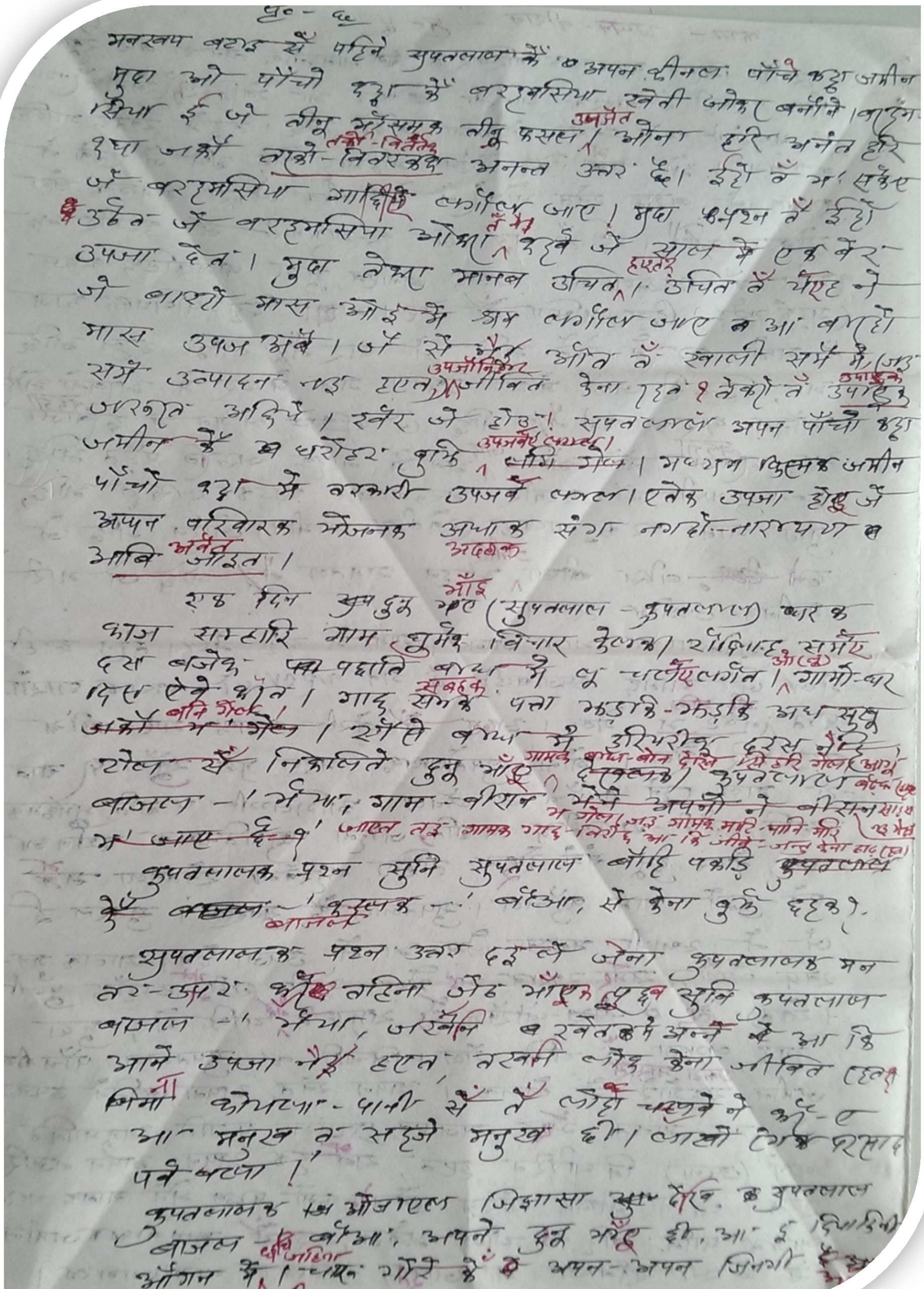
उमेर ओते महत नइ रखैत जतेक संगी बनि काज (संगोरैत चलै) पनरह बरखे पुरैत-पुरैत सुपतलाल अपन पोसल गाइयक सेवा सँ पाँच कट्ठा जमीन कीनलक। सब वस्तुक दाम (रुपैयाक मूल्य) कम तेँ तीनिये रुपैये कट्ठा पाँचो कट्ठा जमीन कीनलक। जइ दिन पिता (सुपतलालक) पाँच कट्ठा जमीन बेटाक देखलनि तही दिन परिवारक मन भरैत-होइत भगवान कैँ प्रणाम केलनि। आजुक महगीक दौर मे कोन-वस्तुक मूल्य आगू-पाछू रहल अछि आ कोन पाछु पड़ि रहल अछि, से के कहत। ओना मोटा-मोटी सब वस्तुक मूल्य बढ़ि (पाइक रूप मे) बढ़ि रहल अछि। जँ अपन उपार्जित पूँजी कैँ घड़गर नइ बनाएब तँ चिलहोरिया जकाँ ऊपरे से झपटि लेत। जे अपनो हिस्सा खोलि झपटबे चाहैत छी। (झपटि) आन गामजकाँ ने हरिहरपुर अठारह गंडा पोखरि बला अछि ने कोसी-कमलाक भरैन कएल गाम जकाँ, जे एकोटा पोखरि कुमड़ैये (उपनैन-विवाह) जोगर नहि। तइ दुनू सँ हटि हरिहरपुर मे तीन भागक पोखरि कमलाक भरैन भऽ गेल आ एक भागक तीनटा पोखरि बँचल अछि। ओना हरिहरपुर बलाक विचार रहनि जे गाम चपगर अछि तेँ जँ गामक चौथाइ पोखरि रहत (आएत) गामक मुँह-कान नीक भऽ जाएत। गामक मुँहक छवि तँ ने जे वासभूमि मे पानिक जमाव नइ हुअए, बरसाती मासक तरकारी जे चौमास हुअए, फूल-फलक (गाछी-कलम) आसतम अछैक जमीन होए, तहिना अगाड़ी-पाछाड़ी। मुदा गामक पँजी बनबैत-बनबैत एतऽ आबि अटकि जाए छलनि जे अठारह गंडा पोखरि कते रकबाक गामक। तइ संग दोसर प्रश्न उठि जाइत जे सौंसे गामक मे जते पानिक जरूरत अछि ओते कऽ पहुँचाएब। मुदा गामक मे बेसी मुँहगर-कनहगर नहि तेँ दसे-बारहटा पोखरि रखनौलनि। → हरबाही (बड़क) सीखैक विद्यालय गामे-गाम, बाड़े बाड़ी। जइ हरबाह भऽ जाए, सेहो से हरबाही सीखा देत।

पनरह बरखे पुरिते सुपतलाल हरबाही सिखलक। अपन गाइक बच्चा सँ बड़द बनौने छल। खेतीक भार सुपतलाल अपना ऊपर लेलक आ कुपतलाल कैँ गाइयक भार सुमझा देलक। एकर माने ई नइ जे काज मे कटा-कटी भेल। हर काजक जिम्मेदारी मे जिम्मेदारक खगता होइ छै, तइ दुआरे। ओना दुनू काज परिवारेक भेल तेँ परिवारक सब काज पर सबकेँ नजरि रहै पड़ैत, नइ तँ कमी ओंठ संभावना बढ़ैत संका अबैत।

कथा - अप्पन-वीरान - पृ० ५

हरबाही- सिंघते सुपतलालक परिवार मे तीन आमदनीक, तीन टा बाट खुजल। पहिल हरबाही सँ बाहरक आमदनी, खेत पड़ल आ खेतिहरकेँ (खेतीकेँ नञि) संगी बनने खेतीक संभावना बढ़िते अछि। बहरबैया। ओ सभ कि ओहेन भड़िआर थोड़े छथि जे एतबो ने बुझता जे बराबर खेत ओकरे ने हेबनीक जेकरा समांगक संग हरोबड़द अछि। ई तँ नैञ एजे कन्याकुमारी सँ कश्मीर आ कश्मीर सँ अरुणाचल सड़क बनाएब, मुदा प्राकृतिक काज (सड़क नहि) छिट्टा-पथिया सँ होए। माछ। छिट्टा-पथियाक काज तँ गामे-घर मे तेते अछि जे पार नैञ लागि रहल अछि आ, हिस्सी जकाँ मेघ रेडुक। गाम घर मे आंगनो ओहिना आँगन घरक कमी नैञ अछि, जे आँगन सँ दरबज्जा आ दरबज्जा सँ आँगन जाइ-अबै मे बाधक भसकि पड़ल अछि। कन्याकुमारी सँ कश्मीर-अरुणाचल सड़कक जरूरत अछि मुदा गाम घरक बाधक (खेतीक जमीन) ओहेन अछि जे दसो बीस बीघा जमीन ओहन समतल नैञ अछि जे भारी मशीनक उपयोग हएत।

सुपतलालक भाग जागल। गाम मे हाटी भेल। तेहेन हाटी भेल जे गामक उपजाबाड़ी तँ गेबे करल जे बाधक घासो-पात खधि-गलि नष्ट भ' गेल। आइ सँ बेसी गामक गाए-महींस बड़द मरि गेल। ओना सुपतलालक मरल मुदा खुँटा प सात-पाँच टा बेचल। अगिलग्गी पद्धति, रौदी-दाहीक पद्धति, जहिना पशुपतिनाथक दर्शन आ अपन बेपार दुनू संगे होइत तहिना बहरबैया खेतबला सभ एके-दुइयेँ गाम पहुँचल। सुपतलालकेँ सुतरल। सुतरल ई जे ने स्थायी मनखप लेब आ ने उपजा देब। सालक मन-खप लेलौं, सभ खराब भऽ गेल, रौदी-दाही मे अछोँकु पुँजी (खेत) तँ एक चौखेड़ हो समुद्र मे नैञ चलि गेल, मुदा हमर कहता तँ चलि गेल। बिचारि क' सुपतलाल पाँच बीघा जमीन एकटा मासमे सकुगोरे से लेलक। अपन खेत, अपना जुतिये उपजाएब जे मन मानत सएह उपजाएब, उपजा पछाति अनुमानित कूत (उपजा) निर्धारित हएत, सभ हरे अपन-अपन नजरि रहत। पाँचो बीघा गोरहा खेतमे कमो पड़ल भेने गामक चारू भागक पानि बहि कऽ चलि अबैत, जइ सँ आम बाधक जमीन सँ बेसी सुविधा भ' जाइत। सुपतलालक भाग जागल।



पृ० - ८८

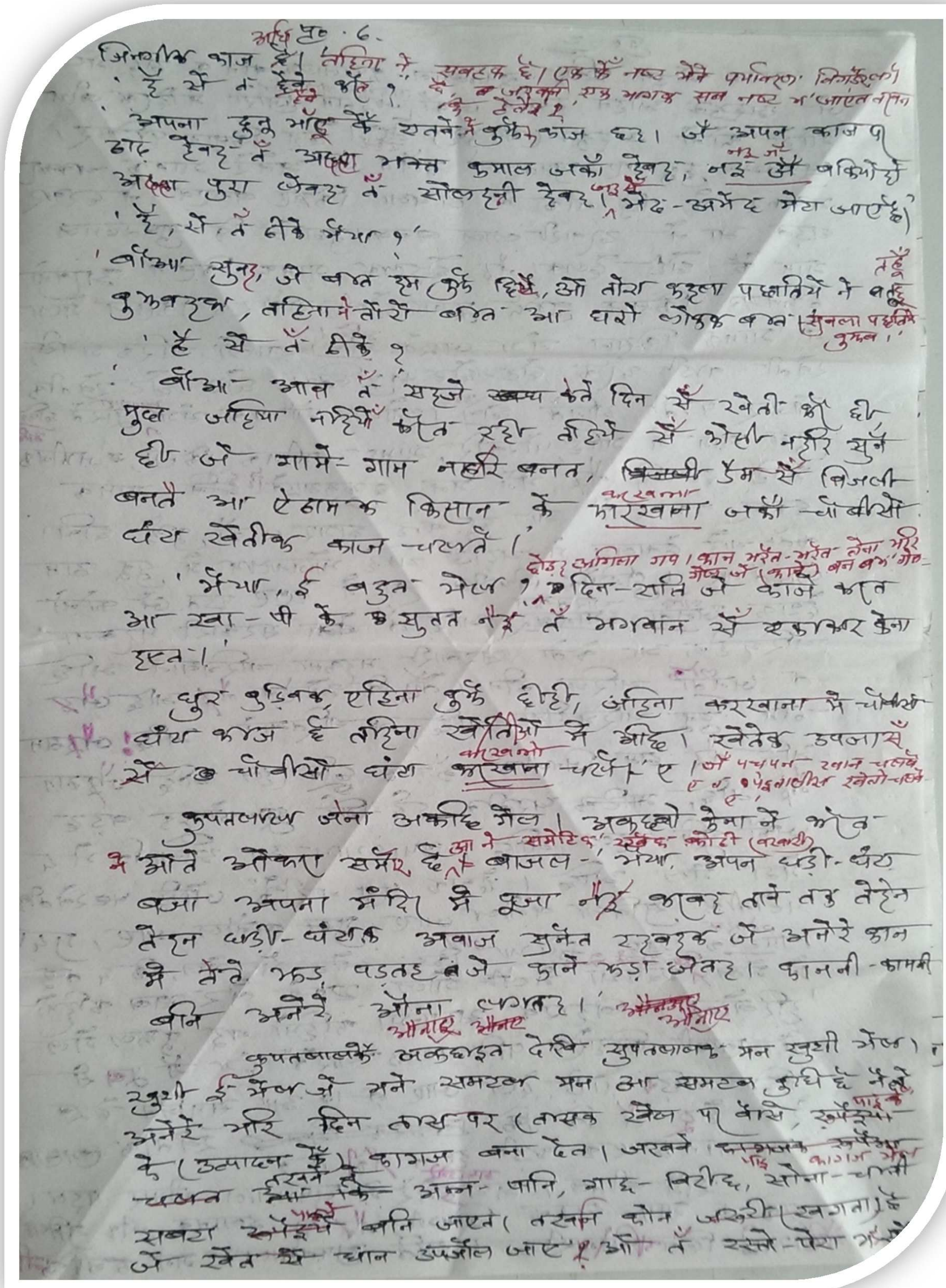
मनरवप बटाइ सँ पहिने सुपतलाल कैँ अपन हीनल पाँचो कट्ठा जमीन मुदा ओ पाँचो कट्ठा कैँ बरहमसिया खेती ओकर बनौने। कारण ई जे तीनू मौसमक तीनू फसल उपजैत। ओना हरि अनंत हरि कथा जकाँ तर्को-वितर्क अनन्त अछि। ईहो कहि सकैत छी जे बरहमसिया गाछीक [illegible] जाए। मुदा प्रश्न तँ ईहो उठैत जे बरहमसिया ओहेन होइ जे साल मे एक बेर उपजा देत। मुदा तेहन मानब उचित हएत। उचित तँ यैह ने जे बारहो मास ओइ मे श्रम [illegible] जाए आ बारहो मास उपज अबै। जँ से नहि, तँ खाली समै मे, जइ समै उत्पादन नइ हएत, जीवित केना रहत? तेकरो तँ उपाइ करए पड़ैत अछि। खैर जे होउ। सुपतलाल अपन पाँचो कट्ठा जमीन कैँ धरोहर बुझि उपजबैए लगल। मध्यम किस्मक जमीन पाँचो कट्ठा मे तरकारी उपजबै लगल। एतेक उपजा होइ जे अपन परिवारक भोजनक अधाक संग नगदो-नारायण आबि जाइत।

एक दिन दुनू भाँइ (सुपतलाल-कुपतलाल) भोरक काज सम्हारि गाम घुमैक विचार केलक। रविदिनक समए दस बजेक पछाति बाध मे धू चलए लगैत। गामो-घर देस ऐहे होइत। गाछ सबहक पत्ता झड़कि-झड़कि अध सुखु बनि गेल। ओहेन बाध मे उरियराकेँ दरस नहि होइत। देखि दुनू भाँइ गाम दिस विदा भेल। कुपतलाल बाजल- 'भैया, गाम-घरक मनुखो ने सिसकि रहल छै। जइ गामक माटि-पानि मरि रहल अछि, तइ गामक गाछ-बिरीछ आ जीव-जन्तु केना जीवित रहत?'

कुपतलालक प्रश्न सुनि सुपतलाल बाँहि पकड़ि कुपतलाल कैँ बाजल- 'बौआ, से केना बुझै छहक?'

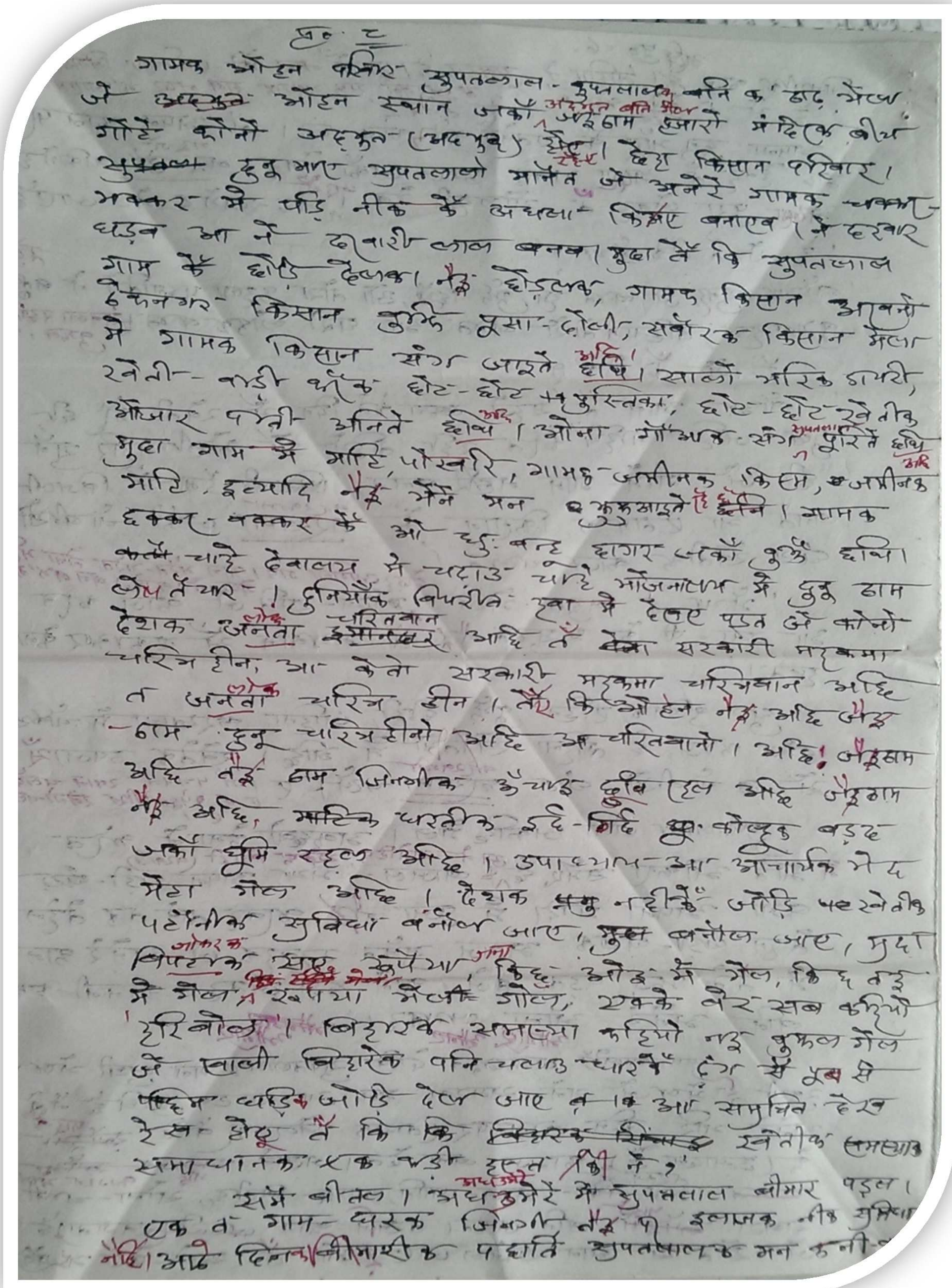
सुपतलालक प्रश्न उत्तर दइ लेल जेना कुपतलालक मन तर-ऊपर करए लगल। तहिना जेठ भाँइक प्रश्न सुनि कुपतलाल बाजल- 'भैया, जखनि खेत अन्नेसँ आ कि आने उपजा नहि हएत, तखनी लोक केना जीवित रहत? बिना कोयला-पानी सँ तँ लोको चलबे ने करत आ मनुख तँ सहजे मनुख छी। [illegible] परसादे पबैत अछि।'

कुपतलालक ओझराएल जिज्ञासा सुनि सुपतलाल बाजल- 'बौआ, अपने दुनू भाँइ छी, आ ई [illegible] आँगन कैँ। चारू गोरे कैँ अपन-अपन जिनगी [illegible]



अधि पृ० ६.

जिनगीक काज छै। तहिना ने?
'हँ, से तँ छैहे, औरे?'
'अपना इनु माँटु कैं इतनें कुछो काज छइ। जौं अपन काज पर ठाढ़ हेबइ तँ अछा भक्त कमाल जकाँ हेबइ, नइ जौं पकियो अछा फुरा लेबइ तँ सोलहन्नी हेबइ। भेद-अभेद मेटा जाएत।'
'हँ, से तँ ठीके भैया?'
'बौआ सुनह, जे बात हम कहै छिऐ, ओ तोरा कहला पद्धतियेने बहुत कुअवरुप, तहिना तोरो बात आ घरो लोकक बात।'
'हँ से तँ ठीके?'
'बौआ— आब तँ सहजे कते दिन सँ खेती भो छै, मुदा ओहिना नहियेँ होइत रहै, तहियो सँ ओखो नहि सुनै छै जे गामे-गाम नहरि बनत, बिजली डैम सँ बिजली बनतै आ ऐहामक किसान कें कारखाना जकाँ चौबीसो घंटा खेतीक काज चलतै।'
'भैया, ई बहुत भेल? दिन-राति जे काजे करत आ खा-पी कें सुतत नइँ तँ भगवान सँ एकाकार केना हएत।'
धुर बुड़िबक, एहिना कुछो होइ छै, जहिना कारखाना मे चौबीसो घंटा काज होइ छै तहिना खेतियो मे होइ। खेतेक उपजा सँ चौबीसो घंटा कारखाना चलतै ए।
कुपतलालक जेना अकच्छ भेल। अकच्छ भेलो केना ने होइत, ओकरा समैर दे बाजल— 'भैया, अपन घड़ी-घंटा बजा अपना मंदिर मे पूजा नइँ करइ ताने तकु तेहेन तेहन घड़ी-घंटाक अवाज सुनैत रहबइक जे अनेरे कान मे तेहेन झड़ पड़तइ जे कानें कड़ा भेतइ। कानली-कामनी बिनु अनेरे औना लगतइ।'
कुपतलालकेँ अकछाइत देखि सुपतलालक मन खुशी भेल। खुशी ई भेल जे मने समरथ मन आ समरथ बुधि छै नहि अनेरे भरि दिन तास पर (तासक खेल पर) बैसे, खौंझा कें (उत्पादन कैँ) कागज बना देत। अखने [illegible] अन्न-पानि, गाछ-बिरीछ, सोना-चानी सबटा [illegible] बनि जाएत। तखनि कोन जरूरी (खगता) छै जे खेत सँ धान उपजौल जाए? ओ तँ खेते-पेरा [illegible]



पृ० ८

गामक ओहन परिसर सुपतलाल - कुपलालक बनि क' ठाढ़ भेल जे अद्भुत ओहन स्थान जकाँ अद्भुत बनि गेल जहिना हजारो मंदिरक बीच गोटेक कोनो अद्भुत (अद्भुत) होइ। छोट किसान परिवार। सुपतलालो मानैत जे अनेरे गामक चक्कर-मक्कर मे पड़ि नीक कैँ अधला किएए बनाएब। नै हरबार धड़ब आ नै दरबारी लाल बनब। मुदा तैँ कि सुपतलाल गाम कैँ छोड़ि देलक। नै छोड़लक, गामक किसान आबनो हैनगर किसान बुझि पुसा-ढोली, सबौरक किसान मेला मे गामक किसान संग जाइते अछि। सालो भरिक डायरी, खेती-बाड़ी परक छोट-छोट पुस्तिका, छोट-छोट खेतीक औजार पत्री अनिते अछि। ओना गाँअक संग सुपतलाल पुरिते अछि मुदा गाम मे महिँ पोखरि, गामक जमीनक किसिम, जमीनक माटि इत्यादि नै मैने मन कुकुआइते छैनि। गामक चक्कर-मक्कर कैँ ओ धुं बनि हागर जकाँ बुझै छथि। चाहे देवालय मे चढ़ाउ चाहे भोजनालय मे दुनू ठाम तैयार! दुनियाँक विपरीत हवा मे देखए पड़त जे कोनो देशक लोक चरितवान आछि तँ सरकारी महकमा चरित्रहीन, आ केतो सरकारी महकमा चरित्रवान अछि त लोक चरित्र हीन। तैँ कि ओहन नै अछि जैठाम दुनू चरित्रहीनो अछि आ चरितवानो। अछि! जैठाम अछि तैठाम जिनगीक ऊँचाइ छुबि रहल अछि जैठाम नै अछि, माटिक धरतीक इर्द-गिर्द कोल्हुक बड़द जकाँ घुमि रहल अछि। उपाध्याय आ आचार्यक भेद मेटा गेल अछि। देशक नदीकेँ जोड़ि पटखेतीक पटौनीक सुविधा बनौल जाए, मुदा बनौल जाए, मुदा विपटाक जोकरक सए रुपैया, किछु ओइ मे गेल, किछु नइ मे गेल, रुपैया मैटि गेल, एकके बेर सब कहियो 'हरिबोल'। बिहारक समस्या कहियो नइ बुझल गेल जे खाली बिहारक पनि चलाउ धारकेँ ढंग सँ पूब सँ पच्छिम चाहि जोड़ि देल जाए आ समुचित देख रेख होइ तँ कि खेतीक समस्याक समाधानक एक बड़ी हएत कि नै?

समै बीतल। अधउमेर मे सुपतलाल बीमार पड़ल। एक तँ गाम-घरक जिनगी तैपर इलाजक नीक सुविधा नै। आठ दिनक बीमारीक पछाति सुपतलालक मन कनी...

कथा - अप्पन - बीरान, पृ०- ५

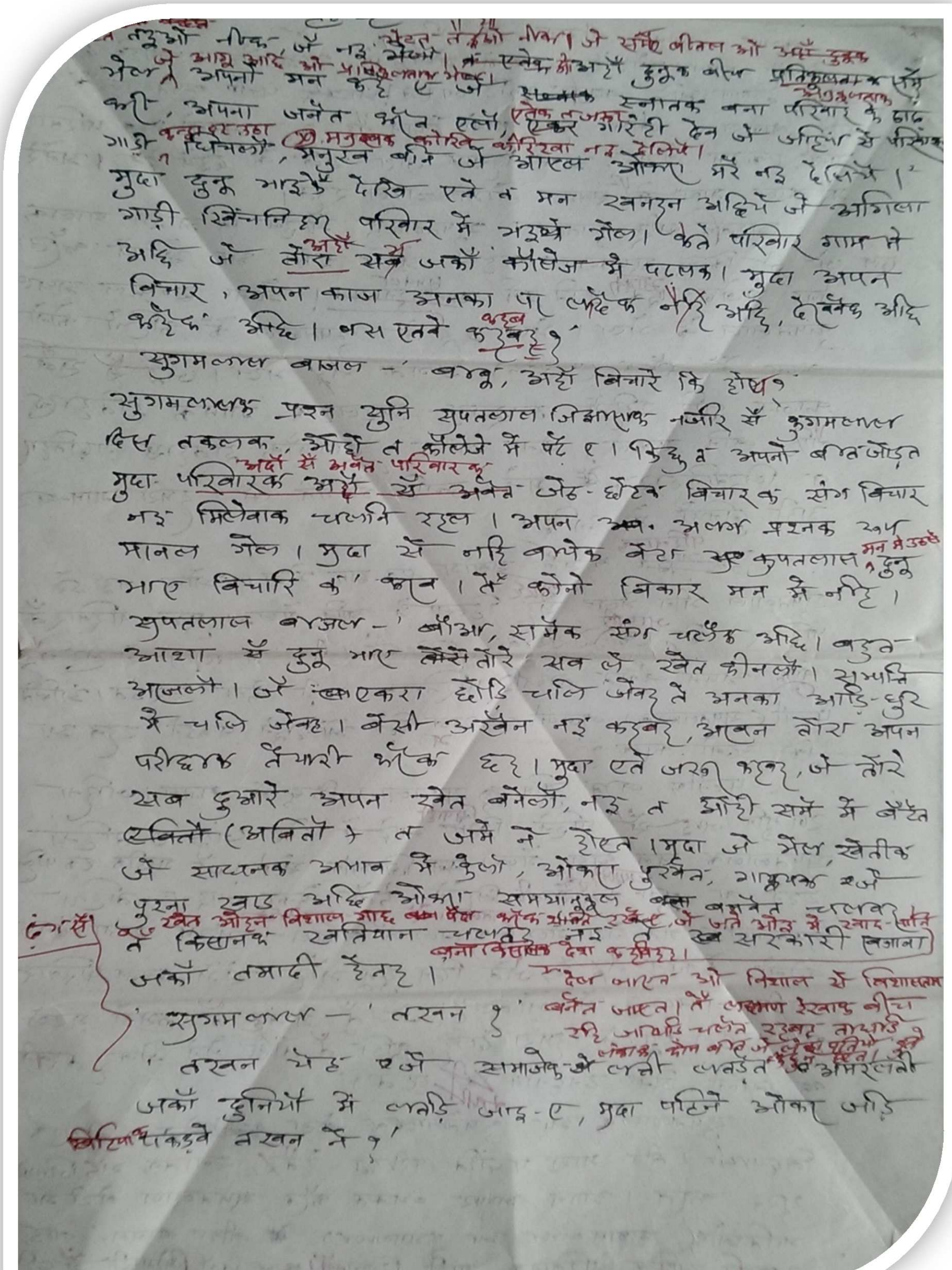
चोरबाड़ै लागल। चोरबाड़ैत- मन मे भेलैक जे ऐ अन्न कोंचाक माटिक देहक कोनो ठेकान अछि करतनि कृति आएत! कुपतलाल कें संग पाड़ि बाजल - 'बौआ, हमर कोनो ठेकान नै छै। परिवारक सबहक एकठाम बैसह, अपन हिसाब तोरा सबकें दइये देबइ। अनेरे गरैकाल बाबाक एकटा बोझ चढ़ल रहत।'

अखनि धरि कुपतलाल सुपतलालक ओहेन आज्ञा पालक छल जे जे किछु सुपतलाल कहैत ओतबे करैत आ ओतबे करैत। ओना जेठ भाइक प्रति पूर्ण समर्पण! ओना सफल अधला कुपतलाल कें भेल। भेल ई जे कुपतलाल कें कहियो कोनो काज कें कुरैक (परखैक) रगता नै भेल। जइ सें सबमे काजक बुरि रहितो उजड़लहा-उपटलहा गामक इतिहास नहि बनि सकल। केना बनैत? दुनियाँक इतिहास गढ़निहार व लिखनिहारक मने उचटि गेलनि जे हमरो गाम-घर अही दुनियाँ मे अछि।

परिवारक सबमे समांग एकठाम भेल। ओना जइ डरे सुपतलाल भीन भेलाह सएह हिस्सा मे आबि गेलइ। मुदा परिवारमे परिवार छी तथापि एक-दोसरक दुख-दर्द (नीक-अधला) दोसर नै बुझै अपन बनौने तथापि परिवारक गाड़ी केना ससड़ैत। अनिते पत्नी (सुपतलालक) बाजली - 'सब दिन ओइ धुने पकड़ने रहब आ कि उठबो करब?'

पत्नीक बात सुनि सुपतलाल किछु ने बाजल। जहिना रणभूमि जाइ सँ पहिने सिपाही बाटे मे घेरा जाइ-ए तहिना सुपतलालक मन घेड़ा गेल। जिनगीक संगी। जँ गाड़ीक एक पहिया टुटने वा चपाटक एक संगी बिहैते केतौ फेका जाइ-ए, तहिना सुपतलालकें घुम-घुम देखि सुपतलालक मन घेरा गेल। कुपतलाल बाजल - 'भैया, राजा-देवकें कोनो ठेकान नै छै, जेते दिन दुनू भाँइ संगे परिवारक गाड़ी जोतलहुँ से जोतलहुँ। जँ तूँ मरबह तँ हमरो मरबे करए पड़त। बुरि नै हमरा देखइ, बुधि तँ तोंही भेने जेबह तखनि खाली टीन ढनढनौने कोन हएत?'

सुपतलालक आ कुपतलालक बेटा बी०ए०क विद्यार्थी। तीन मास पछाति परीक्षा हेतै, स्नातक भइ जिनगी शुरू करत। अपन आभार व्यक्त करैत सुपतलाल बेटो आ भातिजो (सुखमलाल आ फगुनलाल) कें बीच बाजल- 'बाउ अखनि धरिक परिवारक गाड़ी खिंचलौं। जँ बीमारी सँ


तँ दुनू नीक, जँ नइ भेटत तँ दुनू नीक। जे समैक कीनल ओ अहाँ दुनूक भेल, अपनो मन कहैए जे स्नातक बना परिवार के गाड़ी खिंचलौं, मनुक्ख बनि जे आएल ओकरा मेरे नइ देलियै।
मुदा दुनू भाइकेँ देखि एते तँ मन खनहन अछिये जे अगिला गाड़ी खिंचनिहार परिवार मे जनमि गेल। कते परिवार गाम मे अछि जे तोरा सबहक कौलेज मे पढ़लक। मुदा अपन बिचार, अपन काज अनका पर लादैक नहि अछि, देखैक अछि। बस एतबे कहब।'
सुगमलाल बाजल- 'बड़बू, अहाँ बिचारै कि हएत?'
सुगमलालक प्रश्न सुनि सुफललाल जिज्ञासाक नजरि सँ सुगमलाल दिस तकलक, ओहो त कौलेजे मे पढ़ैए। किन्तु ओ अपनो बात जोड़ैत मुदा परिवारक ओहो सँ अनेक जेठ-छोटक बिचारक संग बिचार नइ मिलेबाक चलनि रहल। अपन अलग प्रश्नक रूप मानल गेल। मुदा से नहि बाजैक बेरा सुफललाल दुनू भाए बिचारि कहलक। तेँ कोनो बिकार मन मे नहि।
सुफललाल बाजल- 'बौआ, समैक संग चलैक अछि। बहुत आशा सँ दुनू भाए तोरे सब ले खेत कीनलौं। सम्पत्ति अजलौं। जँ एकरा छोड़ि चलि जेबह तँ अनका आड़ि-धुर मे चलि जेतह। बेसी अखैन नइ कहबह, अखन तोरा अपन परीक्षाक तैयारी करैक छह। मुदा एते जरूर कहबह, जे तोरे सब दुआरे अपन खेत बनेलौं, नइ त ओही समै मे बैसल रहितौं (अबितौं) त अमै ने होइत। मुदा जे भेल, खेतीक जे साधनक अभाव मे कुलो, ओकरा दुरबैन, गाछक रूजे पुरना खाद अछि ओकरा समयानुकूल बनबैत चलब। तँ किसानक खतियान चलतह नइ तँ सरकारी खजाना जकाँ तमादी हेतह।'
सुगमलाल- 'तखन?'
'तखन येह रूजे समाजक जे कनी कनी करैत आबि रहलौं जकाँ दुनियाँ मे जाड़ आइ-ए, मुदा पहिने ओकरा जोड़ि पकड़बे तखन ने?'

कथा - दिवालीक दीप ५०१

कातिकक पनरह दिनक अन्हारक (सामूहिक) समूहक दिन अमावस्या छी। आइये रातुक पहिल पहर आ दिनक पाँचम पहर मे लक्ष्मीक पुजा आ दिनक छठम-सातम पहरक, आ रातुक दोसर-तेसर पहर मे काली पुजा सेहो छी। कातिक अन्हारक दुख-धंधा मे भरि दिन बौआएल रहलौं। साँझक आगमन होइते गोसाउनिक स्थान सँ घर-ओसार, आँगन-दरबज्जाक संग, माल-जालक घरो आ भुस्कार, संग जलाशय (माने-इनार-पोखरि) - जलाशयक संग घाट-घारा होइत समुद्रक घाट पर सेहो दीपक जरत।

एखन नव पीढ़ी सँ एकटा बात कहि दिऐ चाहै छी, आजुक कातिक अन्हार नहि जेना डिबियाक बदला जगह बिजली बौल लेसल, बाइस-तेबाइस सेहो जगह सरकारी चानक गहुमक पास गाम मे छल नहि छल, आइ सँ तीस-चालीस बर्ख पूर्ब, जे पीढ़ी आबन अधि-बयस मे पहुँच गेल छथि, तइ परिवेशक चर्च छी। अहाँ सब कें नीक हएत जे एकरा अहाँ इतिहास बुझिऐ।

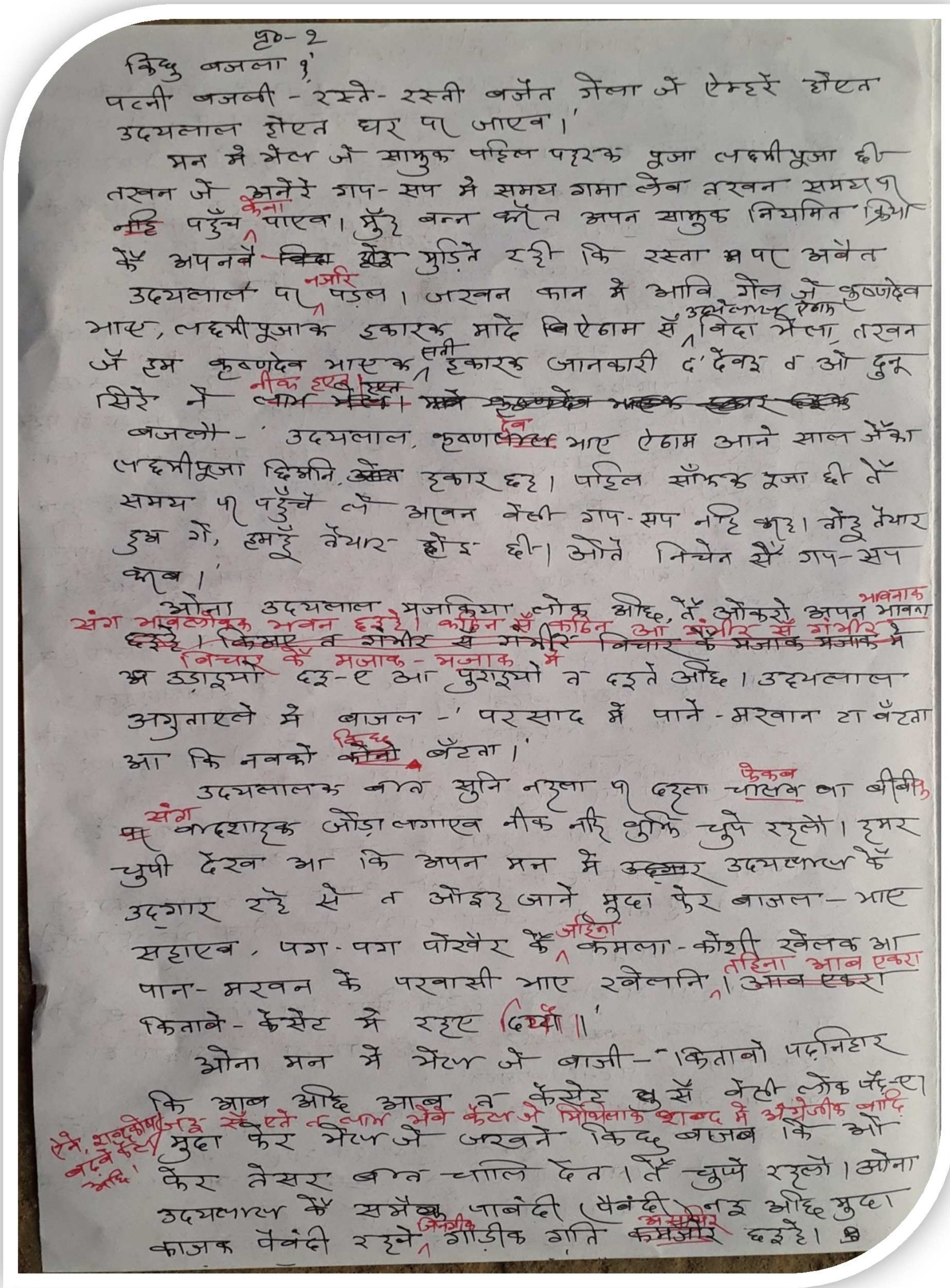
सूर्यास्त होइ पर आबि गेल। ओना श्रम कोन शक्ति सेहो शरीर मे शेष छल आ जिनगीक अन्तिम क्रिया सेहो शेष छलैहे। क्रियाक सरदर नियम एक काजक पद्धति दोसर काज रोपी। तँ कटबो नियम नहि अछि सेहो बात त नहिये अछि। ओहो त अछिये जे काजक संचालनताक बीचक जे जिनगी अछि, ओइ मे समयानुकूल आ आवश्यकतानुकूल घटबी-बढ़बी कौं पड़ै-ए। मुदा ऐनाम ने घटबीक प्रश्न अछि आ ने बढ़बीक, प्रश्न अछि जिनगी के सुचारु ढंग सँ संचालित करैक। जइ सँ समय पर दीपो जरा सकी आ पावनि सेहो मना सकी।

दरबज्जा पर पएर दइते पत्नी बजली - कृष्णदेव भैयाक, लक्ष्मी पुजाक हकार द' गेला अछि।

बजलौं - 'कहलएनि नइ जे अपनो किम्हरो सँ अबिते हेता, तइ बीच चाहो पीब लेब, मुँहा-मुँही गप्पो भ' जाएत।

'जहिना माछी-मच्छरक नंग-चंग कैने मन कछमछाए पड़ै-ए तहिना कृष्णदेव भैयाकेँ कछमछाएल देखलएनि,' पत्नी बजली।

मन मे भेल जे अनेरे जे झिंगाफ-झोंगि मन मे बनैत छी से अनेरे। सब साल कृष्णदेव भाए कातिकक दिवाली दिन लक्ष्मीक पुजा करैत छथि आ पान-मखान-मिठाइक हकार दइते छथि। जेबो करै छी। बजलौं - 'और (आरो) तहिना आइयो जाएब।



पृ०-2

किछु बजला ?'

पत्नी बजली - 'रस्ते-रस्ती बजैत गेला जे ऐम्हरे होएत उदयलाल होएत घर पर जाएब।'

मन मे भेल जे साझुक पहिल पहरक पुजा लक्ष्मीपुजा छी तखन जे अनेरे गप-सप मे समय गमा लेब तखन समय पर पहुँच कैना पाएब। मुँह बन्न कौंत अपन साझुक नियमित क्रियाकेँ अपनबैत मुड़िते रही कि रस्ता पर अबैत उदयलाल पर नजरि पड़ल। जखन कान मे आबि गेल जे कृष्णदेव भाए, लक्ष्मीपुजाक इकारक माँदे बिऐनाम सँ उदयलालक ऐनाक बिदा भेला, तखन जँ हम कृष्णदेव भाएक सती इकारक जानकारी द' देबइ त' ओ दुनू सिरे नै नीक हएत।

बजलौं - 'उदयलाल, कृष्णदेव भाए ऐनाम आने साल जेँका लक्ष्मीपूजा छिअनि, इकार छइ। पहिल साँझुक पूजा छी तेँ समय पर पहुँचै लेँ आबन बेसी गप-सप नहि करइ। तोँहु तैयार हुअ गे, हमहूँ तैयार होइ छी। ओतै निचेन सँ गप-सप करब।'

ओना उदयलाल मजाकिया लोक छथि, तेँ ओकरो अपन भावनाक संग भावलोकक भवन छइहे। कठिन सँ कठिन आ गंभीर सँ गंभीर बिचारकेँ मजाक-मजाक मे उड़ाइयो दइ-ए आ पुराइयो त दइते छथि। उदयलाल अगुताएले मे बाजल - 'परसाद मे पाने-मखान टा बँटता आ कि नबको किछु बँटता।'

उदयलालक बात सुनि नहुआ पर दहला फेकब आ बीबीक संग बादशाहक जोड़ा लगाएब नीक नहि बुझि चुपे रहलौं। हमर चुपी देखब आ कि अपन मन मे उदयलालकेँ उद्गार रहै से त ओइह जाने मुदा फेर बाजल - भाए सहाएब, पग-पग पोखैर केँ जहिना कमला-कोशी खेलक आ पान-मखान केँ परबासी भाए रखैलनि, तहिना आब एकरा किताबे-कैसेट मे रहए दियौ॥'

ओना मन मे भेल जे बाजी - 'किताबो पढ़निहार कि आब छथि आबू त कैसेट सुनैवला लोक छैहे-ए। शब्दकोषमे सँ एते त भेबे कैल जे मिथिलाक शब्द मे अंग्रेजीक बादि ऐने, बढ़बे कैलि अछि।' मुदा फेर भेल जे जखने किछु बाजब कि ओ फेर तेसर बात चालि देत। तेँ चुप्पे रहलौं। ओना उदयलालकेँ समैक पाबंदी (पैबंदी) नइ छथि मुदा काजक पैबंदी रहने जिनगीक गाड़ीक गति असथीर छइहे।

पृ॰-३

ओना उदयलाल मजकियल लोक चालि पकोड़-चलनिहार
लोक जेँका हँसी--चौल (चालि) करैत अछि मुदा तेकरा ओ गपे-
सप तक रखने अछि। गपोक कि कोनो आड़ि-धुर अछि जे मनजे
फुड़ै छै से बजै-ए। मुदा जिनगीक खेल
त किछु और (आरो छी) छी, ओ त गति-विधिक क्रिया सँ चलै
ए, जइ सँ उदयलालक जेहने बुधि सकताएल छै बहिना काजो सकताइल
चालि छै, तेँ विसवास पात्र अछिये। ऐ ठाम दोख
उदयलाल मे नहि अछि, जइ सँ मन दुखी नइ हेरऽ-छै
सेहो बात नहिये अछि। कोन क्रियाक बोल कते उच्चारण
हएत से बेचारा मे नइ छै। एकर माने ओ इस्कूल-कौलेज
नइ देखलक सेहो बात नहिये अछि। हँ, एते जरूर छै जे
व्याकरण नइ पढ़ने जइ सँ भाषा-बोध मे कनी कमी
रहिये गेल छै। ओना ओ पत्रिका मे पढ़ने छल जे अरसूए
लग सँ भाषा, आ समाजक विचार होएत आएल, जे
कैहेन शिक्षाक स्वगता समाज कैँ अछि जइ सँ ओकर जिनगी प्रगतिक
पथ पर गतिशील रहत। मुदा खैर जे अछि, तइ सँ उदये-
लाले आ कि अपनो कोन मतलब अछि। मतलब अछि
औंगुका जे कहाँ अछि तइ कऽ मे कैना समय पर पहुँच पूजा मे शामिल
हएब। जेँ उदयलाल कैँ दरबज्जा पर छोड़ि अपने चलि जाएब, सेहो
कैहेन हएत। हँसी-खुशी सँ उदयलाल अपने नैँ आगू बढ़त।
तइ बीचेँ मे उदयलालक प्रति दोसर विचार उचीड़
कैँ मन मे चिड़ै जेँका पाँखि फड़फड़ौने खसल।
आगू मे खसैत (मनक आगू मे)। विचार सँ मन तिलमिला
गेल। तिलमिला इ गेल जे उदयलाल सन नवजुवक
जे आजुक युवाशक्तिक अंश अछि ओ त, अइना भगवानेक
अंश जेँका युवो मे युवाशक्ति अछिये। चाहे जे हुअए मुदा
उदयलाल समाज मे किछु अछि, काज
सँ बेसी काजक विचारकेँ विकुछबै मे लगौने अछि, तैँ कालक दोख
देखी त अछिये मुदा झड़-झड़ारेँ लोक त ओकरा नहिये कहल
जा सकै-ए। जड़-झड़ार जेँका उदयलाल थोड़े अछि, जे समे
अबै सँ पहिने फुटि कैँ तैयारो भऽ जाइत अछि आ पर्व
सँ पहिने झड़िये जाइ-ए।

पृ- ४

संजोग बनल उदयलाल बाजल- पाँच मिनट मे तोहूँ तैयार भ-जा- आ हमहूँ तैयार भ' जाएब। मुदा तैयार भेला पछाति हम तोहर रस्ता नइ तकबह। सोझे कृष्णदेव भाए ऐठाम 'चलि जेबह।'

ओना उदयलालक समयक बान्ह ओते सक्कत नइ बुझि पड़ल, मुदा संजोगो त संजोग छी। जँ कियो ओकरा रस्ता मे एतबो पुछनिहार भ' जाए जे भाए, बड़ अगुताएल देखै छिअ, तेकर जवाब ओ आवन तक देत तैयो ठीक नहि छै तैँ बान्ह हल्लुक बुझि पड़ल। मुदा जँ कियो नइ भेटतै त अहिना बाजल तहिना ओ आगू बढ़ि कृष्णदेव भाएक दरबज्जा प पहुँचतै दुआरी (घरवाही) बनि बोकिऐबो किनै। नइ कात सेहो बात नहियेँ अछि।

पातियो सब बात सुनि मने-मन अपनो काजक (कियाक) आ हमरो काजक गोरा-गपसप बैसाइये नेने हेती। जँ किछु अवरोध मनमे होएतनि त बजबे करितथि से किछु नहि आवन धरि बजली। एकर स्पष्ट माने येह ने भेल कृष्णदेव भाए ऐठाम समय प पहुँचबक आदेश दइये देलथि।

अहिना पाँच मिनटक समय उदयलाल देने छल तहिना तैयार भ' घर सँ निकललौं। ओना कहब जे उदयलालक घर कृष्णदेव भाएक घर सँ लग अछि तैँ पहिने पहुँचत, सेहो बात नहियेँ अछि। किअए त जते समय हमरा ऐठाम सँ उदयलाल केँ जेबाकाल लागत ततबे समय ने हमरो जाए मे लागत। मुदा समय त ओइ सँ पहिने निर्धारित भ' गेल, तैं मोटा-मोटी दुनू गोरे केँ एके रंग समय भेटल।

अहिना कृष्णदेव भाए ऐठाम हम पहुँचलौं तहिना उदयलालो पहुँचल। दरबज्जा पर पहुँचै सँ पहिले दुनू गोरेक भेटो भ' गेल। संगे दुनू गोरे दरबज्जाक अगनेय मे प्रवेश केलौं। कृष्णदेव भाए केँ देखबलएनि जे दुनू परानी हल-चल, हल-चल कऽ रहला अछि। ओइ हलचली मे दुनू परानी मे से किनको नजरि हमरा दुनू गोरे पर नहि पड़लनि।

कथा — दिवालीक दीप — पृ०-५

ओना अपना कुर्सि पड़ल जे दुनू परानी कृष्णदेव भाएक नजरि नहि पड़ल। मुदा उनका मन मे इहो भेल जे सबकेँ अपन-अपन नजरिया संग अछि आँखियो त अछिये। जइ सँ सोलहनी इहो मानि लेब जे हुनका (कृष्णदेव भाए) नजरि नइ पड़लनि सेहो कैना मानब? आँखि रहितो कियो चश्मा लगा दैत छै आ कियो बिनु चश्मेक ओकरा सँ बेसी देखैए। मन असमंजस मे पड़िये गेल। मुदा तइ बीचे मे उदयलाल बाजल — 'गौरी भाए, भरिसक कृष्णदेव भाएक नजरि अपना सब पर नइ पड़लनि?'

बजलौं — 'कैना बुझै छी?'

उदयलाल बाजल — 'ओइना अपना सब हकरिया भैलिये तहिना ने कृष्णदेवो भाए हकबाइ भेला। जँ कनियो नजरि पड़ल रहितनि त ओ जरूर किछु ने किछु कहितथि।'

उदयलालक विचार सुनि अपनो मने मानि गेल। फेर भेल जे कृष्णदेव भाए कारबारी छथि हुनका नजरि नहि पड़लनि मुदा अपनो दुनू गोरे त समाजक संग हकरियो छी, तखन किअए ने अपन हाजिरी (उपस्थिति) हुनका लग दर्ज करा ली। बजलौं — 'उदयलाल, अपना सब आगि कें कतौ चुपेचाप बैस जाएब सेहो नीक नइ हएत, तैँ अपन उपस्थिति दर्ज करा लेल।'

उदयलालोक मन मे सेहो विचार ठीक रहल छलै, स्वीकारैत बाजल — 'कृष्णदेव भाए लग चलि कैँ चेहरा देखा देला पछाति कतौ बैसि कै गप-सप करब।'

आगू बढ़ि कृष्णदेव भाए लग पहुँचलौं। उदयलाल तइ बीचे मे बाजल — 'भाए सहाएब (कृष्णदेव भाए) अहाँ यदि अहाँ गौर पुजने छी जे भौजी सन संगी हाथ लागल।'

ओना कृष्णदेव भाए पत्नी दिसि तकै लगला मुदा मुँह सँ किछु बकार नहि फुटलनि। बजलौं — 'भाए, कते काज पछुआएल अछि।'

कृष्णदेव भाए बजला — 'समयानुसार काज अपन रस्ते पर अछि, मुदा सूर्यास्तो होइ मे दू-चारि मिनट बाकी अछिये।'

पृ० - ६८

उदयलाल बाजल - भाए सहाएव, ऐनाम हमरा सबकेँ रहने अछि दुनू परानी केँ काज मे (पूजाक तैयारी मे) विभुत हएत आ हमरो दुनू गोरे केँ शर्म हएत जे जेठ भ' क' कृष्णदेव भाए दुनू परानी खटि रहल छथि आ हम सब ठाढ़ भेल मुँह देखैत छी।'

कृष्णदेव भाए बजला - ' तोहर कि विचार ?
उदयलाल बाजल - ' अहाँ, दुनू परानी अपन पूजाक तैयारी करू आ हम दुनू गोरे दुआर (गेट) पर बैस हकिया सबहक आगवानी करब।'

कृष्णदेव भाए किछु ने बजला। बुझि गेलो जे आदेश भेट गेल। दुनू गोरे अगनेयक (दलब्बाक आंगन) मे कुरसी पर बैस गप-सप करैत विचार केलौं। ओना गप-सपक क्रम मे उदयलाल कोनो - काल कुकुआन जेका बुझि पड़ैए मुदा वास्तव मे ओ गहिरगर अछि गंभीरगरो त' अछिये। बजैक ढंग ओ बदलने अछि। सदि - काल हँसि - हँसि बजैत रहै-ए आ गंभीर - सँ गंभीर विषय केँ हँसियेः मे उड़ाइयो दइ ए आ फुराइयो त' दइते अछि।

सूर्यास्त भेल। बिजलीक इजोत सँ सौंसे जगमगा गेल। कृष्णदेव भाए सेहो घर - आंगन मे बिजली लगौनहि छथि। तइ मे आइ बेसी ओरियान सेहो कैलनि अछि, बजलौं - ' उदय, बुधि बपजेठ होइ-ए। भले तूँ उमेर मे छोट छह मुदा तूँ बहुत होशियार छह। लोक सभ मे हँसि - हँसि केँ बाजि लइ छअ, मुदा - - - ?'

मुदा सुनि उदयलाल जेना एकाएक गंभीर भ' गेल, जेना ओकर गंभीरता हृदय सँ ऊपर आबि गेल होए, अहिना धरती मे गंभीरता ऐनेः ओकर सृजनशक्ति एते क्रियाशील भ' जाइ-ए जे ओइ मे माँगक बीआ छीटू आ कि बबुआक, ओ बड़बड़ा केँ जनमि जाइ-ए। तहिना उदयलाल मे सेहो बुझि पड़ल। उदयलाल बाजि किछु ने रहल अछि मुदा जहिना करिआएल मेघ समुद्र मे लधिक अपन संगी (समुद्र सँ उठैत बादल) पकड़ि संगे

पृ०-६

बिदा होइ-ए तहिना बुझि पड़ल। बजलौं- उदय, बिजली बौलब इजोत कें दिवालीक दीप...?'

जहिना समुद्र मे जुआरि उठै-ए, ज्वार मे बाढ़ि अबै-ए, पोखरि इनार मे उद्धाली अबै-ए तहिना उदयलालक मन मे अगारि (अगारि) उठल। बाजे लगल- 'मैयारी, तखन ने भय-अरि (भय+अरि) होइ-ए जखन सब मैयारी एक मुँह एक बोल बना एक-एक काजो करैत आगू मुँहे दिसक डेग दिशि बढ़ब। नइ त कतौ दीप जड़त हृदय मे आ कतौ बौल (बिजली) इजोत प्रकाशित करत। जँइ ओ दीपक पावनि तर पड़ि जाएत आ प्रकाशक पावनि अगजिआर होएत रहत।'

ओना धरमागती बुढ़ी त उदयलालक विचार सोलहनी नइ बुझलौं, मुदा ओकर वाणीक जे बाण रहै ओकरा सेकि दिशा-हीनो कहब नीक नहि बुझि बजलौं- 'हँ, से...!'

जना हमर बात कें अधडरेड़े पर उदयलाल लोकि लेलकु। जहिना चीपल ताना पाइनिके छिरका कें रोकि लइ ए तहिना। ओना करब जे पानियो सँ पातर (मेंही) ओस होइ-ए जेकरा दूभि अपन मुँहक अमृत बना माथ पर धरि लइने रहै-ए आ धरि कौ सुर्यक अरुहै नहि क' लइ छौ-ए। मुदा से सब बात नहि छल, अपना मन मे अपन पावनि बनल छल।

उदयलाल बाजल- 'आइ कातिकक आधा कातिक। दिवक अमावस्या (अमवासिया) छी कातिक कें लोक तेरहम मास कहै छै-ए। किअए? कौनो मास सँ गिनती शुरु कैल पद्धति ओ मास तेरहम भइये जाइ-ए।'

मन मे जेना घोड़दौड़ शुरु भेल, तहिना डुबए लागल। हिसाब त ठीके उदयलाल कहै-ए मुदा बुझल त कातिके टा अधि, जेकरा लोक तेरहम मास कहै-ए। बुझल त अपन विचार कें नहिये बाजब नीक बुझलौं। किअए ने उदयलाले अपन पनचैती अपने करैत चलत। मुदा उदयलालक बात हम नीक जेँका सुनलौं आ कि अनठाएल-मनठाएल जेँका बुझलौं, सेहो त उदयलाल कें इशारा सँ बुझाएब जरूरी

पृष्ठ-८

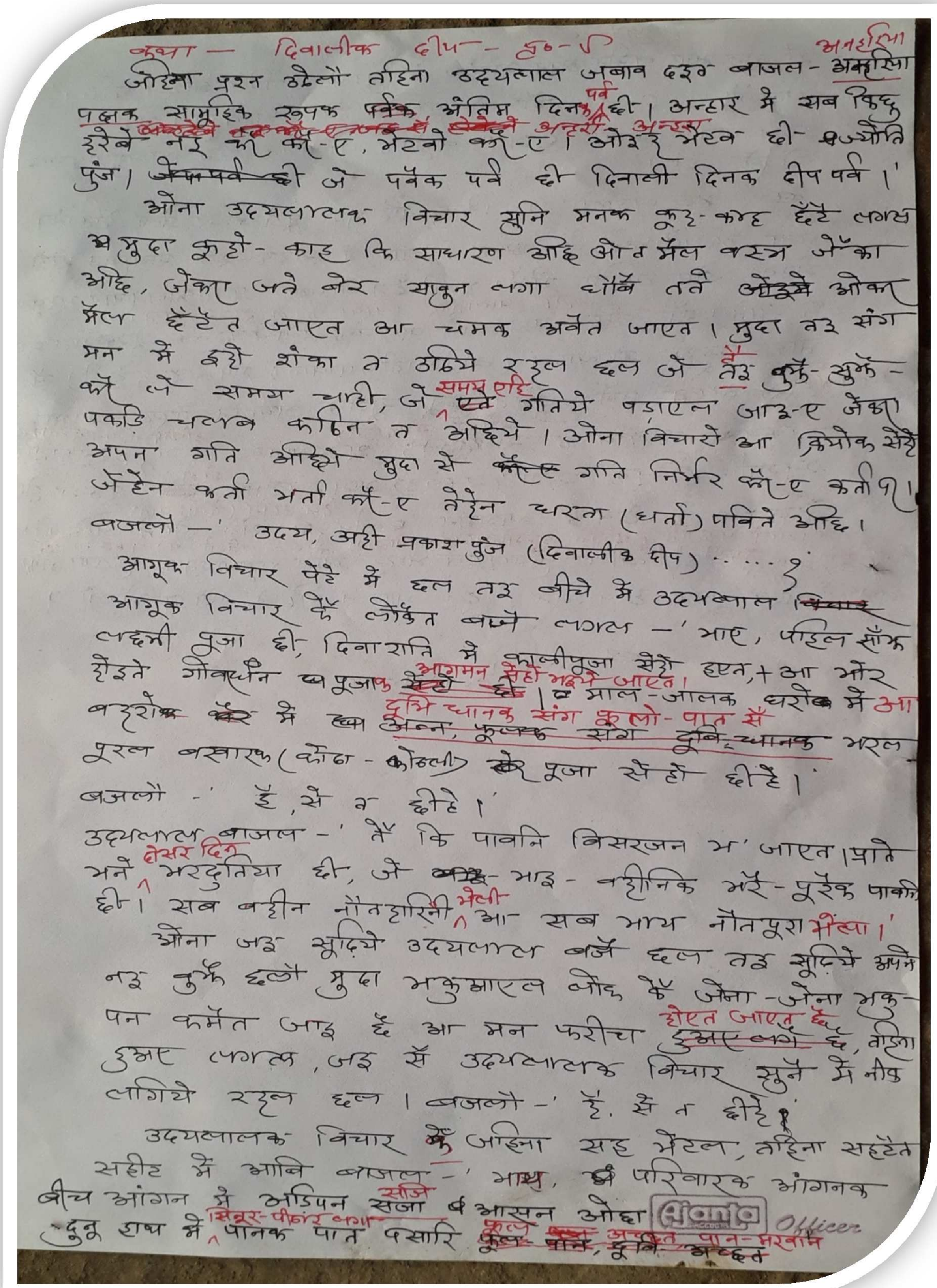
अछियै। उदयलालेक स्वर मे अपनो स्वर मिलबैत बजलौ-
हँ, से त कहिते अछि।'

उदयलाल बाजल- 'कातिक, किसानी जिनगीक ओ मास छी, आबनो
अछि आ पहिने त सौलहनी छल, जे बरसातक विभिषिका
सँ तुरत-तुरत उबड़ल हैए। विभिषिकाक अनेक
रूप मे पड़ै, कतौ धार-धुर इलाका मे धारक कटनिया
कॉ-ए त कतौ अन्हर-तुफानक संग कटनाइ कॉ-ए जाइस जान-मालक
संग, चीज-वस्तुक क्षति सेहो कॉ-ए त, कतौ बाढ़ि बाति
गामक-गाम कें मेटा दइ-ए, इत्यादि-इत्यादि। तैं कातिक
कें दूबर भारी मास मानल गेल अछि। ओहुना फसलक
उपजक हिसाब सँ सेहो चैतिक रब्बी-खरायूक पद्धति
उपजक सालक आठम मासक दूरी मे सेहो अछिये।'

तइ बीच कृष्णदेव भाए सेहो लग मे आबि
बजला- 'पुजाक समय भ' गेल, तैं अहूँ सब तैयार भ'
जाउ। जखने हम शंख फुकब कि अहाँ सब देवस्थल पर पहुँच जाएब।'

ओना उदयलालक मन मे रहबे करै जे कृष्णदेव भाए
ऐठामक पुजा मे शामिल होइ ले एलौ हेम, तैं उनकर कृत्तिकल्प छियनि
विहिते (विहीतें) जकाता, हम सब तइ मे ने पाछु-पाछु संग पुरबनि।
बजैक क्रम मे उदयलाल मस्त सँ झूमि रहल छल, जहिना संगीतक
अंतिम मोड़ पर ऐला पद्धति संगीतज्ञ झूमै लगै-ए तहिना।
मुदा कृष्णदेव भाएक वाणीक पर अंतिम लड़ीक-कड़ी जोड़ि
उदयलाल बाजल- 'आँझुके पनरहम दिन कातिकक पुरणिमा
हएत, जइ दिन कातिक अपन अंतिम सीमा पर पहुँच-
भाए-बहीनिक पाबनि सामा-चकेबा कौत
अगहन दिस (धानक मास) अग्रसर हएत।
चान-धान

उदयलालक मुँहक मीठगर बोल सुनि-सुनि मन मे जेना
मीठ-मीठ सुआद अबै लागल। ओना मन मे इहो होइत रहै
जे कहीं बीचे मे कृष्णदेव भाए नै शंख फुकि दथि जइ सँ आगुक
विचारक बाटे ने रुकि जाए। उदयलाल मने-मन छिकिया लेलक
जे जाबे कृष्णदेव भाए शंख फुकैक सुर-सार करत तइ बीचे मे अपन
विचार कें सीमा पर पहुँचा देब। बीचे मे बजा गेल-
'उदयलाल, आइ त अनहरियो पखक (पक्षक) ने पावनि छी



कथा — दिवालीक दीप — पृ०-5 अनइलि

ओहिना प्रश्न उठेलौं तहिना उदयलाल जवाब दइत बाजल- अनइलि पक्षक सामूहिक रूपक पर्वक अंतिम दिन पर्व छी। अन्हार मे सब किछु हेरैबे नइ करै-ए, भेटबो करै-ए। ओइ मे भेटैत छी ज्योति पुंज। जे पर्वक पर्व छी दिवाली दिनक दीप पर्व।'

ओना उदयलालक विचार सुनि मनक कुइ-कइ हँटै लागल मुदा कुहो-काह कि साधारण अछि ओत मैल वस्त्र जेँका अछि, जेँका जते बेर साबुन लगा धोबै तते ओकर मैल हँटैत जाएत आ चमक अबैत जाएत। मुदा तइ संग मन मे इहो शंका त उठिये रहल छल जे तैँ कुकुँ-सुकुँ-कौं जे समय चाही, जे समय एहि गतिये पड़ाएल जाइ-ए जेकरा पकड़ि चलब कठिन त अछिये। ओना विचारो आ क्रियोक सेहो अपन गति अछिये मुदा से गति निर्भर करै-ए कर्ता पर। जेहेन कर्ता भर्ता करै-ए तेहेन धरत (धर्ती) पबिते अछि।

बजलौं — ' उदय, अही प्रकाश पुंज (दिवालीक दीप).....?'

आगूक विचार पेटे मे छल तइ बीचे मे उदयलाल आगूक विचार कैँ लोकैत बजै लगल — ' भाइ, पहिल साँझ लक्ष्मी पूजा छी, दिना राति मे कालीपूजा सेहो हएत, आ भोर होइते गोवर्धन पूजाक आगमन सेहो भइये जाएत। माल-जालक घरो मे आ बड़दो मे दुभि-धानक संग फुलो-पात सँ पूरल बखारक (कोठी-कोठली) पूजा सेहो छीहे।'

बजलौं - ' हँ, से त छीहे।'

उदयलाल बाजल - ' तैँ कि पावनि बिसरजन भ' जाएत। प्राते भने तेसर दिन भरदुतिया छी, जे भाइ-बहीनिक भरै-पूरैक पावनि छी। सब बहीन नौतहारिनी भेली आ सब भाय नौतपुरा भेला।'

ओना जइ सूदिये उदयलाल बजै छल तइ सूदिये अपनो नइ बुझै छलौं मुदा भकुआएल बौद कैँ जेना-जेना भक-पन कमैत जाइ छै आ मन फरीछ होएत जाएत छै, तहिना बुझए लगल, जइ सँ उदयलालक विचार सुनै मे नीक लगिये रहल छल। बजलौं - ' हँ. से त छीहे!'

उदयलालक विचार जहिना सह भेटल, तहिना सहटैत सहीट मे आबि बाजल - ' भाय, परिवारक आंगनक बीच आंगन मे अड़िपन सजि आसन ओछा सिनूर-पीठार लगा दुनू हाथ मे पानक पात पसारि फूल अक्षत पान-मखान

पृष्ठ-१०

सँ दुनू भाए-बहीन अपन संबंध कें पुजित करिते छथि।'
बजलौं-' ई त अहाँ सँ पुजित होइत आबि रहल अछि।'
उदयलाल बाजल - ई भाए-बहीनक पावनिक संग चित्रगुप्त पूजा सेहो छी।'

बुझू बजलौं त किछु नहि मुदा मुड़ी जरूर डोला देलियै।
ओना उदयलाल कें अपन विचार मे सहक-संग समाधान सेहो भेटल होए तहिना भेलै। मुश्की दैत बाजल- प्रातःकाल (माने भरदुतिया क प्राते) सँ छठि पावनिक विधि करण शुरू होइत।
माघ- मड़ुआ बाड़ब (बरिआतीक पावनिक गप नहि कहै छी) सँ विधि करण शुरू होइत उगैत-डुबैत दुनू सूर्यक अर्घदान होइत, सामा-चकेबाक संबंधक सोहर-समदाउनक शुरूआतक संग हर-कोदारि खुरपी, हाँसुक संग (खड़ाँउ) खराम सेहो पुज्य होइत देवउठान (देवोत्थान) बीच सेहो होइते अछि। तेकर पछाति हनुमान जन्मोत्सव (जनमोत्सव) सिरहले कोजगरा-कमला स्नान आदि सामा-चकेबाक विदाइ होइते नहि बीच कृष्णदेव भाए महाभारतक कृष्ण जेकाँ कातिकक दसम दिन शंख फूकि देलखिन। दुनू भाए १ ठाँ कें विदा भेलौं।

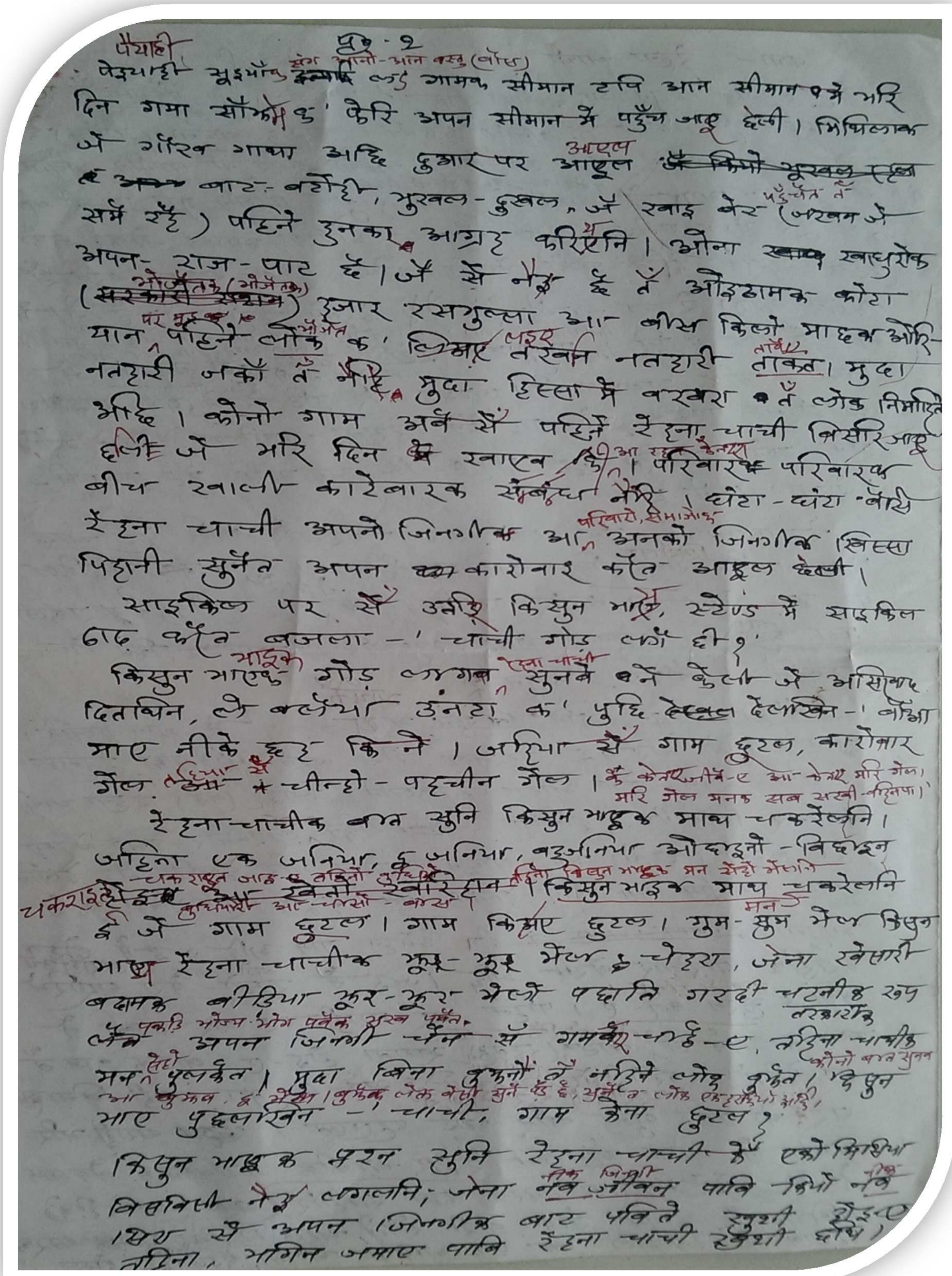
समाप्त
२८।१०।०१८

कथा - रेहना चाची - पृ० 1

दिन लउसैत किसुन भाए, लौफा हाट सैं घुमैं बेर (जरकि) दीप पहुँचला तँ रस्ता (बाटपर) पर ठाढ़ रेहना चाची पर नजरि पड़लनि। कोराक बच्चा (प्रपौत्र) हैं रेहना चाची बाजि- बाजि खेलबैत। (सुनिते) किसुन भाय कें चाची (रेहना चाची) (आइ सात-आठ बर्खं पहिलुका) चिन्है पड़लनि मुदा सनकि बर्खक झूर- झूर भेल शरीर, चौंसल आँखि, आमक चोकर जकाँ मुँहक झुरखी देखि शंको भेलनि। ओना सात- आठ बर्ख सैं किसुन भाय रेहना चाची कें नहि देखने रहथि तैं हुनि- नहि मे मन फँसल रहनि (फँसलो अपिते हेलनि। एक दिन मे तँ राज-पाट उनटि जाइ-ए, सात-आठ बर्खक तँ बात मुदा ओ मन बेरंगी-बेरंगी सात आठ बर्खं भेल) लड़ैत रेहना चाचीक अवाज छी। (तरसैत, तरंगी होइत) पगहा भरी हटि रस्ते (बाटे) पर साइकिल पएरक भरे ठाढ़ कैने, रेहना चाची पर आँखि गड़ौने मनें- मनें विचारिते [illegible] छलाह- कि अनायास मुँह फुटलनि- 'रेहना चाची?'

रेहना चाची सुनि चाची बच्चा पर सैं नजरि (उठा) हटा चारू दिस नजरि खिड़ौलनि (खिरौलक)। दहिनबरिया भाग साइकिल पर ठाढ़ भेल पर नजरि पड़लनि। (चेहरा सैं) चिन्ह (चीन्ह) नहि सकली, मुदा (कान) मे किसुनक अवाज ठहकलनि। अवाज ठहकिते बोल फुटलनि - 'बौआ, किसुन छी'

'बौआ किसुन' सुनि किसुन भाय कें (भायकेँ) जी मे जान एलनि, जान अबिते जीह पर रखल तीस बर्ख पहिलुका रेहना चाचीक रूप- रंग- बोल ठहकलनि। ओइह (वैह) रेहना चाची जिनकर जिनगीक दुनियाँ दहिन (आगाँ) लखनौर उत्तर बेरमा पूब कदुबी (कदवी) आ पछिम सुखेत भरि हेलनि, जैह हेलनि हुनकर कर्मभूमि आ दीप हेलनि पतभूमि। (पतिभूमि)। एक तँ ओहुना दीप ओहन गाम अछि जइ मे छोटक (घराड़ीओ) घराड़ीक परिवार बेसी अछि। जइ सैं रस्तो- पेरा (बाटो- बाट) घरारियें बनि कऽ सुरंग भेल- ए। (सुरंग सैं हो-ए।) पहिने घराड़ी पर घर बनबैत जाइ- भरे सैं (आकि चलैत फिरैत लेल बाट) बाट (रस्ता) सगता होइ- ए। बाटक काज तँ एक पैड़िओ, खुरपैड़िओ (पैड़ीओ, खुरपैड़ीओ, घुरपैड़ीओ सैं) चलि सकैत- ए, मुदा घराड़ी बिना घर बाँसक धुआ बनि थोड़े रहतएत। घराड़ी भरि जमीन मे बास करैबला रेहना चाचीक जीविकाक बेवसाय (अपन जवाबदेहीक) हेलनि, भोरे अँगना- घरक काज सम्हारि, चारू दिसक गामक बारक पछिया मे अपन सौदा- बारी सैंति, चारू दिसक गामक बारक (पैयाही) एक अनिया जलता, पैड़ुआही डोरा, हिसाव सैं निकालि ...



पैयाही

पृ०-२

पेड़याही सुइयाँ लऽ गामक सीमान टपि आन सीमान धरि दिन गमा साँझ केरि अपन सीमान मे पहुँच जाइ छेली। मिथिलाक जे गौरव गाथा अछि दुआर पर आएल बाट-बटोही, दुखल-दुखल, जे खाइ बेर (अरखम जे समै रहै) पहिने हुनका आग्रह करैथिन। ओना खाधुरोक अपन-राज-पाट छै। जे से नै छै तँ औइठामक कोटा (भोजैतक) हुजार रसगुल्ला आ बीस किलो माछक औरि-यान, पहिने लोक कऽ खिआए तखनि नतहारी नतहारी ताकत। मुदा नतहारी जकाँ तँ नहि मुदा हिस्सा मे बरखरा तँ लोक निमाहिते अछि। कोनो गाम अबै सँ पहिने रैहना चाची बिसरि जाइ छेली जे भरि दिन खाएब की। परिवारक परिवारक बीच खाली कारोबारक संबंध नै। छोटा-छोटा बौसि रैहना चाची अपनो जिनगीक आ अनको जिनगीक खिस्सा पिहानी सुनैत अपन कारोबार करैत आबैत छेली।

साइकिल पर सँ उतरि किसुन भाइ, स्टेण्ड मे साइकिल ठाढ़ करैत बजला - 'चाची गोड़ लगै छी?'

किसुन भाइक गोड़ लगब सुनते रैहना चाची बेर कहलि जे असिरवाद दितथिन, से बलैयाँ उनटा कऽ पुछि देलखिन - 'बौआ भाए नीके छै कि नै। जहिया सँ गाम छुटल, कारोबार गेल, तहिया सँ चीन्हो-परचीन गेल। कै केतए जीबै-ए आ केतए मरि गेल। मरि गेल मनक सब सखी-बहिनपा।'

रैहना-चाचीक बात सुनि किसुन भाइक माथ चकरेलनि। अहिना एक जनियाँ, दू जनियाँ, बहुजनियाँ ओहुनो-बिछोहन चकराइले ... आ खेती-खरिहान। किसुन भाइक माथ चकरेलनि जे गाम छुटल। गाम किएए छुटल। गुम-सुम भेल किसुन भाइ रैहना चाचीक झुर-झुर भेल चेहरा, जेना खेसारी बदामक बतीहिया झुर-झुर भेलो पछाति गरदी चटनीक रूप लैत अपन जिनगी चैन सँ गमबैत चाहै-ए, तहिना चाचीक मन पुलकैत। मुदा बिना कहनौं तँ नहिने जोड़ कहैत। किसुन भाए पुछलखिन - 'चाची, गाम कैना छुटल?'

किसुन भाइक प्रश्न सुनि रैहना चाची केँ एको फिरिया बिसबिसी नै लगलनि; जेना नव जीवन पाबि कियो नव सिर सँ अपन जिनगीक बाट पकड़ैत खुशी होइए तहिना, भगिन जमाए पाबि रैहना चाची खुशी होइ।

पृ०- ३

मुदा पेट मे पेटे लो झगड़ा उठि गेलनि। झगड़ा ई उठलनि जे शीतल मेजेश्वटल खे इ सत बात अछि, ओ बाजल जा सकैए आ कि नञि। ओइ बातक सगतो जरूरत नहियोँ जकाँ अछि मुदा इतिहासक काल-खंड विहीन भइयेँ जाएत। मन बेकाबू (रेहना चाचीक) मे' गेलनि मुदा विसवास देलकनि। विस्वास ई देलकनि जे अबैया दिन सुखैया त अछिये अपन जिनगीक इतिहास भइयोँ मनोज के कहि दिअए। आब सब दौड़लौं। ओना खस्सी धुरने ठेहो टस-टस गेल, मुदा मन सात-आठ बरख सँ गाम गामक लोकक कारोबारे या चलैत रस्ता कोहि-खोहि गेल। झपटी, इअए लगैत जे आब

एक संग किसुन भाइक मन मे रंग-बिरंगक अनेको प्रश्न उठि गेलनि, मुदा ओहिना मुड़ी आ टाँग फटकब लाश (लहास) कें परखब कहिन, मेँ आइ-ए नहिना रेहना चाचीक बात सुनि, भेलनि। झपटी-झपट बुरहि कि छीना-छोनी, ओहुना मेजे ओहिना प्रखर बक्ता सबे अपन मेहिका चाउर मे मोटका चाउर फेंटि काज ससारि लइ छथि आ कि मोटको चाउर मे मेहीका फेंटि दइ छथिन। मुदा अनेरे मन कें बौआबै छी। बाजल—

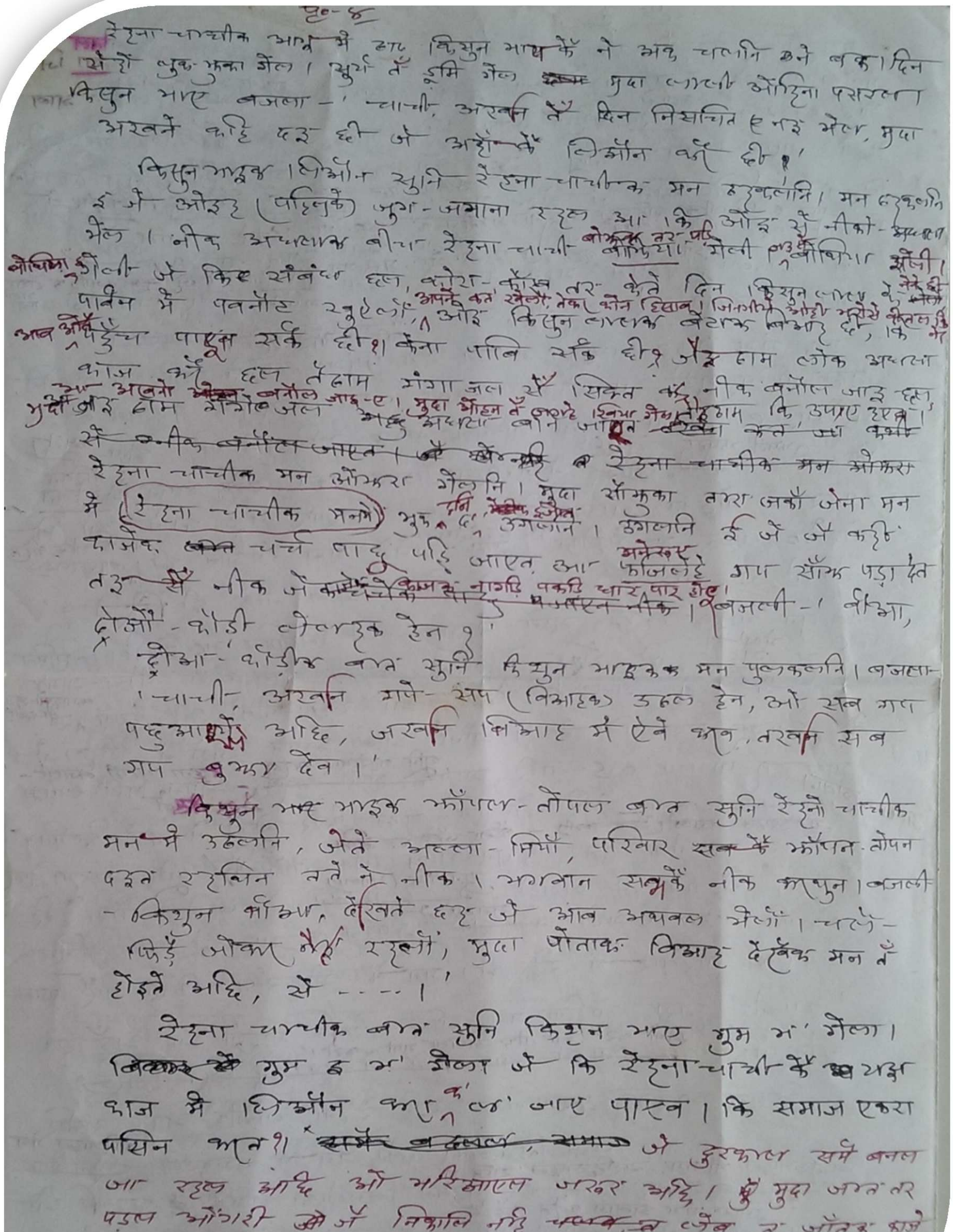
'चाची, अहिया जे भेल, से भेल, आब नीके छी किने?'

किसुन भाइक बात सुनि रेहना चाची निरुमित भऽ गेली। निरुमित ई मे' गेली जे पेटहे देह छी, अपन गाम लगा पाँच-गामक लोक सँ हबो-गब कौ देलौं, आ खेबो-पीबो कौ देलौं, सँ छिनाइये गेल किने। ओना आब अपन उमेरो मे रहल जे माघ पथिया लइ-चारि गामक घुमि घरोबार। रेहना चाची बजली—'अल्ला-भगवान अपन बेटा-पोता देलनि, मुदा कोरे ओहो ने देलों केलनि।'

रेहना चाचीक उत्तर किसुन भाइ नीक जकाँ नहि बुझि सकला तेकर कारण भेलनि जे लगाते सुतलाहि (सुतबा) जे बेटा-पोता हेरि लेलनि आ लगले सजल जे प्रपौत्र बच्चा छी आ भगिन जमाइक परिवार मे रहै छी। मन कें सोझरबैत किसुन भाइ बजला—

'चाची हमरा ओहिना मन अछि, जखनि माइओ आ अहूँ एके तीन सेबो करी आ नीक-अधला गप्पो करी।'

किसुन भाइक बात सुनि रेहना चाचीक अपन सत्तरि बरखक जिनगी बिजलोक। जकाँ मन मे चमकलनि। करिआइल मेघ बदलिआइल मौसम, अन्हरिआइल राति मे बौन-जरबन बिजलोका चमकि-ई तरह ओ इजोतक संग अवाज बात कहैए अपन जे उम लाली इजोत छी, आ कि पीढ़ी। पीढ़ी दुर-हेथाक देह-हैं लाली लगैत। सतत अपने सत म [illegible] कि सतक। [illegible]



पृ०-४

रेहना चाचीक आँखि मे ओ किसुन भाय कें ने अक चालनि छने बक। दिन सेहो धुक-धुका गेल। सुर्ज तँ डूमि गेल मुदा लाजो औंहिना पसरल छलै। किसुन भाए बजला- 'चाची, अखनि तँ दिन निश्चित ए नइं भेल, मुदा अखनें कहि दइ छी जे अहीं कें निऔंन करै छी।'

किसुन भाइक निऔंत सुनि रेहना चाचीक मन हहुकलनि। मन हहुकलनि ई जे ओहइ (पहिलुकें) जुग-जमाना रहल आ कि ओहइ सँ नीको अवस्था भेल। नीक अवस्थाक बीच रेहना चाची बौअक तर पड़ि भेली। ओझी जे किछु संबंध छल, बोरा-बौंस तर कैते दिन किसुन भाइ के पारिस मे पवनौट रहुएलो, आपने कत खेलों, तेकर कोन हिसाब। जिनगी ओहि भरोसे बीतल कि आब ओहँ पहुँच पाबुल सकै छी? कैना पाबि सकै छी? जेहे गाम लोक अवस्था काज करैं छल तेहे गाम गंगा जल सँ सिकत कऽ नीक बनौल जाइ छल, मुदा ओइ गाम गंगोजल अनवो अवस्था बोने जाइत। हमरो गाम कि उपाए हएत।

रेहना चाचीक मन ओझरा गेलनि। मुदा सौझुका नरा जकाँ जेना मन मे रेहना चाचीक मनमे धुकधुकी उगलनि। उगलनि ई जे जँ कहीं दाजेक चर्चा पाछु पड़ि जाएत आ अनेरए फाजिलेहे गप साँझ पड़ा देत तइ सँ नीक जे कहनी कहि पार होइ। बजली- 'बौआ, दोओं-कौड़ी लेबइक हेन?'

बौआ-कौड़ीक बात सुनि किसुन भाइक मन पुलकलनि। बजला- 'चाची, अखनि गपे-सप (बिआहक) उठल हेन, ओ सब गप पछुआएले अछि, जखनि बिआह मे ऐवें आब, तखनि सब गप बुझए देब।'

किसुन भाइक झाँपल-तोपल बात सुनि रेहनो चाचीक मन मे उठलनि, जेते अल्ला-मियाँ, परिवार सबकें झाँपन-तोपन दइत रहलिन ततै नै नीक। भगवान सबकें नीक करथुन। बजली- किसुन बौआ, देखते छह जे आब अथबल भेलौं। चलै-फिड़ै जोकर नै रहलौं, मुदा पोताक बिआह देखैक मन तँ होइते अछि, से....।'

रेहना चाचीक बात सुनि किसुन भाए गुम भऽ गेला। बिचार कैं गुम छ भऽ गेला जे कि रेहना चाची कें एहेन काज मे निऔंन करा कऽ जाए पारब। कि समाज एकरा पसिन करत? जे दुरकाल समै बनल जा रहल अछि ओ भरिआएल जरूर अछि। मुदा जतऽ तर पड़ल ओंगरी जे निकालि नहि लेब, ने जाँतक काजे कैना चलत। कोनो एकेटा ने हएत या ने पनिसिया हएत आ ओंगरी पिसाइत। मुदा भबिस भबिस देख।

कथा – अकाल (मे पड़ल छी) – नारी चित्रण – पृ०-१

किरिण फुटिते सुगापटीवालीक माथ पर दस-बारह टा छिट्टा-पथिया गेटल देखि बौकी दीदी – दुइलाहिन दुधली – आइ भोरे-भोर केमहर दिन उगल, हए सुगापटी वाली ?

बौकी दीदीक बोल जना सुगापटीवालीक मन के हौंड़ि देलक। ओना चांटा-चांटा भरि बौकी दीदी लग बोसे सुगापटीवाली अपनो आ अपन परिवारे टाक नहि, देश-दुनियाँक गपो-सप भेंत आ कहइस तेबाइस खेंबो भेंत। खासक पाबनिक ठकुआ आ भोजकाजक लड्डू त अड़वधि (अड़बेध) क' बौकी दीदी पुतोहु सब से चोरा क' सुगापटीवाली के रखबे भेंत। दसो-बारहो टा छिट्टा-पथियाक गेट भत ऊपर से उताड़ि सुगापटीवाली अँगनाक मँहथरि पर रखलक। भत पसौना छिट्टा स ल' क' बसहीला, बहाउर केबाड़ संग सगतोड़ा सगधुन्ना पथिया चढ़िक गेट। करीब महीना दिन पछाति बौकी दीदी कैं सुगापटीवाली से भेंट भेल छलनि, तैर मास दिनक गपो-सप बाकी मे, जे बात सुगापटीवाली कुहेत आ दीदीओ। माथक छिट्टा उतड़िते (उतैड़ते) दीदीक नजरि सुगापटीवालीक मुँह पर पड़लनि। मन्हुआएल मुँह मौलाइल फूल जकाँ कुम्हे पड़लनि। मुदा बजली किछु ने, नइ बजैक कारण भेलनि जे अपने मन मे बुझलनि जे जरूर कोनो बेर-बिपत्ति (बिपैत) मे बेचारी पड़ल अछि। आन दिन केहेन लहटगरि मुँह देखै छलियै आ आइ किअए धुमनाइल मोलाइल बुझि पड़ै ए। केना बेचारी कैं बेधाक बात पुछि भारो लटकाबियै। तइ से नीक किअए ने दोसर-तेसर बात पुछि गपक धार (बिचारक धार) मे भसिया दियै। अनेरे त अपने अपने सब, गुरधान अर्थात्, मेइलहा खून, पीज, ईल सन निकालि भेतइ। (जेतै) बाजि जाएत। तहू मे एक मासक कथा-पुराण पटुआइले अछि। जखने पेंछला गपक (अंतिम भेंटक) नांगरि पकड़ा देबइ कि अनेरे ने बड़बड़ाए लागत। तइ मे जे अपना कुरैक अछि से पुछि-परोखि लेब। सैह सोचि दीदी बजली – 'कनियाँ कतै कतेक हेराएल छलहु जे एतै दिनक पछाति नजरि पड़लह ?'

बौकी दीदीक प्रश्नक उत्तर नइ देब सुगापटीवाली उचित नइ बुझलक उचित ऐ बुझारे नइ बुझलक जे प्रश्नक उत्तर बिनु पौने प्रश्नकर्त्ताक मन मे उठि जाएत जे भरिसक कोनो बातक कचोट हमरे से नै भेल हैते तामसे नइ बजै ए। मलिन मनक बात रखैत सुगापटी वाली बजलि: – दीदी, हिनका से लाथ कोन ? लोक कैं बेटा संग सहूल भाइ है मुदा धन संग नइ सहूल भाइ छै। ऐबेर भगवान हमरा सब के जखन मे द' देलनि।' कहि सुगापटीवाली गाल दिया अबैत नोर कें आँचर से पोछै लगली। मुँह पर आँचर पड़िते आइरक

कपा गेलनि। मुदा बौकी दीदीक मन ओतै लटकल जे बेथाकथा कहन ओत। मुदा से कते-कत बौदीक लाबा जकाँ छिड़िआएल। छिड़िया गेल।

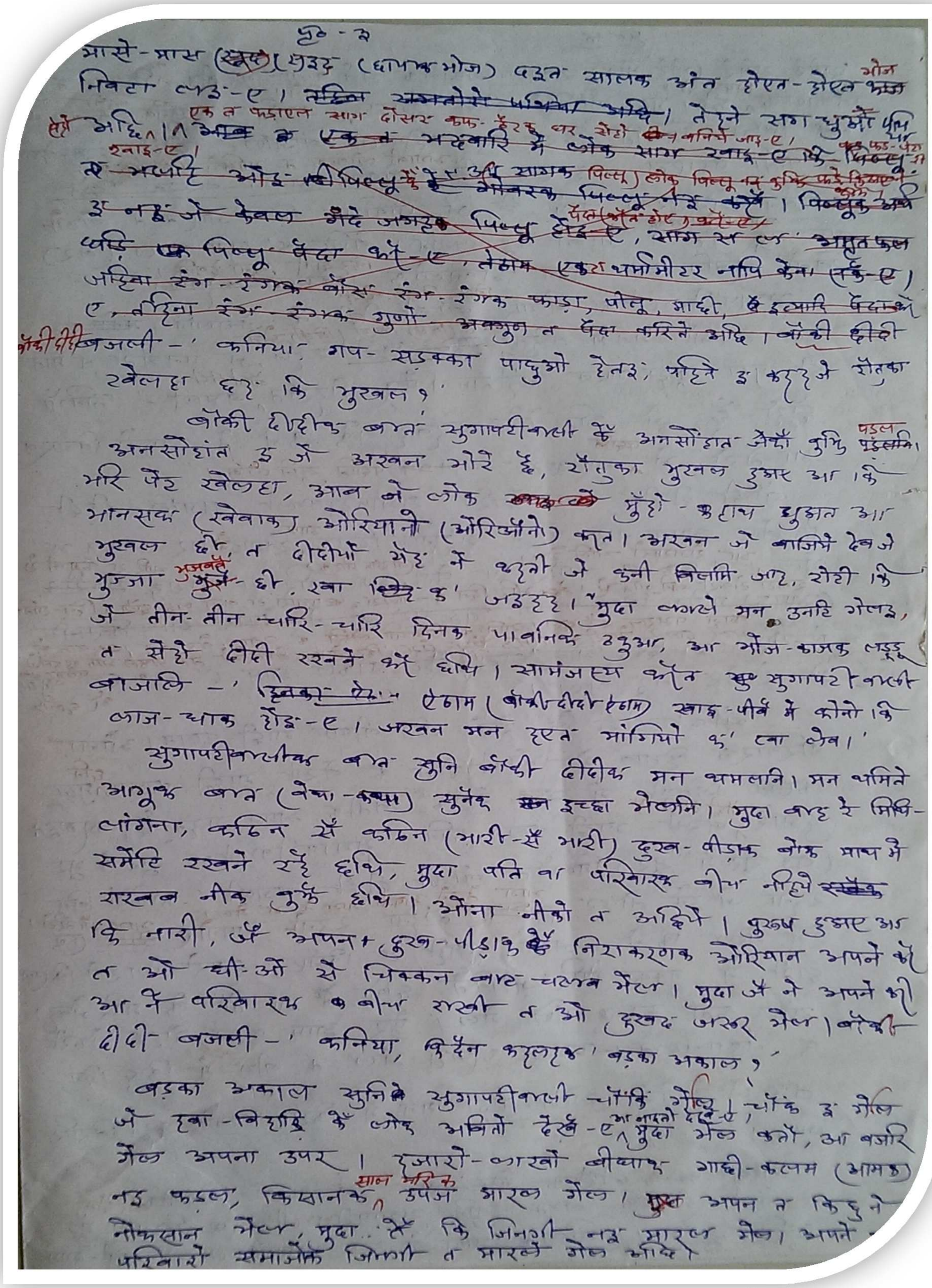
शिकार फसैत नइ देखि बौकी दीदी दोसर बाण छोड़लनि। बजली- 'दुनियाँ आब त अथा अरनाड़ो बीत गेल, आब किअए मन पर्सौना छिद्दा आ सगतोड़ा (धुआ) पथिया बीनै (बीनै) छह?'

भरि मुँह बौकी दीदी ए दुआरे ने बजैत जे जखन हमरा कुनो केकरो नीक नइ लागल होइ ए तखन अनेरे किअए केकरो जिनगीक सोग-पीड़ा जगा पीड़ित करबै। मुदा बौकी दीदीक वाणि सुवाणि भेलनि। जना बेमारी मे पड़ल किओ, कष्ट सँ भीतरे-भीतर कुहरैत अपन वेथा अपने मन मारि सहैत रहैत, मुदा रोगक निदानक डॉक्टर देखिते मन बू-बुआ जाएत तहिना सुगापटीवालीक मुँह भुभुआएल- 'दीदी, लिखा सेहो नीक रहैत।' बड़का अकाल मे पड़ि गेने कुचियो बौआ गेल अछि?'

सुगापट्टीवालीक बात सुनि बौकी दीदी सहमली, मुदा जे मन मे छलनि से अखनो नइ बुझि पड़नि। बजली- 'अकालोक कि जड़ि-पालो अछि।' जखन जेना मन फुड़ै छै आबि जाइ-ए।

बौकी दीदीक बात सुनियो क' सुगापटीवाली अनठौलक। ओना आनि क' नइ अनठौलक, भेलइ इ जे जखन पथियाक चर्चा दीदी केलनि तखन सुगापटीवालीक मन अपन बेथा मे तेना ओझराएल जे सुधिये-बुधि चुसुकि गेल छलैक। मुदा दोसर प्रश्नक पछाति ओइठाम अपन हिस्सेदारी मंगैत आगू आबि बाजल- 'दीदी, महिना दिन पहिने, इ सब (छिट्टा-पथिया) बनेने छलौं, किअए त महीना दिन रोजगार अमबेचा टोकरी बनबै मे लगौं छल, नफगर काज। चारि टा पेटी आ चारि टा कारा मे टोकरी बनि जाइ-ए। दिन-राति खटि क' पाँच-दस हजार हाथो-मुट्ठी मे बचा लइ छलौं, से तइ मे अकाल पड़ि गेल।'

सुगापटीवालीक बात बौकी दीदीक मन मे धँसलनि। मन मे धसिते जना फुन-फुनी चोलकनि। फुन-फुनी इ चोलकनि जे अपनो जिनगी सभ-मे कते-दिन आ कते राति अन्न बिनु कटल अछि। दिन त कटि गेल मुदा ओकर भीतर जे सोग-पीड़ा अछि, से त कटबे ने केलनि। पाबनि-तिहार के कहै जे, अनदिनो बेचारी कै एक मुट्ठी खसाइ लै छइते दिये जे कहियो राति मे भानस नइ भेल होए त केना कआब मन-एक मनक भारी बोझ (पथियाक जाक) ल' क' बेचै जाएत। तइ मे बड़का छिट्टा (भते पर्सौना) आब के लेत। लगनो त लगिचाइये गेल। भदवरिया आइक भोजो तै लोक उठाइये क' रखि लइ।



पृष्ठ - २

मासे-मास (कहुए) (धापाक भोज) दउत सालक अंत होएत-होएत भोज निविटा लइ-ए। ... अछि। तेहने साग धुमौं पुनि ... एक त फड़ाएल साग दोसर कफ-हैरक धर, सेहो बनितो जाइ-ए ... सनाइ-ए। ...

बौकी दीदी बजली- 'कनिया, गप-सड़क्का पाछुओ होतइ; पहिने इ कहइ जे रौतुका खेलहा घर कि मुरखल?'

बौकी दीदीक बात सुगापटीवाली कें अनसोंहात जकाँ बुझि पड़लनि। अनसोंहात इ जे अरखन भोरे छै, रौतुका मुरखल दुआर आ कि भरि पेट खेलहा, आब ते लोक मुँहो-कहाय दुआर आ मानसक (खेवाक) ओरियानो (ओरिआनो) करत। अरखन जे बाजिये देब जे मुरखल छी, त दीदीयो येह ने कहती जे कनी बिलमि जाइ, सेहो कि जे तीन-तीन चारि-चारि दिनक पावनिक रहुआ, आ भोज-काजक लड्डू त सेहो दीदी रखनहि छथि। सामंजस्य करैत सुगापटीवाली बजलि- 'इनका ... एखन (बौकी दीदी एखन) खाइ-पीबै मे कोनो कि लाज-धाक होइ-ए। अरखन मन हएत माँगियो क' खा लेब।'

सुगापटीवालीक बात सुनि बौकी दीदीक मन थमलनि। मन थमिते आगूक बात (बेथा-कथा) सुनैक इच्छा भेलनि। मुदा बाइ रे मिथिलांगना, कठिन सँ कठिन (भारी-सँ भारी) दुख-पीड़ाक बोझ माथ मे समेटि रखने रहै छथि, मुदा पति वा परिवारक बीच नहियेँ राखब नीक बुझै छथि। ओना नीको त अछिये। पुरुष बुझए आ कि नारी, जँ अपन दुख-पीड़ाक निराकरणक ओरियान अपने करै त ओ घी-ओ सँ चिक्कन बाट चलब भेल। मुदा जँ ने अपने कौ आ ने परिवारक बीच राखी त ओ दुखद जरूर भेल। बौकी दीदी बजली- 'कनिया, कहैन कहलहुँ बड़का अकाल?'

बड़का अकाल सुनि सुगापटीवाली चौंकि गेलि। चौंक इ गेलि जे हवा-बिहाड़ि कें जोड़ अखितो देखै-ए आ नाचतो देखै-ए, मुदा भेल कतौ, आ बजरि गेल अपना उपर। हजारो-लाखो बीघाक गाछी-कलम (आमक) नइ फड़ल, किसानक साल भरिक उपज मारल गेल। मुदा अपन त किछु ने नोकसान भेल, मुदा तैं कि जिनगी नइ मारल गेल। अपने परिवारो समाजोक जिनगी त मारले गेल अछि।

पृ०-४

सबेरे-सबेरे (भोरे-भोर) सकाल-अकालक चर्चे चलाएब नीक नहि। ई त दुःखस तिकालक विषय छी। मुदा बौकियो दीदी रगड़ाह छथिये। रगड़ि क' सुनबे करती। ई विचित्र स्थिति देखि सुगापट्टीवाली बाजलि- 'दीदी, कि करबै पड़ाएल जाइ-ए, दुख-बेथा अखन भिनसुरका समै छी, जँ पचिया बिका जाएत त बौलो बच्चाक आ अपनो पेटक मुँह मे जाबी नइ लागत। बेचि क' घुमै काल (बेर) खेबो करबनि आ अकालोक किस्सा सुना देबनि।'

सुगापट्टीवाली क' विचार बौकी दीदी कैं जँचलनि। मुदा तइओ मन मे तेहेन विस (विष) विखी (विषी) चोने रहनि, जे पनचैती त मानैं छी मुदा खुद्दा गारब अहींठाम। फेर दोहरबैत बौकी दीदी बजली- 'कनियाँ छौंड़ी-छुँड़ै जे कहि देने रहबइ कि बकने, ते अपनो विचारब आ तेरो से पहिने सुनि लेब।'

बौकी दीदीक रगड़ देखि सुगापट्टीवाली बाजलि- दीदी, ऐ बेर आम नइ फड़ने महीना दिनक आमो खेनाइ पर आफत भ' गेल आ रोजगारो चलि गेल। चारि-टा बेटी (बौअक पोतक) आ चारि टा कारा (आ चारि टा कैमची सें एकटा टोकरी बनि जाइ-ए। भरि दिन मे चालिस-पचास टा बना लइ छलौं। दिन-रातिक काज पसरल रहै छल। राति क' डिबिया लेसि क' खा-पी क' बेर तक काज कौं चलै छल। टोकरीक दामक संग-संग किसानो आ बेपारियो ततेक पाछल आ जइ छलै जे) ऐठाम आइ छी, आ छोटा-छोटे पाकल आम द' दइत छला, मुदा से ऐ बेर नइ भेल।'

बौकी दीदी कैं सेहो तीन बीघा गाछी-कलम। ओना परिवारक हिसाब सँ बौकी दीदी कैं बेसी गाछी-कलम छनि, मुदा किसानी जिनगी मे सब रंगक खेतीक अपन महत छै। कामाइत दुआरे बौकी दीदी कैं बेसी गाछी-कलम छनि। सुगापट्टीवालीक सुर मे सुर (कुर सुर मे सुर) मिलबैत बौकी दीदी बजली- 'कनियाँ बिनु रहनो जेहने तोहर भाग तेहने अपनो भाग मे भ' गेल। भाग तेहना रहनो अपनो आ तोरो। एकै रंग भेल कि ने। अखन हमहीं टा किअए, हजारो-लाखो किसान छाती मे मुक्का मारि जीबिते छथि, आ तोँ कि मरि जेबह। समै कतौ दुर चालि गेल। फेर आम फड़त, तोहर टोकरी क' धंधा चलबे करतह। भेल त बीच मे किछु दिन, तइ ले अनेरे सोग-पीड़ा मन मे किअए रखने छह। बिसरि जाह।'

~~बौकी दीदीक~~ ~~जिनगीक~~ धरि छौन
बौकी दीदीक बात सुनि सुगापट्टीवालीक मुरझाएल मुँह खिलिया गेल। पचियाक भाव मे उठा सुगापट्टीवाली- किसनी-गा दिस उठा बढ़ौलक



परिचय : पाण्डुलिपिकार

नाओं : श्री जगदीश प्रसाद मण्डल, जन्म : 5 जुलाई 1947, बेरमा, जिला- मधुबनी (बिहार)

शिक्षा : एम.ए. द्वय (हिन्दी, राजनीति शास्त्र)

जीविकोपार्जन : कृषि (मुख्यत: तरकारी खेती)

सम्मान/पुरस्कार : 'विदेह सम्मान', 'विदेह भाषा सम्मान', 'टैगोर लिटिरेचर एवार्ड', 'वैदेह सम्मान', 'यात्री सम्मान', 'विदेह बाल साहित्य पुरस्कार' तथा 'कौशिकी साहित्य सम्मान'सँ सम्मानित/पुरस्कृत।

साहित्य लेखन : 2001 ईस्वीक पछाइतसँ...।

रचना संसार : 1. गीतांजलि, 2. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता- गीत संग्रह। 5. इन्द्रधनुषी अकास, 6. राति-दिन, 7. सतबेध- कविता संग्रह। 8. पंचवटी- एकांकी संचयन। 9. मिथिलाक बेटी, 10. कम्प्रोमाइज, 11. झमेलिया बिआह, 12. रत्नाकर डकैत, 13. स्वयंवर- नाटक। 14. मौलाइल गाछक फूल, 15. उत्थान-पतन, 16. जिनगीक जीत, 17. जीवन-मरण, 18. जीवन संघर्ष, 19. नै धाड़ैए, 20. बड़की बहिन, 21. भादवक आठ अन्हार, 22. सधबा-विधवा, 23. ठूठ गाछ, 24. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 25. लहसन, 26. पंगु, 27.आमक गाछी- उपन्यास। 28. कल्याणी, 29. सतमाए, 30. समझौता, 31. तामक तमघैल, 32. बीरांगना- एकांकी। 33. तरेगन, 34. बजन्ता-बुझन्ता- बीहैन कथा संग्रह। 35. शंभुदास, 36. रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह। 37. गामक जिनगी, 38. अर्द्धांगिनी, 39. सतभैंया पोखैर, 40. गामक शकल-सूरत, 41. अपन मन अपन धन, 42. समरथाइक भूत, 43. अप्पन-बीरान, 44. बाल गोपाल, 45. भकमोड़, 46. उलबा चाउर, 47. पतझाड़, 48. लजबिजी, 49. उकड़ू समय, 50. मधुमाछी, 51. पसेनाक धरम, 52. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 53. फलहार, 54. खसैत गाछ, 55. एगच्छा आमक गाछ, 56. शुभचिन्तक, 57. गाछपर सँ खसला, 58. डभियाएल गाम, 59. गुलेती दास, 60. मुड़ियाएल घर, 61. बीरांगना, 62. स्मृति शेष, 63. बेटीक पैरुख, 64. क्रान्तियोग, 65. त्रिकालदर्शी, 66. पैंतीस साल पछुआ गेलौं, 67. दोहरी हाक, 68. सुभिमानी जिनगी, 69. देखल दिन, 70. गपक पियाहुल लोक- लघु कथा संग्रह।



परिचय : सङ्कलन कर्त्ता

नाओं : उमेश मण्डल- जन्म : 31 दिसम्बर 1980, बेरमा, जिला- मधुबनी (बिहार)

शिक्षा : प्रारम्भिम शिक्षा ग्रामीण माहौलमे। बी.ए.- एल.एन.जे. कॉलेज- झंझारपुर (मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा)। एम.ए. (मैथिली), बी.आर. अम्बेदकर बिहार विश्व विद्यालय- मुजफ्फरपुर। राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा (UGC NET- June: 2015), **प्रकाशित रचना :** निश्तुकी (पद्य संग्रह), संस्कार गीत, विध-बेवहार गीत आ गीतनाद (मिथिलाक सभ जाति-धर्मक लोकमे प्रयुक्त मैथिली लोकगीतक पहिल संकलन), मिथिलाक जीव-जन्तु/वनस्पति और जिनगी'क डिजिटल सचित्र ऑनलाइन संस्करण, मिथिलाक सभ जाति-धर्मक लोकमे प्रयुक्त लोकगीतक रेकार्डेड ऑनलाइन ऑडियो और वीडियो डिजिटल संकलन। **सह सम्पादक :** विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका एवम् विदेह-सदेह पत्रिका- ISSN 2229-547X VIDEHA. संग सम्पादन : (1.) विदेह मैथिली विहनि कथा (विदेह-सदेह- 5), (2.) विदेह मैथिली लघुकथा (विदेह-सदेह- 6), (3.) विदेह मैथिली पद्य (विदेह-सदेह- 7), (4.) विदेह मैथिली नाट्य उत्सव (विदेह-सदेह- 8), (5.) विदेह मैथिली शिशु उत्सव (विदेह-सदेह- 9), (6.) विदेह मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना (विदेह-सदेह- 10) **सम्पर्क-** तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड न. 06, निर्मली, पिन- 847452, जिला- सुपौल।

उपरोक्त पोथीसभक e-version videha.co.in आ pothi.com परसँ download कएल जा सकैत अछि।

₹ 500

पल्लवी प्रकाशन
जे.एल.नेहरू मार्ग, तुलसी भवन
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452

9 789388 421898

(c)2004-2018. सर्वाधिकार लेखकाधीन आ जतऽ लेखकक नाम नै अछि ततऽ संपादकाधीन। विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHAसम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर। सह-सम्पादक: उमेश मंडल। सहायक सम्पादक: **राम विलास साहु, नन्द विलास राय, सन्दीप कुमार साफी आ मुन्नाजी (मनोज कुमार कर्ण)**। सम्पादक- नाटक-रंगमंच-चलचित्र- बेचन ठाकुर। सम्पादक- सूचना-सम्पर्क-समाद- पूनम मंडल। सम्पादक- अनुवाद विभाग- विनीत उत्पल।

रचनाकार अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना (जकर मौलिकताक संपूर्ण उत्तरदायित्व लेखक गणक मध्य छन्हि)editorial.staff.videha@gmail.com केँ मेल अटैचमेण्टक रूपमेँ .doc, .docx, .rtf वा .txt फॉर्मेटमे पठा सकै छथि। एतऽ प्रकाशित रचना सभक कॉपीराइट लेखक/संग्रहकर्त्ता लोकनिक लगमे रहतन्हि, मात्र एकर प्रथम प्रकाशनक/ प्रिंट-वेब आर्काइवक/ आर्काइवक अनुवादक आ आर्काइवक ई-प्रकाशन/ प्रिंट-प्रकाशनक अधिकार ऐ ई-पत्रिकाकेँ छै, **आ से हानि-लाभ रहित आधारपर छै आ तैँ ऐ लेल कोनो रॉयल्टीक/ पारिश्रमिकक प्रावधान नै छै। तेँ रॉयल्टीक/ पारिश्रमिकक इच्छुक विदेहसँ नै जुड़थि, से आग्रह।** रचनाक संग रचनाकार अपन संक्षिप्त परिचय आ अपन स्कैन कएल गेल फोटो पठेताह, से आशा करैत छी। रचनाक अंतमे टाइप रहय, जे ई रचना मौलिक अछि, आ पहिल प्रकाशनक हेतु विदेह (पाक्षिक) ई पत्रिकाकेँ देल जा रहल अछि। मेल प्राप्त होयबाक बाद यथासंभव शीघ्र (सात दिनक भीतर) एकर प्रकाशनक अंकक सूचना देल जायत। एहि ई पत्रिकाकेँ श्रीमति लक्ष्मी ठाकुर द्वारा मासक ०१ आ १५ तिथिकेँ ई प्रकाशित कएल जाइत अछि।